

भूमिका ⇔≫⇔

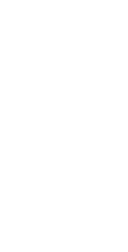
हुँग्लेण्डके मुप्रसिद्ध विद्वान् टायटर सेमुएल स्माइस्य भनेक उपयोगी प्रन्य दिया भाषे हैं। उनके प्रत्योक्त यहा आदर है। यूप्र और भारतवर्षकी भनेक भाषाओंमें उनके अनुवाद हो चुके हैं। चायटर स्माइस्सका सबसे प्रतिद्ध प्रन्य सेस्क-ऐस्प (Self-Help) है। यह प्रन्य पहले पहल सन् १८५९ में प्रकाशित हुआ और लोगोंकी इनना पसन्द आया कि पहले ही वर्षमें इसकी प्रेम इकार प्रतियाँ विक गई। उसके बाद भाजतक सो इसकी न जाने कितनी प्रतियाँ विक गई। उसके बाद भाजतक सो इसकी न जाने कितनी प्रतियाँ त्यर चुको होंगी। इतने अच्छे और लोकोपकारी प्रन्यका हिन्दीमें अभाव दिसकर में भाज अपने पाटकोंके मन्मुरा सेस्त-हेस्पका यह हिन्दी स्पान्तर लेकर उपस्थित हुआ हूँ।

इस प्रन्थके वननेका कारण

डावटर स्माइल्सने अपनी भूभिकामें इस प्रकार वर्णन किया है:--

" इंग्लेण्डके उत्तरीय प्रान्तके एक करवेमें दो तीन नव्युवकाने मिलकर विचार किया कि हम लोग सामको एक जगह एकड़े हुआ करें और एक दूसरेकी सहायतासे पढ़ने लिखनेका अभ्यास बढ़ावें। ये लोग बहुत ही गरीन थे, इस लिए इन्हें कोई अच्छा स्थान इस कार्यके लिए नहीं मिल सका। इनका एक मित्र एक छोटोसे परोमें रहता था। उसमें एक छोटोसे कोटरी थी। यस, ये लोग उसमें करें। सक स्थान कों। इनकी देखादेखी और भी वह लोगों की इच्छा हुई और ये भी इस मण्डलीमें आने को। तल यह हुआ कि जगह ओछो पढ़ने लगी। गर्माका मौसम आ खुक। यस, इस लिए कोटरीके बाहर जो छोटासा वगीना था, ये लोग उसमें खुली हवामें बेटकर अपना काम चलाने लगे। परन्तु कमी कभी अँधी—पानी आजानेके कराण इनके पढ़ने लिखनेमें स्थापात पढ़ने छमा और इन्हें कट होने लगा।

इतनेमें ही जाड़ेके दिन भा गये। रातको ख्व ठण्ड पहने छगी। थोड़े धादमी होते, तो कोई छोटी मोटी कोठरी देख की जाती; परन्तु तथ तक एकत्र होने-बाठोंकी संख्या बहुत बढ़ गई थी। यदापि इस पाटशालामें धानेवाले प्राय: मजदूर लोग ये और उनकी आर्थिक ध्वस्या बहुत ही शोचनीय थी, तो भी इस समय अपने आन्तरिक प्रेमके कारण उन्होंने हिम्मत बाँधी और एक बहुा कमरा किरायेपर हे लेनेका संकल्प कर लिया। तलाइ करनेसे एक ऐसा कमरा



भूमिका । ⊴≫€⊳

हुँग्लेण्डके मुप्रसिद्ध बिद्वान् डाक्टर सेमुएल स्माइस्स अनेक उपयोगी प्रम्य लिया गये हैं। उनके प्रम्योंका यहा आदर हैं। यूह्म और मारतवर्षकी अनेक भाषाओं में उनके अनुवाद हो चुके हैं। बाक्टर स्माइस्डका सबसे प्रतिद्ध प्रम्य सेक्क सेक्टर (Self-Help) हैं। यह प्रम्य पहले पहले सन् १८५९ में प्रकाशित हुआ और लोगोंको इतना पसन्द आया कि पहले ही वर्षमें इसकी पीस हजार प्रतियाँ विक गईं। उसके बाद आजतक तो इसकी न जाने कितनी प्रतियाँ यत्र चुको होंगी। इतने अन्छे और लोगोपकारी प्रम्यका हिन्दीमें अभाष देशकर में आज अपने पाटकोंके सन्मुख सेक्क हैल्यका यह हिन्दी स्पान्तर लेकर उपस्थित हुआ हूँ।

इस ग्रन्थके यननेका कारण

टावटर स्ताइत्सने अपनी भूमिकामे इस प्रकार वर्णन किया है:---

इनमें ही अदिन दिन का गया। गतन पूर्व एक्ट पटन करी। घट आदमी हीत, ता नाइ छोटा माटा नटिंग देख तो जाता परस्तु तक तक एवच हान-बालानी सहया कर्ता नटिंग है। यदाप इस उट्टाला- कानवाल प्राय मजदूर लाग ये जार उनकी आपव अवस्य बहुत ही हाचनाय यो तो ना इस मन्य करने आर्थान प्रमान नाम हो। प्रायम देखा कर एवं हुए बसहा विश्विपर ते केनचा मक्त्य कर १८८१ । तलाम करना एक एका बस्महर

"जो स्थान पहले भयंकर या बढ़ अब उद्योग और उत्नाहका केन्द्र बन गया । यदापि इस संस्थामें शिक्षणकी पूरी पूरी व्यवस्था न थी, तो मी जो कुछ यी तममें पूरा उत्साद और आन्तरिह प्रेरणा भरी हुई यो । जिमहो जी कुछ दृश फुटा आता था, बह अपनेसे कम जाननेवालोंको निखलाता था, अपने आप मुपरता या और इसरोंकी सुधारता था: और किसी न किसी सरह इसरोंके आगे अपना उत्तम उदाहरण उपस्थित करता था । इम तरह वे युवा पुरुष-जिनमें बहुतसे तो पद्मी उन्नहे मे-िरसना बॉबना, अक्यणित, भूगोल, रनायनशास्त्र, और क्षेत्र बर्तमान भाषायें आप सीसने सगे तथा औरोंहो विस्ताने लगे ।

"इम तरह उक्त सस्यामें लगभग ९०० मनुष्योंना जमाव होने लगा। 🖼 दिनों के बाद उन्हें क्यात्यान सननेहां शीक लगा और उनमेमे कुछ यवक मेरे पाम भाये। उन्होंने अपने परों रर खडे होकर जो उद्योग और परिधन किया था और जिस नवनासं सुप्रमें व्याध्यान देनेही प्रार्थना ही थी। उसना महारर बद्दा ग्रमान पदा और म जानना था कि आम सभाओंसे स्वाधवान देनका कर खेडीए करु नहीं होता है तो भी मैंने व्याध्यान देना स्वाकार कर दिया । भैने तिश्वय दिया क्ष हृदयकी वास्तविक प्रस्थान और सम्बाईने जो कुछ करा जायमा उसका क्रि प्रमर पढ़े जिना न रहेगा । इस उद्देश्यसे मैंने उफ समाम कह स्थास्थान दिये और उनमें अनेक कमबार सनुर्थिक उदाहरण देकर बन्छ। पा ह नुमासे प्रत्येक मनुष्य, बाद बाह ना न्यूना उनकारमें वैसे हा क्या कर सकता है। दुस्तारे आगामा जीवनका भन्न आर क्याण स्वयं तुम्हारे ही अपर अवलास्वत है, इस प्रणा नम्ह अपने आपका त्रामपूर्व शिक्षित बनाना चारण, अपनको सध्यमें रामध्य अच्छा आदर्श दालना चाहिए अपने मनको वर्णम स्माध्य चलना चाहिए और इन सबस बदक्द अपन कर्नथ्यका पालन सम्राष्ट्र और गुरानग्रामे करना चार्ण, वर्षोक्ष सनुभवक चारत्रका नारा मुखियाँ उसकी कर्नक्यनिष्ठा पर ही अवसम्बद्ध - ।

''इस उपद्रशम न काई नइ बात या और न होई नया विचार हा था—पुरानी मबदी बाना दुई बार्ड ही दोहराई गई थी, ना ना गुत्रकोंने उसकी बड़े आद-

रके साय सुना । वे भपना अभ्याम बद्दात वर्षे और १४ क्रियमें उत्साहपूर्वक

परियम करते रहे। फल यह हुआ कि उनमें योग्यता आती गई और मीके मिलनेपर ये तरह तरहके रोजगारोंसे लगते गये। उनमेंसे कई लोगोंने तो अच्छी उमति कर ली और उनकी गणना प्रतिष्ठित पुरुषोंमें होने लगी। कुछ समयके बाद इनमेंसे एक ऐसे पुरुषने मेरी मेंट हुई जिसने अपने उद्योगके वल पर अपनी अच्छी उमति कर ली थी-जो एक कारवानेका मालिक वन गया था। उसने कहा "में इत समय बहुत छुसी हूँ। आपने कई यप पहले मेरे और मेरे साथियोंके सामने जो सचे विकायद व्याख्यान दिये थे, उन्हें में आज भी छत-इतापूर्वक समरण करता हूँ। आपने जो माग गताया था अपनी शक्तिम तराया था अपनी शक्ति प्रता करता है। आपने जो माग गताया था अपनी शक्ति प्रयास करके में अवनक उतीपर चल रहा हूँ और मुहे पढ़ा विश्वास है कि उत्तीके कारण मुझे यह सुवसस्टिकी प्राप्ति हुई है।

" इस घटनासे स्वावतम्बनके विषयको ओर मेरा प्यान विशेषस्पसे आक-पित हुआ और मुझे इसके विचारमें बहुत आनन्द आने लगा। अतः मेंने उक्त नवयुवकोकी समाक व्याक्यानोमें जो बातें कही थीं, उनकी यृद्धि करना गुरू किया। में जो कुछ यांचता, निरीक्षण करना अथवा संसारी काम-काजोमें परकर अनुभव प्राम करता था, अवकारा मिलनेपर उन सब बानोंका उतना भाग जो इस विषयक लिए उपयोगों होना था जिस्ता जाना था। इस नरह इस विप-यका एक अच्छा सुमह हो गया और वहीं सुमह आज इस स्पर्मे प्रकाशिन किया जाता है।"

यह प्रत्यं सन् ९८५९ में पहाँठ प्रकाशित हुआ था। उसके बाद सन् १८६६ में स्माइन्स साहबने इसमें अनेक नये उदाहरण शामिल करके इसकी उपयोगिताका आर भी बढ़ा हुया है।

इस ब्रन्थकी विक्षाये ।

दम प्रस्थमे क्या विक्षा मिलेगा, यह दावटर स्माइन्सके इच्छोमे ही बनलाना अच्छा होगा । वे बहते हे - "सव्यमे इस पुस्तबका उद्दर्श निक्रिटिक्त प्राचीन किन्तु लाभदायक उपदर्शाका बार बार टाहराना है । इन बातोका जितना बार बोहराया जाय उनना ही थोडा है.—

१ मुखी बननेके लिए प्रत्येक युवकको काम अवस्य करना चाहिए ।

२ उद्योग ओर पारंश्रमके विना काई भा महत्त्वपूण कार्य नहीं हा सकता है।

) कटिनाइयोसे उरता न चाहण, किन्तु सन्तोष और पैकेन्यु उत्तर विजय प्राप्त करना चाहिए। भाजा जिसमें पह रे है जेके रोगी रचने जाते थे और इस शारण उसे लोग मुक्तमें भी न देना चाइने थे। इन्होंने निभव हो हर इसे ही ले निया और अपना काम जन्मै कर दिया।

" त्रो श्यान पहले भगेहर या बढ़ अब उद्योग और उत्माहहा केन्द्र बन गया। कप्ति इस संस्थार्ने शिलगडी पूरी पूरी अपनत्या न थी, तो भी जो कुछ थी उगर्ने पूरा जगाइ और मालरिक बेरणा मरी हुई थी। जिनको जो उछ इय पूटा धाना या, वह अपनेने कम जाननेवालों हो निमलाता या, अपने शाप मु रत्ना या और बूमरोंकी मुधारता या: और किमी म किमी तरह बूमरोंके अपे भगना अनन तराहरण उपस्थित करता था । इस तरह वे सुदा पुरुष-निवर्षे बहुतमें तो पर्वा उन्नहे थे--विन्यता बॉनता, ऑहमणित, भूगोल, रगायनगाल.

भीर को बनेमान भाषाये आप भीतने छने तथा औरोंको शिराठाने तने। "दम तरह उक्त संस्थामें लगभग ९०० सनुत्यों हा जमाद होने लगा। 👣 क्षतां ह बाद वनई स्वान्यान सुनने हा शीह सवा और उनमेंने कुछ युवह मेरे पाप थाय । उन्होंने अपने पैरा हर माडे होकर जो उपीय और परिश्रम किया था और त्रिय नवताल मुझस व्यारयान देनेही वार्यना की ची, उसका मुझार क्या प्रमाप रष्ट' न'र म अन्तर्भा या के आम समाअभि स्वास्थान देनेचा कुछ विशेष पत बर्ग (ला १ मा जी जी क्यास्तान दश स्वाहार दर हेटवा । मैंने निषय विका

क हरवहा र मन्दिर प्रकान कर संबाह्म वा हुछ रहा बावता तपदा हुए थमर पर भागा न रहता। इस इंदेश्यम सैन उना समामें की क्याक्यात रिपे था। राममें भागे कमवार मानुष्यांक ह्वाहरण देवर बनलावा हेर मुस्मेने प्राचेक न्तु वर नरं न न्त्राहरूयम् वसं श दाम दर सहना है। द्वारे # 14" steine er u.e. neum sen gutt fi gur menter t. (" अपने भागः । त्याप्ति प्राप्ति बनाता वर्णः प्राप्तको सेदमने ार भन्न व रहे र स्त बन्दर भाग सम्बद्ध क्या सम्बद्ध क्या सामा वार्टर क्षेत्र ६० मन्त्र करका अपन करायका राजन स्वरूप और एक्टिएमें करता कार काष जनवर करवार तथा मृत्युर सबसे करेखांत्रा पर है।

१म रान्यत व कह वह रात वा और व कोई क्या विकार ही बा-न्युगरी

सबद्ध बार रह ताव हा हारारह बहु औं तो और मुक्किन वेगकी बहु आहू. रह ताम पूर्ण व ब्राजा सन्त्रमा बहात करें और हर निमयने उपलुष्ट्रहेंद्र

परिश्रम करते रहे। फल यह हुआ कि उनमें योग्यता आती गई और मौके मिलनेपर वे तरह तरहके रोजगारोंसे लगते गये । उनमेंसे कई टोगोंने तो अच्छी वसति कर ही और उनको गणना प्रतिष्टित पुरुपोंमें होने लगी । कुछ समयके बाद इनमेंसे एक ऐसे पुरुपसे मेरी भेंट हुई जिसने अपने उद्योगके वल पर अपनी अच्छी चग्रति कर ही थी-जो एक कारखानेका मालिक वन गया था। वसने कहा " में इस समय बहुत सुखी हैं । आपने कई वर्ष पहले मेरे और मेरे साधियोंके सामने जो सचे शिक्षात्रद व्याख्यान दिये थे. उन्हें में भाज भी कत-इतापूर्वक स्मरण करता हूँ । आपने जो मार्ग वतलाया था अपनी शक्तिभर प्रयत्न करके में अवतक उसीपर चठ रहा हैं और मुझे पदा विश्वास है कि उसीके कारण मुझे यह मुखसमृद्धिकी प्राप्ति हुई है।

" इस घटनासे स्वावलम्बनके विषयको और मेरा ध्यान विशेषरूपसे आक-पिंत हुआ और मुझे इसके विचारमें यहुत आनन्द आने छगा। अतः मैंने उक्त नवयुवकोंकी सभाके व्यास्यानींने जो बाउँ कही थीं, उनकी बृद्धि करना शुरू किया । में जो कुछ याँचता, निरोक्षण करता अथवा संसारी काम-कार्जीमें पटकर अनभव प्राप्त करता था. अवसारा मिठनेपर उन सब बातोंका उतना भाग जी इस विषयके लिए उपयोगी होता था लिखता जाता था । इस तरह इस विष-यका एक अच्छा संमद्द हो गया और वहीं संबद आज इस रूपमें प्रकाशित किया जाता है।"

यह प्रन्य सन् १८५९ में पहले प्रकाशित हुआ था। उसके बाद सन् १८६६ में स्माहल्स साहबने इसमें अनेक नये उदाहरण शामिल करके इसकी उपयोगिताको धीर भी बढा दिया है।

इस प्रन्थकी शिक्षार्थे ।

इस प्रत्यसे यया विक्षा निर्रेगी, यह डाक्टर स्माइल्सके हार्न्टोंने ही बतलाना अच्छा होगा । वे बहुते हैं:-"संक्षेपमें इस पुस्तबका टहेस्य निम्नलिखित प्राचीन किन्त साभदायक उपदेशोंका बार बार दोहराना है । इन बातोंकी जितनी बार दोहराया जाय उतना ही थोडा है.---

१ सुर्या बननेके टिए प्रत्येक युवकको काम अवस्य करना चाहिए । २ उद्योग और परिधमके विना कोई भी महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं हो सकता है। कटिनाइयोंसे डरना न चारिए, किन्तु सन्तोष और किंगाय उत्पर विजय प्राप्त करनी चाहिए।

मिला जिसमें पहले दैनेके रोगो रक्ते आते ये और इम कारण वमे लोग सुरुगरें भी म देना बाहते थे। इन्होंने निभंत होटर हो ही के दिवा और अपना धान आरी कर दिया। "वी स्थान पहले मर्बटर बा बहु अब उद्योग और उत्पादका केटर बन गया।

"वा स्थान पहल मदस्य मा बहु क्षत्र उद्योग आह उत्याह्य कर कि का अपाय स्थादि एतं पंत्यानि दिश्यानी हुए पूर्व करास्त्र म स्था, तो भी जो कुछ यी उनमें शुरा जताह कींह आनतीहरू केरण मार्ग हुई थी। दिलको जो कुछ हम इस बाता या, यह कायेगेह हम कायेगेसालोडी निवस्त्रता या, असरे कारत गुभता या कींह सुरोदेशे दुसारता था, और हिस्ती न किसी हाट सुरादिह क्योंने गुभता या कीह सुरोदेशे दुसारता था, और हिस्ती न किसी हाट सुरादिह क्योंने

गुरस्ता या चीर दूसरीं है सुवारता था। और किसी न किसी सरद दूसरीं है क्यों अपना उसन वराहरण वरिश्यत करता था। इस तरद वे तुम पुदर-विनयें बहुतरे से पत्नी उसके प्रोत्न-विस्तय वीचता, अंक्रमिता, सूचीत, रावसराज, और कई वर्तमान आपयों आप सीचने क्येत सथा औरोंडो सिएसाने नयें। "दम तरद वक्त संस्थानें समस्य १०० सनुवाहा जाता होने सम्मा। इंग्

दिनों के बाद उन्हें ब्याम्यान मुननेहा शीक संगा और उनमेंसे कुछ मुत्रक मेरे पान

भावे। उन्होंने भावने पैरोरर बारे होकर को उद्योग और राश्चिम किया या और दिन महानी मुसले व्याववान देवेडी प्रावेश को भी, उलावा मुस्तर बस प्रमार पर्या भी से में नाम पा कि भाव समामीर व्याववान देवेंगा है कि निवस किया नहीं होता है तो भी मैंने स्थादयान देवा स्वीकार कर किया। मैंने निवस किया मह दूरवर्षी बालांकिक देलागी और त्यावदेश को पुण कहा जायना उत्यवा है के भार पर देवें किन न दहाग। इस होदे को के कुछ मानों कई स्थाववान की भार उनमें भान कर्यावार नाम्योश के उत्यव्दाल देवर करताया कि पुमसेने प्रयेक मानुर, यार चारे ता न्यूना इक्लों मेंने से हाम वर सामा है। पुमसेने भागा जानकार पर्या भी हरवाल कर मुसारे है कर स्वत्योगन है है। प्रशास कराज भारते उत्यावदेश किलित काना चाहिए, अपनेनो स्वत्योग स्वार क्यांज भारते उत्यावदेश किलित काना चाहिए, अपनेनो स्वत्योग कराज स्वार्थ

बाहण, वशीक प्रमुख्य चारवहा मारी खुषेया उसकी बर्तमानिता पर हैं अरकोम्बर । "दुश उपलाम व कार्र वह बात थी और न कोर्ड बात बिचार ही था-स्पूर्तनी कच्छो मान दुर बानें ही दोरहांड वर्त थी, तो जी बुद्धारे उपको बरे आह. इंके हाथ दुना । व बहुना अन्याम बहान पने और रह निवसने उसकार्युक्त परिश्रम करते रहे। फल यह हुआ कि उनमें योग्यता आतो गई और मीके मिलनेपर वे तरह तरहके रोजगारोंने लगते गये। उनमेंने कई लोगोंने तो अच्छी उम्रति कर ली और उनकी गणना प्रतिष्ठित पुरुपोंने होने लगो। कुछ समयके बाद इनमेंने एक ऐसे पुरुपने मेरी मेंट हुई जिसने अपने उद्योगके वल पर अपनी अच्छी उम्रति कर ली थी-जी एक कारपानेका मालिक वन गया था। उसने कहा "में इस समय बहुत छुखी हूँ। आपने कई वर्ष पहले मेरे और मेरे सायियोंके सामने जो सचे विकायद व्याख्यान दिये थे, उन्हें में आज भी कुत-ज्ञतापूर्वक समरण करता हूँ। आपने जो माग पतलाया था अपनी ज्ञाणिकर प्रयाल करके में अवतक उसीचर चल रहा हूँ और मुझे पदा विश्वास है कि उसीके कारण महें यह गुतागुर्विकी प्राणि हुई हैं।

" इस पटनासे स्वावलम्बनके विषयको ओर मेरा प्यान विशेषरूपसे आक-पित हुआ और मुद्धे इसके विचारमें बहुत आनन्द आने लगा। अतः मैंने उक्त नवयुषकोंकी सभाके म्यास्यानोंमें जो यार्त कही थीं, उनको हृद्धि करना शुरू किया। मैं जो कुछ याँचता, निरीक्षण करता अथवा संसारी काम-कार्जोमें पहकर अनुभव प्राप्त करता था, अवकाश मिलनेपर उन सब पातीका उतना भाग जो इस विषयके लिए उपयोगी होता था लिखता जाता था। इस तरह इस विषय यका एक अच्छा संमह हो गया और वहीं संमह आज इस रूपमें प्रकारित किया

जाता है। "

यह प्रन्य सन् १८५६ में पहले प्रकाशित हुआ था। उसके बाद सन् १८६६ में स्नाहल्ख साहयने इसमें अनेक नये उदाहरण शामिल करके इसकी उपयोगिताको और भी यहा दिया है।

इस प्रन्थकी शिक्षायें ।

इस प्रम्यक्षे प्रया शिक्षा मिटेगी, यह टावडर स्माइन्सके राष्ट्रोमें ही बतलाना शच्छा होगा। ये बहते हैं:-"संक्षेपमें हस पुस्तबका टेह्स निम्नानियत प्राचीन भिन्दु सामदायक स्परिसोंका बार बार दोहराना है। इन बातोंकी जितनी बार दोहराया जाय उतना है। थोड़ा है,—

१ मुखी बननेके लिए प्रत्येक सुवककी काम अवस्य करना चाहिए।

२ उदीन और परिधमके विना कोई भी महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं हो सकता है। १ बिटनाइयोंने बरना न चाहिए, किन्तु मन्तोब और धेर्दक साथ उनपर

विजय प्राप्त बरनी बाहिए।

 प्रत्येद मनुष्यको भवना वरित्र उत्तर्भेणीका बनामा बाहिए: वर्षो कि इसके बिना स्तामाधिक बोम्यता निकम्भी है और सांगारिक सक्तना दो काँडोडी है। " बाक्टर ब्याहकाने इन उपनेशों हो मैक्डो उदाहरण देहर ऐसी सरल शीर निमाधर्वेड शतिने गमसाया है कि संतुष्य ह विकार उनका गहरा प्रभाव पहला है । इन्द्र इन बामने पूरी नगरना हुई है । उन्होंने दियला विवा है कि हर जानि है बीप हर तरहंड बाम करनेताले मनुष्य-नाई, दशी, यमार, कुम्हार, मुनार, महरे जगहे, महरू, ब्यापारी भादि-और हर एक धेवी हे मन्य-अमीर कराब, माहिक, मान रूप, मागाम व गुरूमा आहर--- अपने उन्होंगमे अपनी उपनिर्धे गर-बारना प्राप्त कर सकते हैं । परिचल और चैब ह मामन कर नरवरी करिजाइयाँ कर हो जाला है और इन युवार द्वारा नावन नाथ और मुखे मनुष्य भी कुछ म क्ल बाम्बाय'त कर महता है। दमानी और प्रोग उपति हमारे ही हापमें है। स्याय प्रवत का अपने पर्य आप गर होता क्योक्सन और अलीव दोनी मर-बनी दक्षणेक्षा बड है । भारत्यांमें इस प्रत्य प्रतान्ती बडी जाते आवश्यent ta the extense System than on the angle of बण इसका अवनत्त्रक कर " राव रर यह कर बहुत कावासी प्राद्ध CHI ACCHEL MET TE TOTAL MET AND THE WALL all more form of an extra contractor of the

्राच्या वेद अविकास क्षेत्रक भागत है। तह ता ता वा का क्षेत्र है है कि विकास के कि विकास के कि विकास के कि विकास प्राप्त का का का का कि कि कि विकास के कि विकास के

Fort Attende

45.0

gage harmon in the first and arrant of the aggregation of the aggregat

समें अनेक देशी उदाहरणं सामिल कर दिये हैं, जिनका प्रभाव हमारे देश
(तियों पर विदेशी उदाहरणोंसे अधिक पट्टेगा; परन्तु इतके गाय ही मूल पुस्त
हमें जितने महत्त्वपूर्ण विदेशी उदाहरण हैं ये भी इत रुपान्तरमें रक्षे गये हैं।

अध्यायोंके प्रारंभ और थीचमें कुछ हिन्दी और संस्कृतके सुभापित चड़ा दिये

गये हैं। इँग्डेण्डकी समाजमंत्रीयी बातोंमें परिवर्तन करके उनको भारतवर्षके

समाजके अतुकूल बनाया गया है। मूल प्रयक्त सातर्षा अध्याय—जो सर्वथा

इँग्डेण्डके समाज—वहाँक तानदानी रईशोंसे संध्य रुपात है—इस पुस्तकमें नहीं

रक्षा गया। इतना हेर फेर करनेके साय ही मूल प्रयक्त भागोंको भी पूर्णतया

रक्षा करनेकी चेटा की गई है। इस अपनेमें मुहत समय रूप हुआ है। कहीं

है। देशी उदाइरणोंकी सोज और सुनायमें महत समय रूप हुआ है। कही

कही तो छोटे छोटे उदाहरणोंकी कोज करनेमें मुझे पड़ी पड़ी पढ़ी पुस्तकों आयो
पान्त पट्टी पड़ी है। इस पुस्तकके लियानेमें महत निक पुस्तकों आर पत्र
पत्रिकाओंसे सहायता लो है जिनमेंसे मुख्य सुद्य ये हैं-—

ų

(१) ईश्वरचन्द्र विद्यासागरका जीवनचारत ।

(२) सरस्वती (मासिक पत्रिका) के फाइल। (३) मिश्रवंधु-विनोद (हिन्दी-प्रन्थप्रसारक मंडली द्वारा प्रकाशित)।

(४) जावजीकीर्तिप्रकाश (मराटी)।

(५) बालबोध (मराटी मासिकपत्र) के फाइल ।

(६) अस्तोदय तथा स्वाश्रय (मनःमुखराम सूर्यराम त्रिपाटीकृत, गुजराती) ।

(7) Biographies of Emment Indians. (C. A. Natesan & Co., Madras.)

(8) The Indian Nation Builders, in three volumes (Ganesh & Co., Madras,)

(9) The Annals and Antiquities of Rajasthan (James Tod.)

(10) The ' Leader. '

उपर्युक्त पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओंके टेखकों तथा संपादकोंका में अस्यन्त उपकृत हूं। मराठा पुस्तकोंके पढ़नेमें मुद्दे एक मराठा सव्वनसे सहायता मिल्लो है। अतएव में उनका भी आभारी हूँ। अंतमें में श्रीयुत पण्डित नाब्स्समजी प्रेमीके प्रति कृतहता प्रकट किये बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने इस पुस्तकका संक् क्रिया है और अपनी बहुमृत्य सम्मतियोंने सुन्ने बहुत ही सहावता दी है। उन्होंकी क्रपासे सुन्ने भाग इम पुस्तक्को भागके सामने रखनेका सीभाग्य प्राप्त हुआ है।

यदि इस पुरुषको हमारे भाइयोमें उत्साहहा कुछ भी संबार हुआ, तो मैं अपने परिभन्दो सफल समग्रींगा ।

ह्योदी वैगम, भागरा, १-२-१५

विनीत-मोतीसाछ ।

दूसरे संस्करणकी सूचना।

इस पुस्तक हा प्रयम सम्बन्ध रहु शोज स्थाप । या । यह हिन्दीप्रेमिन पींड अनुपरकारी कर ६ १३ १० ०००० ८०० १००० अस सब स जबक सका।

प्रथम महस्तरमा अत्मास । जा चार १००१ हु महिला हो स्था या इस सार हम स्थान १८ १० १ १ १००० चार्यास हम मन्द्र-रमान सह दमी देशका ५० व १ १०५४ चार्यास हम स्थापन सार हम प्रथम वर्षा है। १९९१ हम १९९१ हम जान जा हमा

ब्यादः वेगम्, त्रप्याः)

मार्नास्त्रहार

ि विषय-सूची। हुँदै पहला अध्याय।

्रा कान्याव देश्ल्य=

जातीय और व्यक्तिगत स्वावसम्बन ।

स्वावच्यनका माव—प्रवा और उसके नियम—कैसी प्रवा जसा राज्य—विक्रमादित्यका सहारा और स्वावच्यन—सब धेनियोंमें धीर और परिध्रमी मतुष्य
होते हें—स्वावच्यन सँगरेज जातिका गुण है—रूमरोंकी व्यावहारिक विक्षापर
उपोगरील मतुष्यका प्रमाव—जीवनवरितोंकी उपयोगिता—महापुरय किसी
विमेष जाति या धेनीमें उत्तप्र नहीं होते—नीच जातियोंमें जन्म देनेवाले प्रसिद्ध
मतुष्य—वहुतसेप्रसिद्ध मतुष्योंकी पहली निम्न अवस्था—संस्कृत और देशी भाषाकोंके अनेक प्रसिद्ध लेखक—माठजातिक प्रसिद्ध देखक, प्रसिद्ध राजनीतिक और
कैनिक—प्रसिद्ध स्वसायों मतुष्य—सेठ जावजी दादाओ चौषारी—व्यापारीं,
वक्षीते और दर्मचारियोंके प्रसिद्ध देखक, प्रसिद्ध राजनीतिक और
विक्षामें पती मतुष्य, आठची नहीं होते—परिध्रमी धनाडय मतुष्योंक उदाहरण
—तिक धेर्मांक जन्म ट्रेनेवाले प्रसिद्ध विदेशी मतुष्य—होक्सपियर—बहुतसे मतुष्यों सुर्वाचे पहली दरिद्ध अवस्था—प्रसिद्ध ज्योतिपश्चाव्यता—संख प्रमापिरेशकोंक प्रसिद्ध पुत्र—उपोगरील और उत्साही मतुष्य—जोकक ब्रोषट्यन—विक्रयम जैक्सन—सह ब्रापम—मतुष्य अपना सर्वोत्तम महायक आप ही है—
पृष्ट र से १८ तक।

दूसरा अध्याय।

कांचोगिक नेतागण I

मारतवर्षके टिए ट्योगपंपेकी आवस्ववटा—प्राचीन मारतके ट्योगपंपे— क्रॅगरेज़िंकी उदोगकीटवा—टान-हाज मतुन्यका सर्वोत्तन विक्षक है—दारिव्य और परिश्रमके कारण आहें हुँदें। कटिनाइया दुर्जय नहीं होती—नित्र श्रेगीके मतु-क्षोंके क्रिये हुए आविष्कार—मारके अंजनका आविष्कार—जेम्स बाट; उसका परिश्रम और ध्यानाभ्यान—मैम्यू बैन्टन—मारके अंजनसे थ्या क्या काम टिये जाते हैं—महीनसे इंपडा दुननेका काम—आईराईट; उसका प्राप्तिक जीवन







⋄>⊅≪<

धनका सदुषयोग और दुषपयोग।

समयके सदुषयोगिष्ठे विषेक युद्धिकी परीक्षा होती है—र गर्थनिरोपका ग्रुण—
भवने करर छ्याये हुए टैक्त-भित्तस्ययता स्वतंत्रताके लिए आवर्षकीय है—
पिज्लाक्षर्य भारतीयी देवनी-भित्तस्ययता एक महत्त्वपूर्ण जातीय ग्रुण है—
रिचर्ट फाकरेन और माइटकी सलाई—मजदूर भी स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं—
प्रान्तित हानेरके पिताका उपदेश—सर्थ आमदनोक भीतर ही रसना चाहिए—
छाई बेहनका मत—पिज्लाचाँ करतेयार —कर्जदार होना—हाइटनका कर्जकर्जके विषयमें हाक्टर जानसनके विचार—कर्जदार होना—हाइटनका कर्जकर्जके विषयमें हाक्टर जानसनके विचार—पान लाक-पियमें स्मृत्के विचार—
रेप्नाटकीन वननेकी चाह—मेपियरका आहापत्र—प्रदोगनों सा सामना करता—
स्व निकर प्रदोगनते करें पर्व—टामस राइट-अवराधियोंका सुधार—हर एक
धेषा जो ईमानदारीके साथ हो सकता हो आदरणीय है—क्ययेका केवल
इक्टा करना—पन मतुष्यके सहुणोंका सुनृत नहीं है—भनकी शक्ति विययमें
अतिश्रानि—सर्थी प्रतिष्ठा—पृष्ठ १४३ तका ।

दसवाँ अध्याय। •>>>०€<•

अपना सुधार-सुविधाय और काटेनाइयाँ।

आत्मोद्वारके विपयमें एक विद्वान्त कथन—डाम्बर अनंतहका चिक्षण-काममं लगे रहना स्वास्थ्यदायक है—मेलयत्य पुत्रोपदेश—तन्दुरुस्तीका महत्त्व—सर आई कर न्यूटन—लड़क्पनमें आजारोंका प्रयोग—यहे आदिसयों के तन्दुरुस्तीकी जरूरत—लड़क्पनमें आजारोंका प्रयोग—यहे आदिसयों के तन्दुरुस्तीकी जरूरत—अमकी सर्वत्र जय होती है—गरिश्रमकी शक्तिक विपयमें सर जीग्रजा नैनावहस और सर फोयेल वनसटनका विवास—ग्रद्धता, पूर्णता, निजंबसिक और तरपरता—धैर्यपूर्वक परिश्रम करनेका गुण—मेहनतके जी दुरानेके हानिज्ञा-क्षार्यपाण—पुस्त-कंपिक विपयोंकी पुस्तक पड़नों हानि ज्ञानका सदुपयोग आर अनुभवते ही आसकती है—पिक्षक स्टीफिन्सन, हंटर, स्वामी रामकृष्ण परमदंस, महाराज ही आसकती है—विडले, स्टीफिन्सन, हंटर, स्वामी रामकृष्ण परमदंस, महाराज विवानी, रणजीतिस्थिन ययपि बहुत कम पुस्तकें पड़ी भी, तो भी वे महाराख



· वारहवाँ अध्याय I-

4770000

सदाचार और मुजनता।

मतप्यके अधिकारकी चीजोंमें चरित्र सबसे बहुकर हैं-मेंहिनका चरित्र-सदाचार शक्ति है-लाई इसेकीनके चारित्रिक नियम-जीवनका उद्देश ऊँचा होना चाहिए—सचाई—मुंक्षी गंगाप्रसादके चरित्रके विषयमें निस्टर डीटाफोसका विचार-तम इसरोंको जैसे माछम होते हो वास्तवमें भी वैसे ही बनो-काम-धाजमें ईमानदारी-आदतोंका असर-आदतोंसे ही चरित्र पनता है-आचरण-शियाचार और दयालता—सभी नम्रता—विलियम और चार्ल्स मांट—सेठ राण रा-वर्जा-संघा सञ्चन-सञ्चनका एक गुण आत्मसम्मान-रानदेकी स्वाभाविक न-त्रता-एखवर फिजजिरल्ड-सञ्जनोंके अन्यान्य गुण-इमानदार जोन्स हानवे-टपुक आफ बेलिंगटन आर निजामका मंत्री-उदारचरित बेलेजलीका १५ लासकी भेंट अस्वीकार करना-धन और मुजनता-निधनोंने भी बीर और मुखन होते हैं-एक उदाहरण-पाठीतानांक जनवीटिंग है।सके मंत्री केंवरजीका सीजन्य और स्वार्थत्याग-सम्राद्ध मांगिसकी सुजनताका उदाहरण-सजन मनुष्य सचा होता है-फेल्टनहार्वे-पाण्डवों हा बीरच्यवहार-बरिक्ट और टाइटैनिक जहा-जोंका हुबना और बीरता मुजनताके सदाहरण-सजनींकी एक सची परीक्षा: वे अपने अपीनोंके साथ केसा व्यवहार करते हैं-अन्या ला मोही और एक युवब-रालक ऐयर कोम्यीका गुण आत्मत्याग-संघे सज्जन और कार्यक्रवाल मनुष्यका परित्र बेसा होता है-एप्ट २२३ से २४८ तक।



इंडरीदास, गोस्वामी	יאנט	প্য
वैदंग स्वामी, महारमा	99	फूटासिंह ६
, द		पीरोजशाह मेरवानजी मेहता,
दयानन्द सरस्वती, स्वामी	પુર	सर १०
दादामाई नोरोजी.	99	ঘ
िनकरराव, रावराजा, सर	91	बदरहीन तथ्यबजी, जस्टिस ११
रीनदयाल, राजाबहादुर	90	पहरामजी मेरवानशी
दीनपाइ ऐदलजी याचा	90	मलबारी ७,६५-६६
देवेंद्रनाथ टावुर, महार्थ	9 8	विमाजी रमुनाथ छेले १२९
दोणाचार्य	v	धीरयल, राजा ७,१९७१९८
द्वारकानाय	u	दोपदेव ५९-६०
น		वदान्द्रस्थामी, महापुरुष १४८
धनीराम	•	¥
म		शास्त्र दामोदर पालदं १८५-१५०
संगेन्द्रशास दशु प्रारद्यांबद्या		साम्य स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप
		शृदेध स्थापाध्याद । १०९-५५०
नरहार	٠	the the
arilit	•	•
सातव गृह	•	a
रामप्रहास	7.4	भारत प्रमास
61 2 Pm		and desired to the second second second
And the Bull Residence in	• •	
Q		*** **
Clis t t		er fe jer ,
Lives		#+ · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
Acc		
V		
		* 15
7-14-4	٠.	•
**** *** *		

" रावधे बडकर यह बात है-जिन तरह दिनके बाद शत अवस्य आती है उसी तरह जो मनुष्य अपने अन करणके साथ सचाईका बतांब करता है यह

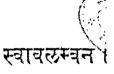
बमरों हे साथ कभी शोटा बतांत्र नहीं करता । " --- डोक्सपियर ।

" यदि मुझे किसी नवयुषक हो उपदेश देना हो तो मैं उससे यह करूँगा-अपनेसे अच्छे मनुष्योंकी सगति करो । तुमको पुस्तकोंने और अपने जीवनने

ऐसे ही मतुष्यों ही सरसर्गात करना आहिए, क्योंकि तुम्हारा सबसे अधिक कस्थाण इसीमें है। अपछी बातोंको कदर करना सीमो, जीवनका सारा सख

स्भी बालपर निभंद है । यह देखा कि महात्माओंने किन बानों ही बदर की थी।

उन्होंने महरवपूर्ण वानोंको कदर का थी। जो मनुष्य सकाणायचारीके होते हैं वे र्मन नानीका व्यामा और शक्ति करने हैं। " --धकरे ।



· - Beat Killed Birm

पएए। अध्याप ।

- Constant

जातीय और प्यक्तिगत ग्यायलम्यन ।

....

ं भावन महायव आप है। होगा महायव धनु मना, यम बाहनर्थ है। धिरीको एक नहीं भिरमा बनी । '' —कीपसीसर्थ गाम ।

---वाधसारास्य गुमः

ं १४ मी दशक्षा तुरुन जाती स्तव व्यक्तियोगी याम्यतामें होती है। 🚜 ज ११६ (महा)

प्रभाव कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्य कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्य कार्या कार्या



5.8

जातिकी उन्नति उसके एथक् पृथक् मतुष्यके परिक्रम, उद्योग और सचा-ईसे मिलकर होती है। इसी तरह जातीय अवनति प्रत्येक मतुष्यके आलस्य, स्वार्थपरता और दुराचरणके समृहका नाम है। सामाजिक कुप्रयाय मतुष्यके दुराचारी जीवनसे ही पैदा होती हैं और ये तभी दूर हो सकती हैं जय मतुष्य अपना जीवन और परिप्र मुधार है। यदि सरकार कानून बनाकर इन्हें दूर करना चाह, तो ये दुप्पाय किर किसी दूसरे रूपमें प्रकट आ वार्यगी। अगर यह मत ठीक है तो हमको नियमोंको बदलने और अच्छा बनानेका ही प्रयत्न न करना चाहिए, किन्तु मतुष्योंको स्वयं उन्नत होने में सहा-यता और उन्नेतना देनी चाहिए; यही सर्वोत्तम देश-मिक और परोपकार है।

याद्य शासनकी अपेक्षा हमारा आंतरिक चरित्र हमारे लिए बहुत कामकी चींज है। किसी निर्देय राजाका दास होना बहुत ही छरा है; परन्तु अज्ञान, स्वार्य और दुराचरणका दास बनना उससे भी छरा है। ऐसे दास केवल राजा अथवा राज्यके बहुलनेसे स्वतंत्र नहीं हो सकते। यह सोचना केवल भ्रम है। व्यक्तिगत चरित्र ही स्वतंत्रताका मूलाधार है और इसीसे सामाजिक रक्षा और जातीय उम्रति गास हो सकती है।

मानवी उन्नतिके विषयमें हम अब भी भूलें किया करते हैं। इस लोग विक्रमादित्य और भोजकी याद करते हैं और इस लोग सरकारी तिय-मोंकी आवश्यकता समझते हैं। "हमारा कल्याण उसी समय होगा जब विक्रमादित्य सरीला राजा राज्य करेगा।" जिन लोगोंका ऐसा विचार है उनका मतलब यह है कि हमको इस करना पड़े, कोई दूसरा ही हमारे बदलें सब इस कर दिया करे। यदि ऐसे विचारको आश्रय दिया जाय, तो हमारे स्वतंत्र विचार जाते रहेंगे और अवनतिका मार्ग शुल जायगा। विक्र-मादित्यका सहारा हुँद्ना मानो उनकी शक्तिक पूजा करना है और इसका कल वैसा ही अक्टाणकारी होगा जैसा केबल धनकी भक्ति करनेसे होता है। जातियों में फैलानेके लिए इससे कहा अच्छा विचार स्वावलम्बनका विचार है, और जब मनुत्य हसे पूर्णत्या समझ जायँग और इसके अनुसार चलने लांगे तब फिर विक्रमादित्यका धाश्य कश्वाप न हूँद्रेंग। इसी तरह सरकारी तिय-मोंकी आवश्यकता समझना भी कैवल श्रम है। हमारी उन्नति हमारे ही



सारश्चित शिक्षा हेती हैं। घरोंस, रान्तीस, बंबीस, बारनारीस, बंदोंस, शिक्षामालाओंसे और बानुन्योंक निर्मय गमनामानक स्थानीसे को जीवन-संबंधी शिक्षा मिलती है यह पाटमालाओंबी शिक्षामें कहीं जियादा समाय-शालिती होती है। यह शिक्षा हमको सानपी जीवनके बर्नाच्य और स्वयहार सिरानार्गा है—यह पुग्तकों हारा बदापि सान नहीं हो सबनी। एक विहानने अपने सारगांकित हारहोंसे कहा है वि " अध्ययन करनेस हम अध्ययनके बाम दिना नहीं नीत जाते। यह बान तो अध्ययनके उपरानन वेचल निश्चा हालये—अनुभागने आती है।" मनुष्य अध्ययनके अधेशा बाम बरनेसे अधिव नियुण होता है। साहित्यकी अधेशा जीवन, अध्ययनकी अधेशा बार्य और जीवनधानीतीके स्वाध्यावकी अधेशा चरित्र मनुष्यजानिकी सुदियोंको बुद् बारों हैं और उमको संदेश दक्षन बनाये रहते हैं।

तो भी बहे और विशेष पर समन मनुष्यंथि जीवनचरित हुमरोवां
सहायता एवं उत्तेजना देनेमें बहे तिकाप्रद और उपयोगी होते हैं। बुछ
सहामाओंके जीवनचरित तो पार्मिक पुरत्तकोंके समान है। बयों कि वे
अपने और संसादक बरुवाणके छिए जीवनको छेष्ठ बनाना, विचारोंको उत्ते रस्ता, और परिश्रम बरना सिक्लाते हैं। ये अपने पैरेंपर आप राहे रहने, अपने उदेहयकी पृत्तिमें पर्यपूर्वक को रहने, अधान परिश्रम करने, और
सचाईपर ट्राटनेके बहुन उत्तम उदाहरण हैं और गुछे प्रान्दोंमें हमको
यह बनलाने हैं कि प्रायंक मनुष्यमें अपनी उत्ति करनेकी कितनी चित्र भागत् हैं। वे हमको बहु स्वार्थक मनुष्यमें अपनी उत्ति करनेकी कितनी चित्र भागत् हैं। वे हमको बहु भा साफ साफ बनलाने हैं कि आस्मानम्मान और
आस्मानभरताके हारा छोटेने छोटे मनुष्य भी भित्रपूर्वक अपना निर्वाह कर
मकते हैं और बान्यिक बदा भा सह कर सकते हैं।

यह बात नहीं है कि किसी एक जाति अधवा धेणींके ही मनुष्य विज्ञान,
साहित्य और कला-सीझालमें विद्वान हुए हो । ऐसे मनुष्य विद्यालयों, कारनातों और किसानोंके घरोंमे, निर्धन लोगोंके होंपटी और धनाल्योंके सहलोगों—सभी स्थानोंसे हुए है । कहें बट्टे बट्टे धार्मिक नेता साधारण स्थितिके
सनुष्य थे। कभी कभी अखीत निर्धन मनुष्य भी सर्वोच पदांपर पहुच गये
हैं। बट्टी बट्टी घटिनाइयाँ भी, जो अदल मास्ट्रम होती थीं, उनके मार्गमें
याधक नहीं हुई। यहि



<u>जातीय और स्पक्तिगत स्वावलम्बन ।</u>

चाणक्य एक निर्धन प्राह्मण के पुत्र थे। वे स्वयं भी बढ़े निर्धन थे। चाणक्य जय पाटलियुत्र (पटना) में नंदराजाके दरवारमें गये थे तब वहाँके पंडितों और दरवारियोंने उनके फटे और मलीन बख देखकर उनका वडा उपहास किया था। परन्तु चाणक्यने अपने उद्योगसे ऐसी इरिद्रतामें भी विद्या प्राप्त की । कामधेन और विद्यां मदैव फल देती है । अंतम चाणक्यका वडा सम्मान हुआ । महाकवि गोस्वामी तुलसीदासके विषयमें बहुसम्मति यही है कि वे अस्पंत दरिद थे। सुरदास भी अस्पंत दरिद थे। वे आठ वर्षकी अवस्थामें ही अपने पिताको छोड़कर मथुरा चले आये थे। सम्राट् बाबरके दरबारके हिन्दी कवि नरहरिके पिता बढ़े दरिद्री थे। संस्कृत और बहुभाषाके श्रीसद बिहान ईश्वरचंद्र विद्यासागर परम दरिही थे। हिन्दीके सुकवि कुम्भनदास भी बहुत दरिद्दी थे। वे वलुमाचार्यके शिष्य थे और एकबार सम्राट् अकबरने फतहपुर सीकरीमें इनका बड़ा सम्मान किया था। चैतन्य महाप्रभुने दरिद घरमें जन्म लिया था। इसी तरह गर नानक, अक्षयक्रमार, द्वारकानाथ, कृष्णदास इत्यदि अनेक महात्मा निर्धन घरोंमें उत्पन्न हुए थे। प्रसिद्ध मानिकपत्र ' ईस्ट एंट वेस्ट ' के सुयोग्य सम्पादक बहरामजी मेरवानजी मलबारी परम दरिद्र थे। वे बाल्या-वस्थामें ही अनाथ हो गये थे और संसारमें उनका कोई आध्रयदाना नहीं था। प्रसिद्ध कोशकार वामन शिवराम आपटे अत्यंत दरिद्र थे। महास हाईकोर्टके जज सर मधुस्वामी ऐयर ऐसे दुखि थे कि उनको १२ वर्षकी अवस्थामें ही एक रापा मासिककी नीकरी करनी पड़ी थी। कलकत्ता हाई-कोर्टके दुर्भापिया इयामाचरण सरकार भी बाल्यकालमें परम दरिद्र थे।

राजनीतिज्ञों और सैनिकोंको भी छीजिए। द्रोणाचार्य अत्यंत इतिह् थं। जो अपने याछकको द्रुप मील छेकर भी न पिछा मकते थे, उनके पास भला बया रक्ता था! राजा वीरयछने गंगादाम नामक एक निर्धन याछ-एक यहां जन्म दिया था। ये केवल नीतिज्ञ ही नहीं, किन्तु अच्छे मैनिक भी थे। युद्धमें ही उनकी जान गई। उनमें और भी गुगथे। उनकी हाजिर-जवायी तो ऐसी मिनद है कि भाषः सभी भारतवासियोंको उनके हो चार पुठकुले याद रहते हैं। ' बीरयल-विनोद' में उनकी हाजिर-जवाबीके अनेक नमृन दिये हैं। वे हिन्



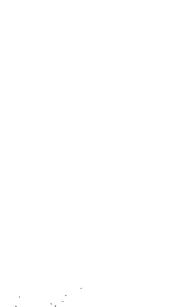
जानीय थीर स्यक्तिगत स्यायलस्वत ।

उनको बहुन पर्यट् किया और उनकी विजी गृष कह गई। इस काममें सफलना पावर जावानि अपना एक प्रेय स्थेल दिया और उसका नाम ' निर्णयसार ' रक्ता। इस फाममें भी उन्होंने यैसी ही चुराई दिनाई और देशी भाषाओंकी बहुन अच्छी पुल्लेक फाम प्रांस कर दिया। उन्होंने सब नाटके बहुन मुन्दर शहूप बनाये। फिर तो बम्बईबी साकारने भी अपनी बहुमूल संस्कृत पुल्लेक इसी प्रेयमें प्रशासित बनाई। स्वार्णके दिल गुजरानी और सराशिंत पुल्लेक सी यही प्रवासित बनाई। स्वार्णके इस प्रेयको उपयोगी और उच्छोजीका बनानेमें कोई साम च उदा स्वत्यी। ये च्या भी नामी नामी विद्वानीकी पुल्लेक मकाशित बनके बहुन योदे सूख्यमें वेचने करी। इसमें सर्व साधारणमें शिकाका बहु प्रचार हुआ।

उन्होंने अपने यहाँमें मीन मानिक पुलकें भी निकालना आरंग किया, जिनके नाम पालयोप, काव्यमाला और काव्यमंत्रह हैं। इन पुलकोंने भी जनमाधारकों बढ़ा लाम पहुँचाया। जावजींने किननी मकलना प्राप्त थी, इसवा कुछ अनुमान इस यानमें हो सबना है कि जावजींके जीवनकालमें ही उनके इसके सब कांचारियों हा चेनन मिलकर २०००)र० मानिक पा और अब यह रकम लगमना दूर्गा हो गई है। गवनेंमेण्टने उनके कामसे मसक होकर उनके जे० पी॰ की उपाधिसे विजिधन किया था।

जावर्जाका चरित्र भी पट्टी उच्छेशीका था। वे यट्टे द्वालु और उदार-चिन थे। वे दीनदुवियोंने घड़ा प्रेम रगने थे और उनकी सहायता करनेको मंद्रव नलर रहते थे। एक यार उनके 'बालकोध' नामिक पत्रकी उत्तमतासे प्रमक्ष होकर गायकबाट् श्रीसवाजीताव महाराजने उनको १०००) रुपया का पुरक्कार दिया, पर्न्तु उदार्शिक जावर्जाने यह रुपया अपने पासन रगक्का बालबार्थक सम्पादकको दे दिया। जावर्जाक जीवनमें सबसे अधिक विचित्र बात यह है कि बहुत योद्दिगी शिक्षा पायर ही उन्होंने हतनी उद्यतिकर छी। व्यवनायमें अपने उद्योग, परिश्रम और मचाईक कारण उनकी, आध्यजनक इति हुई और ये सर्वनाथारणके व्रिय वन गये। उनकी सृत्युसे छापेकी करा और व्यवनायको चट्टी हानि हुई।

छुप्पापान्तीका जन्म एक दुरिह घरमें हुआ। उनको बाल्यावस्थाले ही अपने सिरपर नाजकी गटरी उटाकर बाजारमें बेचने जाना पहला था। वे



दाहि गेट्छजी पाछा, पंटित अयोध्यानाथ भीर अध्य बट्छहीन नच्यपञ्जोके पिना प्यापार करने थे। जस्ति महादेय गोविंद रानदेके पिना नामिकमें एक माधारण कर्मणारी थे।

पंदित सहनमोहन मालवीय, महामा तलंग स्वामी, श्रीयुन गोपाल एका गोन्तरे, हारट राजेन्द्रालाल मित्र, लाला हंसराज, 'एडवेकेट' के सम्पादक सुन्ती गंगायसाह यमी, पाशीनाथ प्रयंयक तलंग, मेट माणिकचन्द्र हीराचन्द्र के. पी. इत्याहिक पिता साधारण स्थितिक युक्त थे। श्रीयुन हादाभाई नयरोजीके पिता पुरोहित थे, बब्ति यह काम उनके यंत्रीं कई पीडियोंस होता था।

क्रांतक नेपोलियनके समान अनेक साधारण सैनिकोंने आधर्यजनक रक्षति कर थी है। मराठा-जिक्के स्वयर्थापक महाराज दिखाजी कीन थे है उनके पिता चाहजी बीजापुरके बादशाहके यहाँ नीकर थे। जिवाजीने प्लामें रहकर युद्ध-कीजल सीसे थे। महाराज माध्ययराच सिधिया साधा-रण सैनिक थे। पहले पहल उन्होंने पानीपनके युद्धमें हुए स्वाति पाई। फिर वे राजा हो गये। दिही और मधुरामें रहकर वे सुगल-पप्राद् ज्ञाह आलमके नाममें सुगल-राज्य पर भी जामन करते थे। उनके पिताजी, बालजी विकास येगवाके एक निम्न सेक्क थे। मैसूरके सुलतान हिन्द्रशाली उनी देशके हिन्दुराजाके यहाँ एक साधारण मैनिक थे। बहमनी राज्यके सम्यापक द्वाह हुस्तन गंगू एक साधारण मैनिक थे। और अर्थत दरिह थे। दिहीके सामक और सूर्यक्रके संस्थापक होरहाहि सूर एक साधारण मैनिक थे। दिहीके बादमाह शुनुव-उद्दीन पेयक गुलाम थे।

हुन िए स्पष्ट है कि सर्वोत्तम उसनिक िए यह जास्ती नहीं है कि सनुष्य धनी हो अयवा उसके पास सब तरहके साधन मौजूद हों। यदि ऐसा होता तो संमार सब युगोंमें उन सनुष्योंका ऋषी न होता, जिन्होंने निम्न श्रेणीसे उपनि की हैं। जो सनुष्य आवस्य और ऐसा आराममें अपने दिन विताने हैं उनको उद्योग करने अयवा कटिनाइयोंका सामना करनेकी आदन नहीं पद्ती और न उनको उस शक्तिका झान होता है, जो जीवनमें सफलता मास करनेके विष्णु परम आवस्यक हैं। गरीबीको होता सुसीबत समझने हैं, परनु वास्तवमें बात यह है कि यदि मनुष्य इद्रतापूर्वक अपने



<u>ज्ञानीय और व्यक्तिगत स्वावलस्थन ।</u>

क्षाए पेदरुजी बाछा, पंढित अयोष्यानाच और जिस्स बद्यदीन तस्त्रयज्ञीये, विता प्यापार कार्ते थे। जिस्स सहादेव गोविंद रानदेके पिता नासिकमें एक साधारण कर्मचारी थे।

वंदित सदनमोहन मालवीय, महामा तिलंग स्वामी, श्रीयुत गोपाल कृत्वा गोगाले, हादर राजेन्द्रालाल मित्र, लाला हंसराज, ' एडपेकेट' के मालादक मुन्ती गंगाप्रसाद चर्मी, फालीवाध व्यंपक तिलंग, मेर माणियाचन्द्र हीराचन्द्र जे. पी. हत्यादिक विता माधारण स्वितिक सुरूप थे। श्रीयुत द्रादासाई नवरोजीक विना पुगेदिन थे, पब्लि पह काम उनके पंतर्मे कई पीदियोंने होता था।

म्रांगकं मेपोलियनके मनान अनेक माधारण सैनिकाने आध्येजनक उत्ति कर टी है। मराद्य-दाष्ट्रिके प्ययस्यापक महाराज शिखाजी फीन थे हैं उनके पिना माहजी घीजापुरके यादशाहके यहीं नीकर थे। सियाजीने प्राम्में रहकर युद्ध-कीनल मीरा थे। महाराज माध्ययराज सिंधिया नाधारण मैनिक थे। पहले पहल उन्होंने पानीपतके युद्धमें कुछ स्थाति पाई। फिर वे राजा हो गये। दिली और मधुरामें रहकर ये मुगल-मग्राट् शाह आलमके नाममें मुगल-राज्य पर भी शामन करते थे। उनके पिता राजीजी, यालाजी विधनाथ योचक एक निग्न सेवक थे। मैसूरके मुलनान हिन्द्राजाके यहाँ एक माधारण सैनिक थे। यहमनी राज्यके मोधारण शीनक थे। देशके हिन्द्राजाके यहाँ एक माधारण सैनिक थे। हिस्ति सामक और सूर्यवाके मंत्यापक होरशाह सूर एक साधारण मैनिक थे। दिखीके शामक और सूर्यवाके मंत्यापक होरशाह सूर एक साधारण मैनिक थे। दिखीके शामक और सूर्यवाके मंत्यापक होरशाह सूर एक साधारण मैनिक थे। दिखीके शाहका धी सूर्यवाके मंत्यापक होरशाह सूर एक साधारण मैनिक थे। दिखीके शाहका धी सूर्यवाके मंत्यापक होरशाह सूर एक साधारण मैनिक थे। दिखीके शाहका धी सूर्यवाके में प्रवास गुलाम थे।

हम िए सप्ट है कि सर्वोत्तम उसकित हिए यह जरूरी नहीं है कि मनुष्य धनी हो अथवा उसके वास सब तरहके साधन मीजूद हों। यदि ऐसा होता तो संसार सब युगोंमें उन मनुष्योंका ऋणी न होता, जिन्होंने निम्न श्रेणीये उसति की हैं। जो मनुष्य आलस्य और ऐसा आसाममें अपने दिन वितात हैं उनको उद्योग करने अथवा किटनाइयोंका सामना करनेकी आदन नहीं पड़ती और न उनको उस सिक्का झान होता है, जो जीवनमें सफलना मास करनेके लिए परम आवस्यक है। गरीबीको लोग मुसीबत समझने हैं, परनु वास्तवमें बात यह है कि यदि मनुष्य दुदतापूर्वक अपने पैरास नम् रहे, में वही साथी उनके किए असीमोर हो नक्सी है।
मार्गियों मनुष्यक्षे समायके उम पुढ़के पिए तैयार कारी है जिसमें वसी
हुए सोग निष्या दिसावह विस्मानित हो जाने हैं, तानु समायहा और
समे हरपाएं मनुष्य वन और विधानमुद्देश नहने हैं और सक्तारम गार
करते हैं। एक दिहारका कमन है हैं "मनुष्यांक्षं न में। अपने बनका
प्रमाने जान है भीन न अपनी मोलिका। वसने में तुम्मा सहस्य समाय है
जिन्दा उसमें सालकों की है और सालिकों के उननी कर्म नहीं कमें
विनयी उनकी करती वार्मिय । अपने वैरास माय नहे दानेने और मेनमहा अभ्याय करनेने सनुष्यकों वह सिक्षा मिलती है कि वह अपनी ही
कमाईसी गीरी नामें और अपनी आमीहिकों किए और अपने विदेशहामें
आये हुए उसमा दानीरी हुए किनते किए सी विभने विदेशहामें

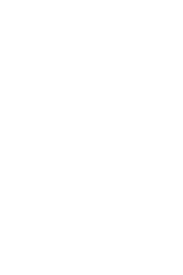
सुन्ने और भोगित्रमार्क्ष हैन्द्र, जिन्दी और सनुन्न करवारणः हुन्ने हैं, यन गिम प्रत्य करोगात है कि व सनुन्द को प्रत्य हैं जो परपुरेगीर वहाँ पैरा होता सी लियामें कुछ काम कर दिलाने हैं, और भोगीत्रायगाने काम उद्देश्य अपना जीवन परिधाने स्वतीन काने हैं। को नुन्तायों ताता है कि हमारे देशों कर प्रत्य का सी की कि निकास में मिल कार्यों हों परिधाने सामकों नक का तेने हैं। इसके विपाल के क्षेत्र हम्मारी हों परिकास सम्बन्ध ने की हम के कि हम के विपाल के कि हम सामकों है भीर सारेगा के विपाल मान तरहका परिधान करने हैं भीर कर उदाने हैं, यह नक कि परिवाल मान तरहका परिधान करने हैं भीर कर उदाने हैं, यह नक कि परिवाल मानति कार्यों कर कार्यों के मिल कर उदाने हैं, यह नक कि परिवाल मानति कार्यों कर कार्यों के मिल कर प्रताल के परिवाल मानति कर कार्यों के मिल कर प्रताल के परिवाल मानति कर के स्वति कार्यों के मिल कर प्रताल के परिवाल मानति कर साम के कार्यों के मान के मानति कर साम के कार्यों के मान के मानति कर साम के कार्यों के मान के मानति कर साम के मान के मानति कर साम के मान है की हमानति कर साम के मान के मानति कर साम के मानति कर साम के मान के मानति कर साम के मान के मानति कर साम के मानति कर साम के मान के मानति कर साम के मानति के मानति कर साम के मानति कर साम

पंताद्या मनुष्य भी अधीक वहीं है है। दिहताम जम सेहहा उराहरण मिलते है। मारनम भी क्या बनी जम स्व वसक जात है, जिन्हारे हिमी त हिमी रूपा देखाया का हु आर जिनम अन्य समुद्रहाला मनुष्यांक मिला मुला कर्मा चाहिए। माहित्यम स्व स्वीहन्त्राच अहुरका अनीत्रण, तिक्की माराम आत स्था मंत्री हुई है। आपक हुका महा पहुल लक्षींका बाग रहा है। आपको मयालान एपएका पुरस्का मिला वह आ अपने जानिनांक्तन दिवालयक निमान हुन है दिया (जात का

जानीय और ध्यक्तिगृत स्वायुखस्यन ।

देखार पूरीप और अमेरिकाके घटे घटे विज्ञानवेगा दाँगाँक गाउँ देंगाठी हवाते हैं। राजनीतिमें राजा खर दी, माध्यगायको लीजिए जिन्होंने दाव-नकोर, इंदौर और बदौदाने दीयान रहकर उक्त राज्योंकी प्रजाका यहुत भारी उपवार किया और अनुरू यहा और सम्मान प्राप्त किया । आपने एक समू-दिशाही बाटमें जन्म दिया था । आपके पिता भी ट्रायनकोरके दीवान थे 1 कर्मवीर देशभगेंभि महामा मोहनदास करमचेद गाँधीका नाम नदा अगर रहेगा जिन्होंने अपने देशभाइयोंके दुग्रीको दूर करना ही अपने जीव-मका एक मात्र उद्देश्य बना रक्ता है । आपके पितामह और पिता पीरबंध-रथे दीवान थे। जाति-हिनेपियोंमें सर सट्यद् अद्यादका नाम छिया जा सकता है। उनके पितामह सम्राट आलमगीर (दिसीय) के राजमंत्री थे और उनके विताको सम्राट अकवर (हितीय) ने मंत्री-पद पर नियस करना चाहा था । उद्योग-धंधीं और स्थापारमें जे. पन. टाटाका नाम हिवा नहीं है। हानी धनाइपोंमें बम्बईके सेठ प्रेमचन्द्र रायचन्द्रको कान नहीं जानता? आपने अपने ही उद्योगसे विपुरू धन उपार्जन किया था। आपने अपने जीवनमें सूच मिलाकर पचाम, साठलाव रूपये हान किये। आपने कई लाव रूपया कलकत्त्रेके विश्वविद्यालयको भी दिया, जिसके ब्याजने ऊँची परीक्षा पास करनेवालाँको एक हात्रवृत्ति दी जाती है, जो 'प्रेमचंद-रायचन्द-स्कालर्शिप' के नामसे प्रसिद्ध है । अन्य समृद्ध कडोंमें जन्म छनेवालोंमे श्रीयुत रमेशचन्द्रदक्त. सर तारकताथ पाछित, भारतन्द बाब हरिश्चन्द्र, महपि देवेन्द्रनाथ ठाकर, रावराजा सर दिनकरराय, सर संट हुकुमचंद हुखादिके नाम लिये जा सकत है। परन्त रमस्य रहे कि इस समय एसे मनुष्य भारतवर्षमें हुने-सिन हा है।

अब विद्यास चिलिए। विद्यास के इंधकारके उदाहरण तो आरत्वयस्य सी अधिक और उत्तम मिलत है। वही पर सेकटी तीच स्थितिके मनुष्योंने अमित यश शास किया है और अपने देशका ही मुख उज्ञ्यल नहीं किया है, किल्लू समस्त समारकों लान पहुंचाया है। नारत्वयसे, जाति-योतिका भेद यदा प्रयत्न है हमलिए यहां तीच जातिके मनुष्य उटने नहीं पाते पर्स्त ह इन्हेंग्ट आदि देशोंसे, यह यात नहीं है। यहां ऐसे सैकडी मनुष्य विज्ञान, साहित्य उद्योग, स्थवसाय इत्यादिसे बहुत यहां प्रतिष्ठा प्राप्त कर गये हैं।



जातीय और व्यक्तिगत स्वावलम्बन ।

करता रहा। धीर सर जान द्वापस्त बुड, जिसने फ्रांसवालों के विरुद्ध पीविअर्सके युद्ध में विजय पाई थी, अपने आरम्मिक जीवनमें लंडनके एक दुर्जीके
यहाँ काम सीखा करता था। परन्तु दर्जियों में समसे प्रसिद्ध निःसंदेह युनाहटेड स्टेट्स अमेरिकाके भूतपूर्व प्रसीवेंट पेंडूषू जानसन हैं, जिनमें विचिन्न
चरित्र-यल और मानसिक शक्ति थी। एक बार जब वे वार्तिगटन नगरमें
अपने एक व्याख्यानमें वर्णन कर रहे थे कि में अपने राजनैतिक जीवनके
झुट्में शहरका हाकिम हुआ था और फिर नियमम्बयस्थाके सभी आंगों में
होकर बहुता चला गया, तब श्रीताओं में एक आवाज आई, कि "दर्जीकी
श्रेणींने उठ हो!" जानसनका स्वमाव था कि वे ऐसी झुटबी लेनेसे झरा
न मानते थे, उल्ला उसवो लामदायक बना देते थे। बन उन्होंने तुर्रत ही
कहा कि, " हाई सज्जद बहुते हैं कि में दर्जी था, रान्तु में हुस वातमें
किचिन भी गई पबहाता, क्यों कि जब में दर्जी था, तो भद्रतामें और
अपने वानानेंग मिसद था, में अपने माहकांमें अपने वायदेंगे कभी न चूकता
था और सर्वय उनमें काम करता था।"

पार्डिनाट चुल्डी, टीफो पर्यत्याहर, रायादि बन्माई थे । भारके अंजनेब आविष्कारके संबंधमें न्यूफोर्मन, बार और स्टीफिन्सनके नाम प्रांमह है। इनमेसे पहला लुहार था, दूसरा गणिनसंबंधी आंजार बनानेवाला था आर तीमरा अजनमें बोचला होवनेवाला था। माइवल फोर्स्ट, जो एक स्ट्रास्व प्रांच सुरुमे जिल्हा बोफनका काम संस्थित रह और बाईस वर्षकी अवस्थानक बता प्रांच बरने रहे, वे अब टार्मानकोंके दिशंमणि है।

्यानि प्राप्तवा उद्यप्ति बजनेवालीका लीजिए । योपिनिसका पिता छव त्राप्ति प्रकानका प्रदा बरना था। येप्पार्टर जर्मनावे एक सिर्-याका नदम था। ही प्रारुक्ष्यदेको एक गिरजवी स्वादियो पर कोई शतका दार स्वाय और एक जिला । प्रारुक्ष वरनवालकी स्ना दस्त बाह्यका दश लाई वी और स्मन स्मका पालक प्राप्त किया था है स्परिस्म एक द्वारद विस्तानका लटका था।

धमापदभवाव पुष्रोच दुर्वल्यक द्वातहासमे विभापवर स्वाति पाह है । इत्रमस समुद्री पुराम हेक और नेस्ट्रसन्तर, विशायम योस्ट्रस्न और



जानीय और व्यक्तिगत स्वावलम्बन ।

भी अभिमान है कि एक मतुत्य, जिसने ऐसी दशासे उसति की है, इस देशके खानदानी रईसोंके साथ समान अधिकारीं सहित बैठनेके योग्य है।"

राजसभाके एक सदस्य मिस्टर विस्टियम जैपसनका जीवन भी आइचर्य-जनक उन्नतिका उदाहरण है। विलियम जैन्सनके निजा, जो एक धैद्य थे, क्षपने जिन ग्यारह यद्योंको छोड़कर मर गये उनमें विलियम जैन्सन सातवाँ पुत्र था। पिताके जीवनकालमें यहै लड़कोंने तो अच्छी शिक्षा प्राप्त कर छी. परन्तु उनकी मृत्यु होनेपा छोटे लड्कोंको स्वावलम्यनके मार्गका आश्रय र्देंदना पड़ा । जब विलियम जैक्सन बारह वर्षका हुआ तव उसका पाटशाला जाना धंद्रकर दिया गया और वह एक जहाजमें नौकर करदिया गया. जिसके बाहरी भागपर संयेरे छ: यजेसे रातके नी यजे तक कठिन परिधम करना पड़ता था। उसका स्वामी थीमार हो गया और वह विलियमको हिसाव-किताबके कमरेमें रखने लगा । यहाँ विलियमको पहलेकी अपेक्षा अधिक अवकाश मिलने लगा । अब उसे पढनेका सुयोग मिल गया । एक प्रसिद्ध भेंगरेजी विश्वकोश उसके हाथ पड्नया और उसने उसकी २६ जिल्हें कुछ तो दिनमें और विशेषकर रातमें पढ टार्टी । उसने फिर निजी स्थापार करना आरम्भ किया। वह मेहननी था, अतएव उसको इस काममें सफलता हुई। अब यह बहुतसे जहाजोंका स्वामी है जो लगमग सब समुद्रोंपर चलते हैं और वह संसारके एमभग सभी देशोंके साथ व्यापार करता है।

हंग्हेंडक धनाट्य मनुष्योंमें आधुनिक दर्शनशासके जन्मदाना येकन, ह्यासंटर, वोईस्ट और रोस्नी इत्यादिके नाम लिये जा सकते हैं। इनमें रोसी प्रसिद्ध यन्त्रकार हो गया है। यदि यह धनाट्य धरानेमें जन्म न लेता, तो कर्ताांचन वह आविष्कारकर्ताओंका शिरोमणि होना । रोसी लुहारके काममे ऐसा प्रवीण था कि एकवार एक कारवांनेक स्वामीने—जिसको उसके धनाद्य हानेका हाल मान्द्रम न था—उससे एक यदे कारवानेका प्रवधकर्ता वननेक तिरु आमह किया था। उसने स्वय जिम देखीफोनका आविष्कार किया, वह हम प्रकारक अन्य येथोंमे निश्चयपूर्वक अधिक अपूर्व है।

लाई द्वाधमका अट्ट परिश्रम लोकप्रसिद्ध है। वे जनसाधारणसर्वधी इसोमें ६० वर्षकी अवस्थास भी अधिक अवस्थानक योग देत रहे। इस अवस्थामे उन्हेंनि कानुन, माहित्य, राजनीति और विज्ञानसंवधी अनेक



दृसरा अध्याय । →>:०:﴿ उद्योगी आविष्कर्ता ।

" सर्वत्र एक अपूर्व युगका हो रहा पचार है, देखो, दिनों दिन बढ़ रहा विज्ञानका विस्तार है। अब तो उठो क्या पह रहे हो ब्यर्ष मोच विचारमें ? मुख दुर, जीना भी कठिन है अम विना संसारमें ॥ "

—मिथिलीशरण गुप्त ।

"निम्नप्रेणीके मतुष्योंने इंग्लंडके लिए आविष्कारसंबंधी जितने कार्य किये हैं उनको निकाल दो और फिर देखों कि केवल उन्होंके समावसे इंग्लंडकी स्थिति कसी हो जाती है।" —आधर्र हल्स ।

" अय संसारका स्वामित्व उद्योग और विज्ञानशास्त्रके हाथ रहेगा । विज्ञानके पण्डित और उद्योगी पुरुप अपनी दानिस्टे सारी डुनियाको पद्मीमूत कर हेंने । "

---इसाल्वान्दी ।

पृथ्वेक देशकी महत्ता उस देशक दिशानधंभीपर बहुत कुछ निभेर है। किमान, उपयोगी पदार्थोंक बनानेवाले, जीजारों और मधीनोंके हुँजाद करनेवाले, पुन्नकींके लेलक, शिल्पकार इत्यादि सभी अपने अपने उपोगिय देशकी उस्ति करने हैं। इसी उपोगिक कारण आज हम पश्चिमी देशोंकी कुला-फला पाने हैं और इसीक अभावसे हमागि दशा एसी शोवनीय हो रही है। जब इस देशों भी उपोगि धन्ये होन थे, नव यह देश भी उपिनके शिलरपर था। लटन और परिमकी महिलाये भी यहोंक-टांकके क्यदोंकी पहनकर यां करनी थी। अकेल बंगालम हो लावो मन्य शिल्प-ट्यानाय करने थे। विक्री से शासनायास्थोंक अनायेहुए पदाये समाग-अन्य विक्रम थे। विक्री से शासनायास्थोंक बनायेहुए पदाये समाग-अन्य कियान्यवान्यका नम्मा है। प्रावेमी शिलपवान्यका नम्मा है। प्रावेमी शिलपवान्यका नम्मा है। इसकी अवस्था इस समय थीटह सी वर्षकी हे, परन्तु हवा और पानीमे निस्तर मुले रहनेप भी इसपर मोरचेका नाम तक नहीं है। भारतकी गृह- निमांग-विवा और चित्रवार्यके बार्चन नम्ने अब भी अङ्गन समझे जाने हैं।



एक सह अनुभवा गानुत्यका कथन है कि कहिये कहे परिश्रममें भी आनन्द्र शिलता है और उन्नांत करनेके साधन भार होते हैं। इंगानवारिक साथ परि-अस बतनेसे सर्वोत्ता शिलती है और परिश्रमको पाइसाल रावसे उत्तम है। क्योंकि उत्तमें उपयोगी पनना विश्वात्यक्षा जाता है, स्वतंत्रताचा भाव आता है और परेष्ट्रके उच्चाम करनेकी आहम पहती है। कर्तास्त्वको रोजमर्ग औत्रार्ग और कृति पीजिय बास करना पहना है। क्यों सरको रोजोंकि साथ स्वत्यात्व परना पहना है। इससे उनकी निर्माशकाति बहुनी है और यह जीवनवाद्यामें अपने पैरीस आप परे होनेक और अपने आपको उन्ना बनानेके पोस्ट हो जाता है। किसी दूसरे पेटीसे सनुष्य इतनी पोस्पता नहीं भार कर सकता।

पहारे अध्यायमें हम अनंब प्रतिष्ठित मनुष्यों आम िष्ण आपे हैं, जिन्होंने अपने उद्योगके द्वारा निस्त श्रेणीये उटकर विद्यान, स्थायार, साहित्य, शिक्ष ह्वायादिं स्थाति पाई है। उनके उद्दाहरणीये मारुस होता है कि नांधी और अपने वारण जो किताएयाँ सामने आजाती हैं वे दुर्जेय नहीं हैं। जिन उपायों और आविष्यारों वे व्हीत्यन के भोरेज जाति पूर्व सालिता किना उपायों और आविष्यारों वे व्हीत्यन अधिकातके लिए निस्तें हेट आयीत किना अध्या स्वाचित्र अधिकातके लिए निस्तें हेट आयीत किना अध्या मनुष्यों आधार मानना चाहिए। इस संवैधमें पूर्व होनोंनि जो कुछ किया है उसके यदि निकाल हो सो पित मारुम होगा कि अस्य मनुष्यों का आवार समन्य काम हुआ है।

आविष्यार-वनां भींक द्वारा समारक वर्ष्ट वर्ष्ट स्ववमाय चलप्रदे हैं।
उनव ्राग समारको आवश्यक पदार्थ और सुर तथा भौगविलासकी चींनें
प्राप्त १८ १ और उनकी प्रतिमा तथा परिश्रमंक कारण मनुष्यज्ञातिका
जी कर अवस्तु सुराम और सुरसम्य हो गया है। हमारा भौजन, हमार वर्ष्व,
हमारे परोक्ता अस्वाय, जीव जो हमार घोम प्रकाशको आवेदने हैं,
परन्तु परीका राव लत है, गैम और विजली जितम सद्धी, गलियों और
वराम प्रकाश होता है रन, जहाज ह-पार्ट जिनम हम क्यार और जलप्त
यात करता है व्योगयान जितम हम पत्रियोही मीति उउने दिसते हैं, व
जीतार जिनम नाना प्रकारकी चींन वनती हैं, जो हमारी आवश्यकताओठी
शत करती है और हमको सुन्य दती हैं—ये सब हमको यहतम सनुष्य तथा



माध्यो माध्ययालमें भी अपने निर्णागीमें विद्यानका दर्शन होता था । अपने वितास महर्गनानेमें पर हुए केचाई भावनेके पेहोंनो हेग्यक उत्तरी हिन्दिया और महर्गनानेमें पर हुए केचाई भावनेके पेहोंनो हेग्यक उत्तरी हिन्दिया और माध्ये अध्ययमाया गीत. पेहा हुआ । अपनी आस्वामाये माध्ये माध्ये कामायामाये माध्ये आस्वामाये अस्वामाये क्यामाये कामाये माध्ये एक माध्ये ह्या स्वामाये कामाये माध्ये एक माध्ये ह्या स्वामाये कामाये माध्ये स्वामाये कामाये कामा

दस पर्यतक यह पंजीको बनाना और उनके विषयमें विचार बरता रहा। उसे आनीदन बरनेके लिए आसाको बहुन थोड़ी मात्रा थी और उसे उस्सा-हिन बरनेके लिए मित्र भी बहुन थोड़े थे। इसके साथ ही साथ यह पहुँ सरहरे पंथे परके अपने पुरुष्यका भरण पोपण परना रहा। यह उँ-चाई मापनेक पंथे पना और वेपना था, गाँगुरी और अन्य पाँग पनाता था, मकानींकी माप परना था, सहके मापना था, नहरींकी सुदाहेंक कामका निरीक्षण करना था; इस सरह जो काम मिल जाना था और निसमें कायदेवी सुरत दिराह हंगी थी पही करने लगा था। अनमें पाटको एक सुयोग्य साथी मिल शाना जिनका माम भैथ्यू पोल्टन था। यह एक पतुर, उद्योग-होल और हुरदर्शी मनुष्य था जिसने भाषके अंजनसे सब तरहके काम हेनेका वीहा उटा लिया था, और हृतिहास अय उन दोनोंकी सफलतावा साथी है।

यहुतमे पतुर भाविष्कार-कर्नाभीने समय समयपर भाषके अंजनमें नहूँ नहूँ दाकियाँ बढ़ाई हैं और तरह-तरहके सुधार करके उन्होंने उसको सय तरहकी चीजें बनानेके योग्य करहिया है । क्लोको चलाना



रितार — तो होत्ये अपने भाषां पिछत् हुआ हेपने हैं — गुष तोर स्थाने हैं, भीर इस बारण बाट, स्ट्रीयत्यम और आवेशस्य स्थाने समुखेंको अपने स्थायहारिक और स्थाप आधिष्वास्थानां तोनेके स्थापी और स्थानिकी स्टूपा इस करनी पदनी है।

भाष बहुतसे भंगारासिः समान आर्थाराहरूने भी दर्शि भवस्यासे बस्ति थी । यह सन् १७१२ ईर्गामें प्रियटनमें पदा हुआ । जनके मातारिता बढ़े बहार है और बह उनके बेस्ट बालवेंमिं शबसे छोडा था । उसने स्कूलमें कभी शिक्षा नहीं पाई; जो वुछ शिक्षा उसे मिछी यह उसने अपने आप मास थी और यह अंत समयतक बड़ी कटिनाईके साथ लिल्पने-पड़बेंके योग्य हुआ। बाल्यकालमें यह एक माईके बड़ी बाम शीलने लगा और जब यह यह बाम सीम खुना, तथ बोस्टनमें रहने खगा । उसने पटींपर एक द्वानक मीचेका शैताना विरायेषा के लिया और उसके उत्तर यह लिखवा दिया "---भाओ, इस रेररानेके बाईके पास आओ-यह दो पैसेमें हजामत बना देता है।" इसरे नाह्योंके बाहक कम हो चले, क्यों कि य जियादा दाम छते थे, अतः द्यानों भी अपनी मजदूरी घटावर इतनी ही बरनी पटी । फिर आवराहरने, को अपने पंचेको चलानेकी कियम था, यह घोषणा करही कि " में एक री पैसेमें भष्टी हजामत बनाता है। " बुछ वर्ष बाद उसने वह सैग्राना छोड़ दिया और यह स्थान स्थानमें घूम-पूमकर पालांका रोजगार करने लगा। उस समयमें इंग्डेण्डवें निवासी लम्बे बार्लीकी टोपी पहना करते ये और इन टीपियांका यनाना नाहुँयोंक ध्यवमायका प्रधान भग था । आर्कराहट टीपियाँ धनानेके लिए इधर उधर पूमकर बाल धरीदने लगा । यह एक सरहका धिजाय भी बनाने छमा, जिससे उसका धंधा खूब चछने छमा; परस्तु इसने-पर भी उसकी आदमनी कंपल इसनी होती थी कि यह अपना निवाह ही कर सकताथा।

पुरु समयमें वालोंकी टोपी पहननेके रिवाजमें परिवर्तन हो गया, अतएव बालोंकी टोपी बनानेवालीपर संबदका पहाट हुट पहा, और आवंताहटने शिसकी रुपि बंदोंकी ओर थी, अपना प्यान मशीन बनानेमें हगाया । उस समय कातनेकी कल बनानेकी बहुत होगोंने चेहायें की थीं, इस लिए हमारे नाहने भी आविष्कारस्थी समुद्रपर औरोंके साथ अपना जहाज चलाना, —



उद्योगी आविष्कर्ता ।

आविष्कार दिया था, तय छोग उसके जपर दृष्ट पड़े थे और उसको छॅक-हारमें निकाल दिया था और बेचारे हार्गीकाने जब पानीसे चलनेवाली कात-नेकी मशीन थनाई थी तब उपद्रवी छोगोंने उसे तोड़ हाला था। अत एव वह नार्टियम नगरको चला गया और वहाँके सेटोंसे उसने आर्थिक सहायताकी प्रार्थना की। एक बार वह असफल हुआ, परन्तु एक दूसरी जगहसे उसे इस हार्तपर महायता मिल गई कि वह अपने आविष्कारसे कमार्थ हुए धनमें उसको भी साही करे। आर्कराइटको अपना काम करनेके लिए एक विशिष्ट अधिकार-पत्र भी मिल गया। पहले पहल नार्टियममें एक हर्द्का मिल बनाया गया, जो घोड़ांमें चलाया जाता या और इस दिनों बाद एक दूसरा बहुन बड़ा मिल झोमफर्टमें बनाया गया, जो पानीके जोरसे चलाया जाता था।

परन्तु यदि आर्कराइटके आगामी परिश्रमका खवाल किया जाय, तो कहना पड़ेगा कि अभी तो उसका परिश्रम शुरू ही हुआ था। उसको अभी तो अपनी मशीनके यहुतमे पुर्जीकी पूर्ति करनी थी । उस मशीनमें वह निरंतर परिवर्तन और सुधार करना रहा, यहाँ तक कि अंतमें यह खुब काम-लायक और लाभदायक वन गई । उसने चिरकाछिक धैर्यपूर्वक परिश्रमसे ही सफलता प्राप्त की। कह वर्षीतक तो निराज्ञा होती रही, रुपया भी बहुत खर्च हुआ और कोई नतीजा न निकला। जब सफलता निश्चय मास्ट्रम होने लगा तय लेक्झरके कारीगर आकंगहरके विशिष्टाधिकार-पत्रपर हम रिंग हुट पटे कि वे उसे फाट टालें। आर्कगहरको लोग कारीगरीका शब कहने लग और एक दिन पुलिस तथा शख्यारी सिपाहियोंकी एक बलवती भेना * उपन देखते लोगोंने आईगइट्यं एवं मिलको नष्ट करदिया । लेक-द्यारके आर्टीमयोने उसक सृतको खरीउनेसे इनकार विया <mark>यद्यपि वह</mark> बाजा-रमें सबसे बटकर था। फिर उन्होंने उसे उसकी मधानोंके प्रयोगके लिए विधिष्टाधिकार न दिया और सबोने मिलकर उसे न्यायालयमें दलिन कर-हना चाहा । सुविचारवान मनुष्योके ना-स्पट करनपर भी आकेराइटका विकि पविकार गडवड करिया गया । स्वायालयमे वरीक्षा हो चुकनेके बाद जब वह एवं सरायवे सामन होकर—जिसमें इसके विरोधी हरते हुए निक्रण स्थाधा तो उसके एक विरोधीने आकंगहरको स्नानके लिए



निर्मित परस्य विरोध है; यस्तु आदित्यावनीक नामके विषयमें वृष्ठ भी निय नहीं है। यह विद्धियम ही या और सन् १५६६ हैं मी वैदा हुआ ।। वृष्ठ होनीक मा है कि उसके पास होई।सी वर्मोद्दारी भी और वृष्ठ होना वहनी हैं कि यह एक निर्धेन विद्यार्थ था और उसके मुस्से ही गरी-शित बहनी हैं कि यह एक निर्धेन विद्यार्थ था और उसके मुस्से ही गरी-शिवा नामना करना पड़ा था। यह सन् १५७८ में भीसिनके माह्म्ट वालि-गर्मे भरती हो गया। उसको भीजन, यख हायादि वालिज्यों ओर ही सेवल थे। किर यह एक दूसरे वालिजमें भरती हुआ और यहाँ देखने विवल एक बी परीक्षा पास ही। यह एमक एक बी परीक्षा पास घी। यह एमक एक बी परीक्षा पास घी। यह एमक एक बी परीक्षा पास घी।

तिम समय छीने मोजा बनानेकी कृष्यका आविष्कार विया उस समय यह एक गिरजेंमें नीवर था। बहा जाता है कि यह एक युपनीपर आमण हो गया, परन्तु उस कुमारीने उसकी कुछ परवा न की। जब छी उस कुमारीके वहीं जाता था, सब यह अपने मोजे युननेमें तथा अपने निष्योंको हुम कामकी शिक्षा देनेमें यहुत जियादा प्यान देनी थी और छीची पातांको न युननी थी। छीचो हुस अपमानका पदा रायाल हुआ और उसने टान दिया कि अब में मोजा युननेकी एक मशीन बनाकेंगा जिससे हाथकी अपेशा अधिक काम होगा और हुम छिए हाथसे मोजा युननेका व्यवसाय लामहीन हो जायगा। तीन पर्यनक यह अपने आविष्कारमें छगा रहा। जब से सफलताकी आशा झलकने छगी, तब यह नीकरी छोदकर मशीनसे मोजा यनानेके व्यवसायमें छग गया। इस कथाका समर्थन कई प्रमाणेंसे होता है।

मोजेकी महीनकी आविष्कारसंबंधी घटनायें चाहे जो रही हों, परन्तु इसमें कुछ संदेह नहीं कि आविष्कारसतांकी यंत्रसंबंधी प्रतिभा यही विलक्षण थी। एक गिरजेक नीकरके लिए जो एक दूसरे प्राममें रहता हो और जिसका जीवन अधिकतर पुस्तकावलोकनमें ही व्यतीत हुआ हो, ऐसी स्हम और पंचीदा पुजोंकी महीन बनाना और उँगलियोंमें सलाहयोंसे सुतके परे डाल्कर उनमें होरा गिरोनेके धीमे और यंगनेवाल द्यामको महीनसे द्यानीकी मुंदर और शीमव्यतिमें एकदम पटट देना वास्तवमें एक आधर्यजनक सफलता थी, जो यंत्रसंबंधी आविष्कारों हे हतिहासमें अद्वितीय कही जा



उद्योगी श्राविष्कर्ता ।

and the second s

चलनेके लिए और पर्टोंके कारीगरींको मोजा युननेकी मधीन धनानेकी और उसमें बाम करनेंबी शिक्षा देनेके विष् अनुरोध किया, सब उसने उसकी दात गुरंत ही रवीकार करावी । यह अपने भाई और कई अन्य कारीगरी महित अपनी मशीनको छेवर चला गया । रोहन नगरमें उसका हार्दिक स्तागन किया गया और उसने एक बहा कारताना सील दिया, जिसमें उसकी भी मधीने निरंतर काम करने कर्ती; परन्तु हुसी समय उस वेचारेकी विपत्तिने किर था पेस । झांसका राजा हेमरी चतुर्थ, जो उसका संरक्षक धना था और जियमे उसको पुरस्कार, सम्मान इत्यादि मिलनेकी भाषा थी, सार दाला गया । इसमे जो पुछ उत्पाद और संरक्षण उसे अवतक मिला था. यह सब जाना रहा । अपने स्वर्धीको प्रवट फरनेके लिए यह राजधानी मेरिसमें पहुँचा, परन्तु यह प्रोटेस्टेंट सम्प्रदायका था तथा विदेशी था, अतुण्य उसकी प्रार्थनाओंपर कुछ भी ध्यान न दिया गया और नाना कष्टोंसे संग आकर पह गौरववान् आविष्कारकर्ता थोड़े ही दिनीमें पेरिसमें पही गरीबी और आपत्ति भुगतते हुए इस संसारमे उट गया ।

छीवा भाई अन्य सात वारीगरींसहित किसी तरह मांससे भागकर शुंग्हेंडमें भागया और सिवाय दो मशीनोंक अपनी सब मशीनोंको भी हो आया। इंग्लैंटमें आकर उसने एक और आदमीके साय-जिसको री ने मशीनसे भोजा युननेका यह काम सिखलाया था-साझा करिवया। पित इन दोनेंबि और धारीगरोंकी महायताये मोजा चुननेका काम शुरू किया और यहत सफलना प्राप्त की। जिस जिल्हें यह कारखाना खोला गया था, उसमें भेट घहन पाली जाती थीं भीर उनसे यहुत अच्छी जन मिल जाती थी। इंग्लंडमें धीरे धीरे इन मदीनोंका रिवाज बढ़ता गया, और अंतमें मदीनांत

भोजे धुनना एक बड़ा भारी स्ववसाय यन गया।

प्रसिद्ध किन्तु हतभाग्य जैकाईका जीवनचरित बड़ी उत्तम रीतीस यत-छाता है कि चतुर मनुष्य-चाहे वे कितनी ही निम्न भ्रेणीके हों-अपनी जातिकी उद्योगशीलतापर यहा प्रभाव टालते हैं। जैकर्टके मातापिता फ्रांस देशके लायोन्स नगरमें रहते थे और यदे निर्धन थे । जैकर्डका पिता हाथसे . वपडा युना करता था । अपनी गरीवीके कारण वह अपने पुत्र जैकडेको शिक्षा न दे सकता था। जब जकई बड़ा हुआ और इस योग्य हुआ कि कुछ धंधा सील सके तर उसडा रिया उसको एक जिल् वीचरेवाछेड यहाँ काम सील-में के लिए भेजने लगा। एक बहै गुमारेनेंने, जो उस जिल्हसातका दिवार दिया करता था, जिल्हेंको हुए गामिल निल्लाला। जेकरेंने बोहे सी समर्थनें येन-विचारों भीर रिव मक्ट की और उसके कहें कार्योंने गुमारोकोंने विक्त कारिया। गुमारेनेने जेकरेंके निजासे नैकरेंको कुछ भीर काम मिललानेका कार्योग निया, जिससे का कमारी विचित्र सालिलांकी करिक उसकि कर-कें। अगए जैकरेंने एक चाह-कैंची बनारेलांकी करिक उसके साथ बहुत हुत बनांक करता था, सुर लिल जैकरेंने हुक सामय बार उसके नोक्सी होड़ दी बारोंक करता था, सुर लिल जैकरेंने हुक समय बार उसके नोक्सी होड़ दी बारोंक करता था, सुर लिल जैकरेंने हुक समय बार उसके नोक्सी होड़

इसी बीचमें बीकमें सातारिताका देहांन हो गया, अतएन कैकमें सजार होका अपने रिवाले दो सामिने स्वरूप कुरमेका प्रधा हुए कर-रिया । यह तीन ही उन सामिने हुए सामिने स्वरूप मान अपने आधिकारियें वह ऐसा द्वापित हुआ कि उसने अपना थया हुए हुए आदि वह सीम्न ही कहाल हो गया । इसके बाद उसने अपना जल जुकाने के छिए सामिने केन दिना और अपना विवास भी कारिया, दिनाने उनके उपर की सी आर हो गया । वह और भी गरीय होगाया और कर्जय गुरू होने के छिए उसने अपनी झीपडी भी केन ही उसने नीकही हैं है केन सम्मान किया, राल्या उसे सफलान वहुँ स्पीतिक लीग समामने से कि बाद आवास किया, राल्या उसे सफलान वहुँ स्पीतिक लीग समामने से कि बाद आवास है। अरमें वह मित सामि एक ससी सनोनाकिन यहाँ भीवत हो गया । उसकी खी हालोब्य सामित है रह गई भी टोपी क्वाफ अपना यह साने सी

बुख वर्षोतक तैकई उन्नति करता रहा भीर अनस उसमें अरहा बुनवेडी मामिलक आदिकार किया। इस मामिकार सिमान श्रीभारी राज्य विश्व रूपये बहा और उस वर्ष बार आयोग्य नगरमें ज्येमी जार हजार मासीनीये का स होने लगा। दूसरी वीषमी तैक्टेबी एक युवसे अरहार प्राप्त भीर उसका काम बुख दिनों तक बन्द रहा। बराधिण वक्त सैनिक हो असा रहता, पान्तु हम अरहाराए उसका इस्ततीला पुत्र मामा वासा भीर वह लगान्य नगरमं अपनी कोई ताम सेरोसा आपान्त स्तीर भाषा। वस्त्र विनोत्तर वह वासी

उद्योगी आविष्कर्ता ।

िए। रहा और अय उसे फिर अपने आविष्यतीका प्यान आया। परन्तु उसके पास इस कामके लिए, रुपया कहाँ था? उसने एक कारीगरिक यहाँ नौकरी करली जैकडे दिनमें अपने मालिकका काम करता या और रातको अपने आविष्यारोंने लगा रहता था। यह समझता था कि कपड़ा तुननेकी कलामें अधिक उसति हो सकती है। एक दिन उसने मालिकसे भी अनायास यह यान कह दी और खेद प्रकट करके यह भी कहा कि " में अपनी गरी-चीके कारण अपने विचारोंको कार्यरूपमें परिणत नहीं करसकता।" सौमा-यवदा उसके द्यालु मालिकने उसकी वार्तोका मूल्य जान लिया और इस कामके लिए उसको रुपया दिया।

तीन महीनमें जैकरेने एक कल बनाई, जिसके द्वारा कठिन और यका देने-वाला परिश्रम जो कारीगरींको अपने हायसे करना पड़ता था, यंत्रोंके द्वारा किया जाने लगा । यह मशीन पेरिमकी एक प्रदर्शिनीमें रक्षी गई और जैकर्डको इसके पुरस्कारमें एक पीनलका पड़क मिला । दूसरे वर्ष लंडनकी सोसायटी आफ आईमने ऐसी मशीन बनानेके लिए पुरस्कार नियत किया जिसमें मछली पकड़नेका जाल और राजुको अहाजपर चड़नेसे रीकनेवाला जाल वन सके । जैकरेको जब यह समाचार मिला, तो उसने नीन सहाहमें ही ऐसी मशी-नका आविष्कार करिया । इससे उसका इनाग विया । उसको रहनेके हिए। मकान दिया गया और नये आविष्कार करनेके लिए उसका बनम नियत करिया गया और नये आविष्कार करनेके लिए उसका बनम नियत करिया गया । यहो रहका देसे तरह तरहकी मशीन देखनेका सज़बस शाह हो।

इसन कुछ सह आजार बनाये और फिर उनवी सहायनासे लक्टीकी
एक घटी बनाइ जो बिलकुल हीन समय दनी थी। एक छोटेसे गिरजेके
लिए उसने दवदनीकी कुछ मनियों बनाइ जो अपन पर्योक्ता हिलाती थी
केर मुद्रियों पुनारियोंकी बनाई जा गरराव सम्बद्धों कुछ सफेत किया
करनी थी। उसने और भी बहु राय बार रस्तान खिलान बनाय। उसने
एक अहुन बनाय बनाइ, जो स्था बनाय र समान पानीसे नरनी थी। बोल बरनी थी, पानी पीनो था आर बोल हो। उसने एक प्राचीन प्रथम बर्गिय घटनाई आधारण वर्मार बनाय स्वत्या जा उसने पर पुरकार सारता और



DOLLARS TANKED

तीसरा अध्याय।

—<⇒••≪⇒—

धैर्यकी महिमा।

" संसारकी समरस्यलीमें घीरता धारण करो । चलतेहुए निज इष्ट पथमें संकटोंसे मत हरो ॥ "

—माथलाशरण गुप्त । "र्धयं या धीरज वीरताका स्रति उत्तम, मृल्यवान् और दुष्प्राप्य संग है ।

भित्र वा धारत वारताका कात करान, मून्यवान, कार दुव्यान्य अग ह । धारज सर्व आनन्त्रींका एवं दास्तियोंका मूल है। आदासे मी, यदि उसके साथ अधीरता हो तो, कदापि युव नहीं मिलता। "—जान रस्किन।

र्मुन्यस्त बीवनचितिोंमं जो धैर्वके अत्यंत महत्त्वपूर्ण उदाहरण मिळते हें उनमेंसे फुटको हम कुम्हारोंके हतिहासमें पाते हैं। हनमेंसे हम तीन सबसे विचित्र विदेशी उदाहरण खेते हैं जो फ्रांसनिवासी घरनाई पिलिसी, जर्मनीनिवासी फ्रेंडिरिक बृटघर और इंग्डेंटिनिवासी जोजिया यज्ञपुटके जीवनचितिोंमं मिळते हैं।

यदाप अधिकान प्राचीन जातियाँ चिकती मिट्टीके माधारण यस्तत यनानेकी कला जानती थीं, परन्तु मिट्टीके यस्तर्नोपर क्षोप या धमकदारलेप चढाना बहुन कमको मान्द्रम था। इट्रन्टियाके प्राचीन निवासी हुस प्रका-रके लेवता अथवा एकदार यस्तन बनानेकी कलामे परिचित ये और उनके यस्तर्नोकि नम्रन अय भी प्राधीन-परार्थ-मध्यक्षीमें मिलते हैं। परन्तु हुस्त है। प्राधीन वाल्येम स्टर्कायाके बस्तन बहुन त्रामेमें आने थे; यहो नक्क कि सम्राध्य आगम्यसं समयमे एवं वस्तत्व मुख्य उसीके यस्त्रय तीलकर सोना इना पटना था। मुश्य लोगोंची यह कला मान्द्रम थी और वे प्रैजी-वित्रा इंग्लिस क्ष्य सन्तर बनाया करने थे। जब मन १९९५ ईस्टीम पियावालींच क्षेत्रीत के लिया नव वे स्टर्ड्स और चीजोंके साथ मुख्य स्थापित बनायेहुए यह वस्त्रन भा लाय और उन्हों देन वस्तर्कोक्ष पिया स्वारं ६ इस्टी हंगा। व प्राचान सिन्यांकि स्था दिया, जहों व क्ष्यत्व हंगे हैं एते इनावित्योक्ष व प्राचान सिन्यांकि स्था दिया, जहों व क्ष्यत्व संस्त व्यव्यां स्था व्यान



धेर्यकी महिमा।

कंसारम अपना टिवाजा हुँद्में एया । उसने चटले शैरवर्षांवी और धाजा की। यहाँ उसनो बाम मिल शया। यह बजी बजी समय निवालतर भूमिनो मापनेवा बाम भी सीया करना था। किर यह उत्तरकी तरफ फल नया और कहें जगह जा-जावर रहा।

the one of the barre

पिन्ति हम प्रवार हम वर्ष यक मारा मारा विस्ता रहा । हमके बाद उसने अपना पियान करित्या, धूमना बंद करिया और धन्दीन मामक सगरमें रहक द्वीरापर पित्रवार्ध और भूमिकी माप करनेवा बाम करने स्था । उसके सीन वक्षे हुए, तिनके पाठन पोपणना भार उसपर आपदा और इसके साम ही उसका मर्च बहुत बद गया । पाकि भर बाम करनेवा भी उसकी आमर्ट्या उसपी कर्मार्थ बहुत बन होती थी। अत्रव्य उसको अपनी द्वारा संभावना जर्मी हो गया । उसने कुछ और अपना बाम करनेवा विचार दिया और हम्मिटण उसने मिहीके बरन्तीपर चित्र बनाने और स्था पटानेके बामक प्यान दिया । परस्तु यह हम बामको बिल्युल न जानता था । अत्रव्य उसको स्था परस्त विस्ता मिहीके बरन्त पनाने हुए न देखा था । अत्रव्य उसको स्था पुरु अपने आप हो सीरास्त पड़ा । उसका वोदे स्वायक न था परस्तु वह सफलतावी आसाम वीरक्ष या और सीरास्तिका इध्य ना । उसके निस्तीम धीरज और अनेत संतीप था।



धेयंकी महिमा ।

संस्तारमें अपना दिवाना हुँदुने एया । उसने पहारे मैसवर्जाकी और यात्रा को। यहाँ उसकी बाम भिर्म गया। यह बक्षी बक्षी समय निवास्त्रर भूमियी मापनेवा याम भी सीमा करना था। पित यह उत्तरभी सरक स्वया सम्बाजीत कहूँ तथार जा-जावत रहा।

पिन्नि हम प्रचार द्रारा वर्ष मक् साम साम वित्रमा रहा । हुसके बार उसमें अपना विवाह कर्मल्या, यूसमा बंद वरदिया और मैनरीम मामक नारमें रहत र हिरापर चित्रदारी। और भूसियी साप करनेका बास करने रमा। उसके सीन बचे हुए, जिनके पाटन पीपणवा भार उसपर आपदा और हमके साथ है। उसका सर्च बहुत बद गया। चालि भर बास वर्षनेका भी उसकी आमर्ता उसकी जरूरमारे पहुत कम होती थी। अत्रम्य उसकी अपनी रच्या रिभावना जर्मी हो गया। उसके बुत के अपनी प्रचार के अपनी प्रचार करनेका करने होती थी। अत्रम्य उसकी ज्याने का करने होता थी। उसके बुत का का करने होता थी। उसके बुत का कानता भीर हम्मलिए उसके मिहीके बरतने प्रचार विलय्ह न जानता था। उसके ब्राय का स्वाम वर्षनेका वा । उसके ब्राय का स्वाम वर्षनेका वा । उसके ब्राय का स्वाम वर्षनेका वा । उसके वा हमका थी। अत्रमक वर्षने वर्पने वर्षने वर्प

स्यावलम्यन ।

मिटीके बरतन बनाने और उनपर छेप करनेकी पिथि जाननेकी आज्ञामें मटकने छगा। पहले तो उसने जिन चीजींका छेप बना हुआ था उनकी केवल अटकलमे

पहल ता उसने द्वार पायाता एवं नया हुआ यो उनका करण करण्या जानना जाता, भी द उक्ते जात-हेन्देल्य उसने तार द्वारणी परिपासीन करना आरंग किए। उसने उन सब पीजों हो—दोनसे उसकी समसमं लेख वन सरमा या——एक्ट्रिके एक सासला तैयार दिया। फिर यह भारास्त गिरिके सरमा या—एक्ट्रिके एक्ट्रिकेट के क्ट्रिकेट के क्ट्रिकेट के प्रदेश उनके प्रमुख प्राच्या और एक्ट्रिकेट स्वाप्त इंग्रम, सासला, समय और पीक्षा मार्ट होने हे दियान युक्त हम का भागा। दियों ऐसे पीक्षाओं के सद्य हो पायें ने नहीं करती। वर्षोदि इवका राष्ट्र परिवास यह होता है कि वर्षोदिल्य भीतन और वाच मोल लेकेट साधम भी तह हो जाते हैं। स्वाप्त विल्योदी स्वी और भीय स्वाप्तीक अपने विलिक्त माराहा वावक करती थी, तो भी वह इस वातार सात्री न चुई कि सिहीके भीर बालन स्वर्णन वार्षे। व्यक्ति वह समसली थी कि ये तोइनेके ही लिए जारिक जाने हिस परान्त करी करते।

सहियों और क्योंतक पेहिमां निरंका परिभाद करना रहा। पहली भद्दीयं अब काम व करने, तब उसने यह और भद्दी पह काहर कराई । उससे उससे और प्रेरंड करने कहीं करने नहीं दें उससे अपेड समान में दिव उसने में हिस्त कराई में उससे प्रदेश केंद्र माना ! उसने वाहर कहें परे करां में हिस्त करां ! उसने वह हैं परे करां में हिस्त करां में उसका नुद्धान करें में एक क्यों में हैंये, में करने ना हुं हैं में व्याप्त में इस मान करने में हैं इस अपने मानेपास के जो मान प्रत्यात हुई ! में वाहर में इस अपने मानेपास करां मानेपास करने प्रत्या हुई करने अपने मानेपास करने मानेपास करने करने मानेपास करने माने मानेपास करने मानेपास करानेपास करने मानेपास करने

करितया था और यह उस कामको छोडना न चाहना था।

धेर्यंकी सहिया।

स्वर्यालकः स्वयं प्रकारं जाते थे और जो उत्तके चरते हो बीमसे भी व्यक्ति हुर था । इचड़े पक जानेपर निवाले गये और यह उत्तें देखने गया; परस्तु उसे किर वास्तकता हुई। यसिर यह निवाल हो गया नी भी परस्त में हुआ; उसने उसी जाह किर मर्थ सिरेसे बाम हुट बरनेवा संकल बरलिया।

वर हो वर्ष नक और परीक्षाय करता रहा, परन्तु कोई संतीपप्रद परि-जाम व तथा। इसी बाचमे भूमि मापनेसे उसे जी मजदी मिली थी चढ राव वर्ष हो गई और यह पन निर्धन हो गया। परन्त उसने व्या सार और भी जी-नोटकर कोशिश करनका संकल्प करांलवा और इस बार उसने सब दुष्य अधिव बतान सोट । उसन तीन सीम भी अधिक टकडे डीडोबी अहापर अज ।हरा और प्रशेषर स्वयं उनव प्रक्रमका फल हेरवेनेकी गया । बार घर तथ वर दखता रहा और एकर भट्टी खोली ग्रह । तीन सी दिक्सीमसे कवल एवं दिवस्का समाला विघला आर यह निकालकर दश किया गया । रहा होनपर समाला कहा हो गया और वह सफद-सफद तथा विक्रताया दिवन लगा । उस १८कस्पर संपद रूप चंद गया भार पालसान उस अपर्व सुन्दर ८८२१य। । इतना कष्ट उठानपर उस वह अवज्य हा सुन्दर मान्द्रम उस लक्ष्य अपनी खाक्षी दिखानक दिल धा हाहा आग उसम कहा 14 " सह भाउम हाता है 14 अब म एक नवा सनव्य लागवा परन उसका मनारव अभी सकल न हुआ वा अभी ता वह उसस अभा दर या । इस चेष्टाम जिसका वह आलाम समझता या. कह सहस्रता हा जानम उसने और सा पारआप की और उसका पुर जनके बार असक-रताय हहें ।



यनाये थे कहूं दिनोंतक आतमें पकनेसे अब विलक्त निकामें होगये थे। यह अपना रूपया तो सब खर्च कर चुका था; परन्तु उधार ले सकता था। उसकी साल अब भी अच्छी थी। उसने एक मिन्नसे अधिक ईंधन और वरतन मोल लेनेके लिए काफी रूपया उधार ले लिया और वह एक बार और परीक्षा करनेके लिए तैयार हो गया। बरतनोंपर नये मसालेका लेप चढ़ाकर उनको भट्टोंमें रख दिया गया और आग फिर सुलगाई गई।

यह परीक्षा अन्तिम थी और सब परीक्षाओंसे अधिक साहसपूर्ण थी। आग दहकने लगी; गर्मी प्रचंद हो गई; परन्तु फिर भी लेप न पिघला । र्टंघन नियटने रुगा । अय आग कैसे जरुं ? यागका हाता रुकडियोंका वना था । ये एकडियों जरु सकती थीं । इनको अवस्य बलिदान करदेना चाहिए: इधरकी दनिया उधर हो जाय, परन्तु महती परीक्षाका काम न विराडने पाय। ये लकडिया भी श्रीचर्याचकर तोड़ ही गई और भट्टामें झाँक दी गई । वे भी जल गई और बुछ न हुआ । लप अभी तक न पिपला । यदि दश मिनट और गर्भा लगे नो शायट पिघल जाय । चाहे सर्यस्य जाता रहे, परन्तु ईंधन वर्ताम अवस्य लाना चाहिए । अब केबल घरका रुकटीका अमयाय और अलमारियो वाकी थी । घरमे चडचडानेका झब्द सनाई दिया । स्त्री और बचे, जो समझत थे कि पेलिसी पागल होगया है, चिलाते रह गये और पैलियान मेज़ोको तोड-नाडकर भट्टामे झीक दिया। परस्त फिर भी लेप न पिप्रता । बना आलमारियो वार्का थी । घरमे लर्काहयोज चटचटानका झटट फिर समाह दिया आलमारियों भा नोटवर भट्टीमें झीव है। गहें । उसकी म्बं। और उच्च घरम निकलकर भारों और पागलों हो तरह नगरम यह चिद्धांत हुए फिरन लगे कि " बचारा पॉलमा बावला हो गया है और हुँधनकेलिए चरका असवाय तक नष्ट किय टालता है '

पूरे एक महानस पेलियान अपन शार्यवस्य वृत्ता भी न उतारा था। वह मृत्यकर विलक्ष कारा हा गया था—यरिश्रम, विल्ता (तरीक्षण और मृत्यक तरा आगया था। यह अणा हो गया था और विलाशोनमुख भाउम होता था। परन्तु श्रमत अन्तम ग्राप्त रहस्य जान लिया। क्योंक ग्रमाका अतिम प्रचढनामे लप पिथल गया। जब साधारण मर्टमल घंडे भ्रष्टीक रट पहजाने-पर उसमेम निकाल गया तक स्वपुर समुद्र सम्बद्धार लग चुटगया था। पुड़ा था, तो भी वसड़ी जर कहामें विद्युवना शास करवेड तिए परोक्षणों ने लाइ वर्ष तह और निर भारता पड़ा। उसने धीरे धीरे लद्मा दहारा इसन कीशास्त्र भीर क्षार कहा कहा कहा सा सा जिया और साराज्याणों वे सुद्धा कहाने कीशास्त्र भीर विद्युवन तह आह कहा लिया। हर पड़ विज्ञाना जे जो वह नवीन सीशा जिस्ती हों। तेन धीर निर्देश स्थान भीर पुले हे दिनकों भीर मिर्टिंग स्थान कीशास्त्र कीशा

और उनने मार्ग पुनास "या कुमरा कहा। इन मोलह बर्गीम यह उस कमारो सीमता हह। उसे धर्म आरो स्वरं दिखा हैने पूर्वे कीर विलाह न में सिमें काम कार्य पहा। यह अब अपने वालगीं के पंत-ते हैं चोल हो गया, जिनसे मामस्थाने यह मार्ग कुराबक सुम्यक्ति विभाव बसने क्या। वास्तु उसने यो गुण किया या व्यक्तिय कहा गोत करके न बैट रहा। यह उहानिकी एक गार्मिय क्यारा व्यक्तिय कहा। व यह स्वरंग विभी नहीं पर्यालगात क्या रम्या था। उसने नव्यू आस इन्देंने किए महनिर्ध बांगों था गेर्मा सम्यक्तिय के अध्यय दिया कि एक प्रीमार विद्यानने उसके स्वरंग कहा है कि, " वह येगा बहा पर्याणा स्वरंग या हि तिमें केषण महनि हो उत्यव कान्यम है।" वार्मान स्वरंगी स्वरंग या हि तिमें केषण महनि हो उत्यव कान्यम है।" वार्मान स्वरंगी स्वरंग सार्ग कार्यों कर स्वरंगन वहां है हि, " वह येगा बहा पर्याणा।

परम्भू पेतिमाँहः कहींहा अभी काम न भाषा था। इस मानवस्य सामक्र विज्ञास वहा और या। जिस मानदायस गता साम था, याद काद समृत्य इसी मानदायस न होता, तो उससे इट देवत जाना था। कासर्थ भारतस इसी मानदायस मानित इस्टा इस जान था। वेतनसा यास्त्रवर

(1)1 सम्प्रतायका या और वह अपन विश्वासको नयहान होस्र उक्त करना था। अनुष्य बसको पक्षकक निध्य सरकाम क्रमणारे। उसके सम

्रतम् सा । अन्यत्र वस्त्रः प्रशास्त्रः । प्रशास ज्ञास्त्रः वस्त्रः प्रशास सात्रे ।वशः १४ तसः ॥१७४१। अनाह दृष्ट एक उ। भी रशसा था, जिस्सा नामा एक हृद्र सा अपर १३॥१

48

बनाइ दुइ एक अपना पर पर पर कार्या विकास कर कार्या विकास कर कार्या कर कार्या कर कार्या कर कार्या कर कार्या कर का

चले आरे और उसके चालन मोंदे चकताव्य कार्यने गये। उन होताँवे उसे राजमें ही एक केंग्रेर कारामारमें से जाकर बंद करदिमा और ये उसके घोतीया चाले जाव अपना जलाने आवेकी चड़ीकी मालिए करने हमें। उसको जला देनेका हुक्म जारी हो गया, परन्तु एक पाणिजाली अमीदारने दमे क्वा लिया—हम लिए नहीं कि उसे पैलिसीसे निरोप मेम या, किन्तु इस लिए कि देकीरून नागामें जो विशास भवन बन रहा या उसका सेपदार चर्चा हमालिके लिए और कोई मिल्यकार न मिल सकता या। इसी लिए वह सुक्त कारिया गया।

अपने दो पुर्वोद्ये महायतामे बरतन बनावेके कामके अतिरिक्त पैशिलीने क्षाने जीवनके अंतिम भागमें पातन पनानेकी कलाके जिन्नमें कई पुस्तेके शिसका इस लिए प्रकारित की कि उनसे देशवाहियोंकी तिक्षा निले और वे उन पुटिपोंते यह मके जो उसने स्वयं की यी। उसने हुनि-विचा, गृह-विभाग-विचा और मार्शतिक इतिहासरर भी उसाई तिसी। बर फाँवत ज्योतिय, कीमिया (स्तापन), बादू इत्यादिका कहर विरोधी या । इस कारम उसके बहुतसे शबु पैदा ही गर्ने, उसे धर्मेच्युत कहका उसकी निहा करने हमें और वह अपने धर्मके कारन किर केंद्र करिएण गया । यदारे बह अप ०५ वर्षेटा दुश या, और अरना एक देर दममें हस्ट्य हुस था, पतनु उसस दृद्ध पहलेके ममान ही बीर था। उसे सुदुक्त अब दिसाया गया; परन्तु उसने अपना धर्म होइना स्वीकार न किया। यह अपने धर्ममें बैना ही रह रहा बैना कि शेरकी मोबमें रहा या। फ्रांन देशके सम्राह हेनरी नुनीय भी कैंद्रवानेमें उसके पाम इस लिए गये कि उसे धर्म परलाने-पर राष्ट्री करें । महाहरे कहा—" भले बादमी, दूवे मेरी माताकी सीर मेरी अवनह ४५ वर्ष मेंना की है। येद है कि मू अपना हठ नहीं छोड़ता है। हम तुमें अब तक क्षमा काते रहे हैं। अब मेरी प्रजा और अन्य होग मुझे दबावे हैं, बत एवं में मबर्र हैं कि तुसे नेरे समुझें के हायमें छोड़ हैं। बारे सब भी तु भरना धर्म न बद्दरेगा तो कल डॉना बला दिया बादगा। " उस अबेद मुद्दे महामाने बचर दिया,--" रावन् , में ईचर (धर्म) के नामरर यान तक देनेंडो तैयार हूं। आपने कई बार कहा है कि हमड़ी नुरायर दया बाती है; पानु अब मुत्रे आपरा दया आती है, क्योंकि आपने ये पाद कहे हैं कि

स्वा । अनव्य इसका वहत्रका लिंग सरकार कमचार उपक वाम ' राहत्रमा वव आरहर कोन्नहा आचान नाली विका, तब उत्म पेक्टमीहा हुई एक आधानी त्रहावा ची, जिसका न्याम एक कुट बा कीत जिसक ' लिंगक्की करी ची । वह देवां । इसकी विकास चले आदि और उसके बरतन माँड़े चकनाच् करिये गये। उन होर्गीने उमे रानमें हो एक कैंपरे कारामारमें हो जाकर बंद करिया और ये उसके काँसीयर चारते जाने अपना जहारे जानेकी घड़ीकी मनीशा करने हमें। उसको जहार देनेका हुक्स जारी हो गया, परना एक शांपिसाली जमींद्रारने उसे बचा लिया—हुस लिए नहीं कि उसे पैलिसीसे निरीय प्रेम मा, किन्त हुस लिए कि दुंकीरून नगरमें जो निमाल भयन बन रहा या उसका सेनदार कर्मी हमानेके लिए और कोई मिल्यकार न मिल सकता था। हुसी लिए वह

मुक्त बरिद्या गया।

अपने हो प्रभोदी सहायतामे बातन बनानेके बामके मतिरिक्त पैतिमीने अपने जीवनके श्रीयम भागमें बातन बनानेकी बागके विषयमें कई पुरुष्कें हिलकर इस हिए प्रकारित की कि उनमें देखवानियोंको विश्वा निष्ठे और वे उन गरियोंने रूप सकें भी उसने स्वयं की भी। उसने कृति-विद्या, गृह-विद्यांग-विद्या और प्राकृतिक कृतिहासपर भी पुल्तकें किसी। वर पालिय क्योतिय, बीमिया (समायन), जारू हत्यादिवा बर्टर दियोधी या। इस काल उसके बहुतमें राष्ट्र देश हो गरे, उसे धर्मश्रत बहबर उमकी लिहा बाबे रने और यह अपने बर्संड बारम चिर बेह बाहिया गया । पत्ति वह अब ७५ वर्षश बुगु मा, और अपना गृह पैर बामें तावा चुका था, पान्तु उसका हृद्य पहलेके मनान ही दीर था। उसे कुपुका अब दिलाया गया: पान्तु उसने अपना धर्म ग्रोहना ह्यांबार म क्रिया। यह अपने भमें बेवा ही दर रहा जैमा कि रेपकी खोजने रहा था। क्रोब देतके सचाह हेनरी मुनीय भी भेदापानेमें उसके पाम इस लिए गये कि उसे धर्म बदलाने-पर राजी करें। सहारने करा-- भले खादमी, दूरे मेरी माताको और मेरी अवन्य ४५ वर्ष सेदा की है। सेद है कि नू अपना हठ नहीं छोड़ना है। इस तुर्छ अब तक समा बरते रहे हैं। अब मेरी मजा और अन्य लोगे मुझे द्याते है, अप एवं में मजरूर हैं कि तुसे मेरे शतुओं हे हायमें छोड़ हूँ। यदि अब भी नु अपरा यमें व बहरेगा नी बल जीना जला दिया जायता । " उस अजेव . इरे अल्पाने रक्तर रिपा,--- शहरू . भे ईश्वर (धर्म) के नामपर दात तह दर्भेंदी नियात है अपन बर्द बात करा है कि हमदी तुम्पर दया काता है. पाल अब भाग आपस दया बार्ला है, क्योंकि बादने ये दान्य कहें हैं कि

स्थायसम्बन् ।

भी मजबूर हूँ । 'सामन्, ये राजाकेमे शब्द नहीं हैं। इन शब्दोंका प्रयोग भार भार वे लोग--जो भारको मजबूर करते हैं--मेरे कपर नहीं करसकते। क्योंकि में जानता हैं कि मरते किय तरह है। " पैटिमीने वास्तवमें कुछ काल पाँछे अपने धर्मके लिए प्राण स्योजावर काहिये, परन्तु वह जलाया महीं गया । यह लगभग मुक वर्ष तक केंद्र रहकर केंद्रवानेमें ही भर गया । वहींपर एक ऐसे वीवनका शांतिपूर्वक अंत हो गया जो अपने अवक परिश्रम, श्रमाधारण सहनशीलमा, भटल मत्यशीलना और भन्य दृष्णाच्य सहलोंके-लिए विल्यान था ।

चीनीके बरतनीका भाविण्डारकनी जान फ्रहरिफ यूटघरका जीवन पेक्षितीके जीवनमें सर्थ्या मिश्र है । बृटपरका जम्म सन् १८८५ इंस्तीमें हुआ या । वह १२ वर्षकी अवस्थामें बर्लिन नगरमें एक अतारके यहाँ मीकर हो गया या । उसे गुरूसे ही रमायन-विधाश बडा शीढ या । कई वर्ष बाद यूर-धाने यह नवर उड़ा दी कि मैंने स्मायनका अनुसंधान करिनवा और उसके

हारा सोना भी वना लिया है। उसने कियी न कियी चाहाकीसे अपने साहित करें मामने ऐसा ही काहिसाया और उसके मालिक और अन्य दर्शकींकी विशास हो गया कि बुट्याने सचगुच ठाँबेका सीना बना दिया। दिर तो यह सबर चारों भोर फैल गई भीर उस अक्षत सोबा बनादेशारेकी देलते हैं लिए बुबान है मामने होगोंदे छड़े छ हमने हमें । राजाने भी उसकी

देवाने और उससे बार्ने करनेकी इच्छा यका की । जब मिरायांक सम्राद फ्रेड-हिक्क प्रथमको सोनेका वह दक्का दिख्यवाया गया, जो ब्रायस्थ बनाया हथा बहा जाना या. नव दसहा बेहद मोना पानदी वर्धा नाट सरी--वर्षेटि उसके देशम उस समय रुपेकी बड़ी जमरून थी-कि उसन प्रवरको शहर रुसहर वह मर्गात्त इत्रह क्षत्र माना बनानका सक्त्य कर्मक्या । परन्त पट-साक्षा इस प्रतक्षा शका हा सई भीत जसका यह सा सब हुआ कि सी। हर्स । प्रथम हम्स्रिक वर राज्ञां सामाका सम्बद्ध संस्थाना नाम

म । अ अत्यस्त (प्रश्नेका कारम प्रदेशका सम्मान प्रथमम्

मा १ - ६१६१ १५ द्वा विक्ता दी आग्राम्यदा स्वयं उस समय म्यावा



दिकल भागा और तीन दिन तक मात्रा करके आहित्या देशमें पहुँच गया और वाँर उसने कपने भागको मुश्लिन सम्मा । पत्न क्षानास्थ्य नीम्बर संस्था गीत्रा किये वक्षे मार्थ । वे उसका पता सम्मा स्थानी वहाँ आपये कहीं वह देशमा की उसने पत्र के गये। इस बार उसकी नृत्य की की है भी ती कियो की गई भीर कुछ दिन बाद कर एक किलों में भी दिन प्राप्त की नारे की है भी ती किया किया है मार्थ की सम्मा किया किया वहां की ती के गुरुपांस्थी है मार्थ की सम्मा किया किया की वहां है और ती गुरुपांस्थी सेवाई निशासियों का पिछल बेगन चुकाना है। राजा उसके पास क्ष्य कार्या भीर कुछ होकर बोला, "असर तु हुनी बक्त सोवा बनाया मार्थ कार्या भीर कुछ होकर बोला, "असर तु हुनी बक्त सोवा बनाया मार्थ कुछ होक की स्थापित करका हरणा करने हमी बक्त सोवा बनाया।

बनों हो गये, हासारे सोना व बवाण, परन्तु हमको पौर्माको साम व दी गर्बे। उसारे में नीर्क्स मोना बनारें में अधिपुर माइलाएं अनुस्थान करात था, अर्थाप वह पीती मिहिक वर्षन बनारेकेटल देश, दुना था। चीतके कुछ बरान पुर्वमाण्यासे चीतनो कार्य थे, जो तीक्सों बनारेंगे भी अर्थित मोनें में दिस है। दूसपाल प्यान इस बोर बाहराने कार्यानि क्या, जो त्यने वहा दिहान् भीर कीराह था। उसने बुस्यये—मिले कर थी गौर्मिहा इस हमा था—बहा—"बहितुम मोना नहीं बना सकते तो पुरु भीरीहा इस हमा था—बहा—"वहितुम मोना नहीं बना सकते तो पुरु

ब्हायाने उनकी बात मान की और कह दिन तान जीता बारोमें स्था स्था । इन्हा दिन हो गये, बरण्यु उनका सम्बद्धीयम निपान हुआ। निहान परिता बनावेकेलियु उनके बात बुठ साम विही स्था, जिसनो कह उस सर्गात कम तथा। उनके देखा कि वह स्थि मंदिनों स्था नामने केलि कर जाती है, महाना भाकत नहीं क्यानी भीर रीके पिताय और सब बन्मों संसदित समार हो जाती है। उनके भाकस्थान लाव्यंत्रीको सन् स्थान कार्यना, और वह उसक बनना बनावर उन्हा मानेक बहुका

eren groze kitani z (E. karor ministe ere ar retai milita, gairon sesa gar ik ospaste katarin estas (r. 11.11) 126 et gar non est au (e.kr. a. 11.01) ippara non (e. 11.11) et gar von gg. 200 sesa eren ar genest sin era di) उन दिनों मूरोपियन देवोंमें रूप्ये रूप्ये यनावटी बालोंकी टोपी पहनदेका रिवाज था। सन् १७०७ हैस्सीमें एक बार युट्यरको अपनी बालदार टोपी अधिक मारी मालूम हुई। उसने नीकरसे हसका कारण पूछा। उसने उत्तर दिया कि, "हमका कारण यह पौडर है, जो बालोंमें रूपाया जाता रहा है।" यह पौडर एक मकारकी सफेद सिदीस बनाया जाता था। यूट्यरने सीप्र ही अपना विचार दीदाया। उसने सोवा कि कहाचित् यह वही मिद्दी ही जिसकी मैं रोजमें हैं। यूट्यरने उसकी परीक्षा की भीर उसका अनुमान डीक जतार।

इस पातका माल्य हो जाना पारस पायके माल्य होनेसे भी कहीं जियादा महण्यका था। वयाँकि इससे हमारे पहुत काम निकलते हैं। अबहु- धर सन् १००७ में उसने पीनीका पहला पातन पनाकर सम्राद आगस्त्रको दिलाया। ये उसे देश कर बहे सुन्न हुए और यूट्याको उसके हस आदि-क्कारिय पुर्तिक लिए सहायता देनेको सैयार हो गये। यूट्याने एक पनुर कारितारको पुलवाकर पीनीके पातन बम्ने सफलतापूर्व काना शुस्क कर कारियारको प्रत्यक पीनीके पातन बम्ने सफलतापूर्व वाना शुस्क कर किया अब अब स्वायनको सर्वया छोड़कर पीनीके बरतन बनाने शास उठा लिया और अपने कारस्तिके हार पर यह लिखना दिया:—" सर्व मालिसान् रूच्याने, जो महान् विभाता है, एक मुवर्गकार (मुनार) को जुम्मकार (मुन्हार) बना दिया है।"

अब भी पृट्यरकी बड़ी चौकसी की जाती भी, क्योंकि यह भय या कि सायद यह अपने रहस्वको दूसरोंके सामने मकात कर दे, अथवा स्वयं चम्पत हो जाय । जये कारसाने और महियाँ जो उसके छिए बनाई गई भीं, उन पर रात दिन श्रीजोंटा पहरा रहता या और छः उधपदाधिकारी उसकी देख माहके लिए उधारदाता बना दिये गये थे।

बृद्धारको भीर परीक्षाओं में-ची नहूँ भटियों में की गई थीं-चड़ी सफलता प्राप्त हुई और जो पीनीके बरतन उसने बनावे उनका बहुत मूल्य मिलने लगा। भतण्य भय एक राजकीय बारखाना स्थापित करनेका म्यस्त किया गया। हम बानकी सखाइने घोषणा कर ही और कारखाने में काम करनेके किए आजमा बल्डाये। वृष्यर बारखानेक प्रवेषकर्ती बनाया गया। परन्तु उसक जया समाइन भयने हो बर्मकारी नियन कर दिये और हम सरह बुट-

स्यायसम्बत् ।

धर हेत्री ही बना रहा। वन वैभित्व नतार्थी कारवारा बनाया वादे करा, तब दूसरावे देशदवर्थ वर्दातक सैनिव के सर्थ। काम समाग्र होने पर करा, यह सामके तामें में बंद का दिया वाता था। इन सब बामेंने वसे बग़ दुम्ब हुआ भीर वसने समारही बंधन कम कर देनेके विषयों करने कार यह भित्र । इन पर सो बहे दी करणाजनक थे। इक परमें करने किया वि भें बहुने भाविष्यारगेंग्री बनेशा कारक कर दिस्सर्जेता, यदि ग्रुगे रणांच्या दे दी जार ! इन विद्विते किया राजा बहुरा बन गया। बहु रुपया हुने कारे मीर

भनुतह स्थाने में निया था। राज्यु रवर्णका देवेशाला ज था। इद न्यामधे भगता राम सम्बत्ता था। इस ताइ वह बीती तुम सामवाक हो साम करता राम, वाज्यु राज्यु के पार पूर्ण पद गया। वह संपारते और अपने अपने तो साम पार्थ के प्राच्यु के सामवान की साम प्राच्यु के सामवान की सामवान की

करता ही बचारित पहुँ पर इसके द्वारा बड़ी आगि शाम होती है शीह पहाँके चोतीके परतन निःमीटर गरीलम होते हैं।

भेतनी वृंभवार झोलिया धंलयुक्तमा जीवन पैनिया भवा प्रायक विवास क्या विवास और भविक स्वात है। यह भयो मुगमे उपाप गुममे था। भारत्ववी स्वातिकृत स्वात स्वात है। यह भयो मुगमे उपाप गुममे था। भारत्ववी स्वातिकृत स्वात स्वाति क्षामे व्याप गुममे था। उस समय भी हॅल्डमें यापि बहुता बुग्या थे, पानु ये बहुत ही महे बरान बनाते थे। भारत्व वहां वर्षो वहां वर्षो वर्षो भारते थे। भारत्व हें वर्षो मिनिके तेने बतान न वह मुके। वर्षो प्रायमि अति थे। भारत्व हें वर्षो मिनिके तेने बतान न वह मुके। वर्षामे यापि वर्षो प्रायम भी सुरायनि उन्या हाम न वह मुके। वर्षामे मिनिके तेने वर्षो है वे स्पेद्र न थे हिन्तु भीने वंशवे थे। या वर्षामुक्त प्रायम वर्षो प्रायम

स्याचलम्यन ।

गया मा नहीं बहुत करके उसकी नियुक्ताक कारक हुए। उसने सेगा कि मैं बीता बढ़वाद और उसेगी कारिया नहीं दे रह रह मार्ट सिन्दे से से में हैं है सा बढ़वाद और उसेगी कारिया नहीं दे रह रह मार्ट सिन्दे से में दि हुएल हों और जो उसका मयोग महिमीती जातवा हो; परना बचा में भी हिमी किमी नाइका हो सकता हैं, भीर क्या में अधिक गीरवात्र हो सकता हैं। इस विचारने उसके सालकर्स सकताथी सच्चा ही और वह अपने जिसकें नियमों और गुरू सहस्वीरत दिवाद करने ख्या। "

जब बैजलुड अपने माईके साथ काम सीख लुका, तब वह एक और कारीगरके साथ साझी हो गया और चाड्के दन्ने, सन्दक और धरमें काम आनेवाछी अन्य घीर्जीका छीटाया स्वापार करने छवा । फिर उसने एक और आदमीसे साझा कर लिया भीर मामूली चीजें बनाता रहा; परन्तु अवतक उसने सन् १७५९ ईस्वीमें अपना न्यारा ब्यापार न जरू किया, वबतक उसने बहुत कम उद्यति की । अपने व्यापारमें उसने बद्धा परिश्रम किया । वह नई नई चीनें बनाने लगा और धीरे धीरे उसने अपने व्यापारकी अच्छी उद्यति कर ही । उसने अपना ध्यान विशेषकर ऐसे बरतनीके बनानेमें हागाया जैमें उस समय स्टैफईशरमें बना करते थे; साथ ही उसने उनकी शूबस्रती रंग, समक और सजबूरीमें और भी उद्यति करनी खाडी । इस कामकी अस्टी तरह समझनेपर उसने स्मायनशास्त्रका अध्ययन आरम्भ किया और तरह तरहकी धातुओंको गलाकर प्रशाही करनेके लिए जिस पदार्थका उप-योग होता है उसपर, बरतनीपर काथ जैसी समक लानेके लिए जो तरह नरहर्दा ओप चढाई जानी है उमपर, और तरह नरहकी मिदियोंपर सैक्टो प्रांताय करें देवी । उसकी निरीक्षण-शक्ति वही तेत थी । उसके हाय एक मिट्टीका वर्तन लग गया। उसमें मिलिका नामक चक्रमककी मिटी मिला हुई था । उसपर प्रयोग करके देखनेसे सालूम हुआ कि यह मिट्टा बाले वाले रेगाई। होती है, परन्तु तंत्र औच लगनेसे सफेद हो जाती है। इस बात पर उसने सब जिलार हिया । उसे विश्वास ही गर्या कि बर तन बनानम में तिम लार मिहाको काममे माता है यदि उसमें चक्रमक मिलाइ तात्र तो उसक वस्त्रन गर्नेट हो जायेंग और यदि इस मिछ सिहीके बरनन पदकर उन पर काल सरायां समकतार जिला नदाई जावे तो वे बरनम समहारक्षणाह बहुत वर्षिया नमने वन आयेंगे ।

यैज्यहको बुछ समयतक अपनी महियोंके कारण पहा कष्ट उठाना परा; रान्यु यह कष्ट पेलिसीके कप्टसे बहुत कम था। तो भी उसने अपनी कठिना-ह्योंका उसी तरह सामना किया जिस तरह पैलिसीने किया था। बारबार परिशाय करनेमें और अटल-अंदिंग धैर्ष रखतेमें उसने भी हद कर दी। उसने पहले पहल रसीटुंके बामके लिए धीनीके बरतन बनानेकी जो चेटाप की उनमें हमातार असफलतायें हुई। महीनोंका परिश्रम बहुधा एक दिनमें नष्ट हो जाता था। बहुतमी प्रीक्षापें करनेके माद, जिनले उसका पहुत समय, राया और परिधम यह हुआ, उसे धैसी पाहिए बैसी जिलाका पता समा। दरतन दनावेके शिल्पनी उद्यत पनानेकी उसे धन हो गई और इससे उसने एक क्षणभर भी उपेक्षा न की । जब यह करिनाहपींकी दूर बरके धनी हो गया, सब भी अपने तिल्पमें नियुगता मास करता रहा । उसके उदाहरणका प्रभाव सर्वंत्र फेल गया, उस जिले भरके होगोंमें कार्य-क्याहताका संचार हो राचा, और भेररेजी स्वयमायकी एक बडी शासा दड नीय पर स्थापित हो गई । उसका रूप्य सदैव सर्वोध उत्तमना पर रहता था और यह बदा करता या कि, " किसी चीजको सराव बनानेसे पही अच्छा है कि वह दिलकुल ही न सनाई आए।"

बहुतमें श्रेष्ठ और सामितार्ला महामाँने वैज्ञुडको हार्दिक सहायता हो। सच्चे दिल्से काम बरनेवालेको महायकों और उत्साहदातामाँकी कमी नहीं रहती। उसने वानी वार्टटके टिल्ल क्ष्मोर्ट्स घतना बचाये जो इंस्लेंडमें बने हुए सबसे पहले वाजकीय बतन ये और इससे यह 'राजकीय हैमकार ' बना दिया गया। उसे चीर्जिक बहिया बातन नकर कानेके लिए दिये गये श्रीह हम काममें उसको प्रताननीय मफलता हुई। उसने बहे बहे प्राचीन और हम काममें उसको प्रताननीय मफलता हुई।

बेबबुक्ने स्मापनसास पुरातस्य और विश्वविद्यामें भी सहायना हो। उसने वर्धक्य भेन मामक विश्ववारको हुँद् निकाला और उसनी चित्रवृत्ताकताका उपयोग अपने वातर्जोके काममें किया। इसीनी सहायनामें उसने सर्वाधिय उसाम बातन बनायें और उनके हारा भाषीन विश्वविद्याको सर्वमाखारानों ऐसाया। उसने सावधानीये प्रयान व अध्ययन काके यह पता हागा दिया कि इर्ट्यायां आयोगीनवासी मिही और चीनीके बातनों पर और उस्लेके

स्यावसम्बन् ।

समान कथ्य चीजों पर किय नाह नियमारी किया करने थे । हम कलाई बीचमें कोग दिवजुरू सूच गये थे। उसने हिमानमंत्री क्षेत्र कारिक्या कार्ड क्यानि माह थे। यह मार्डनिनेट हिनाका बारा गोरक था। उसके प्रयमने ही एक नहर बनवाई गई। उनने अपने दिलेंगे एक अपने मुक्क बनाई। उसने भीर भी चेहुगांदे काम किये जिनमें उनाई। क्यानि युन्न ही बहु गई। उसके स्थानित किये हुए कारसादे देनवडें निल् मुरगढे जाय मारे देनांकि जमिद्ध प्रमित्र सनुत्य कार्य करां।

ही गिरी हुई दशामें थी इंग्लंडकी एक प्रधान कला हो गई। बैजवुडके सम-बके पहले वहाँ इसरे देशोसे बरतन आने थे, परंतु अब इसके विररीत वहाँके बने हुए बरतन अन्य देशोंको जाने हैं और बहुत जिथादा महसूख देकर भी वे निदेशोंमें घड़ाधड़ विकते हैं। वैजनुडके समयमें ही कई हजार आदमी चरतन बनानेका काम करने छगे थे। इस काममें वचारि उस समय बहुत उन्नाते ही गई थी, तो भी बैजवुडका मत या कि यह जिस्र अभी बाल्याव-स्यामें ही है और जो उन्नति मैंने की है वह बहुत थोड़ी है । कारीगरींके निरम्तर परिश्रमसे, उनकी बुद्धिमत्तामें और इस देशकी प्राकृतिक सुगमनाओं तथा राजकीय महत्त्रमे इस तिल्पकी बहुत कुछ उर्धात हो सकती है । इस समयमें अब तक जो उन्नति हो चुकी है वह इस मतका समर्थंत करती है। सन् १८५२ ईस्वीमें इंग्लेंडमें जो बरतन वहीं के दिवासियों के कामके लिए धनाये गये उनके अनिरिक्त स्मामा एक करोड़ बरतन विदेशोंको गये ! केवल यही बान नहीं है कि इंग्लैंडमें बरतन बहुन बनने रूगे हैं और उनका मृत्य बहुत होता है किन्तु उम देशके बुम्हारोंकी दशा भी सुधर गई है। जिस जिलेम बैजवृहने अपना काम गुरू किया था वहाँ के छोगा अर्थसभ्य थे । ये निधंत और अशिक्षित थे और उनकी संत्या कम थी । जब वैज्युदका काम क्षम गया तब वहाँ पहले जितनी आवादी थी उससे तिगुने मनुष्योंके लिए भरती मजदूरीका काम निकल आया; और उनकी संसारिक उन्नतिके साथ साय मानयिक तथा नैतिक उन्नति भी अच्छी होने खरी।

ऐसे पुरुर्वों हो सन्य संयारकें ' औद्योगिक चीर ' कहनेमें कुछ अयुक्ति न होगी । इनके लिए यह विशेषण सर्वथा उक्तिन है । आपत्तियों और करिनान

मगंड उपोग और धाप्रह ।

इपोंके समयमें को संपोरपूर्व कामनिर्भागा और उपित उरेरपोंडी पूर्तिके लिए शीर्य और पैर्व दियायने हैं ये उन जम और स्थानको सेनाके निरातियोंने बम नहीं होने जो सभे बारदुर होने हैं और संपारमें अपूर्व कामायायके उदाहरण होए जाने हैं।

अध्याय चीया । ->>>>> ५((((-सर्वेड स्टोन र्वत सहर ।

"शंक्य ऐस सामने पदमें वाजी मामतमा (हाय, धीरण पर्वे एमें किएल साहम समें गाय। भागमानिया होतर भी सूचमा करना मात्र सीह, सामी विषय-सामनाओं क्षेत्रण मात्र सीहीण करना

-रामर्यातु ।

"अम्बान् परि हो बदना साहिए का उद्योगी है। प्रदोगी शहुन प्रापेक प्रवान करना समाप्ता है। नगद अपूर्णिय क्याना है। इस करणिहाँ के सन्दर्भ करने ही कांग्रिकामी क्याने हैं। बनाने हाथने बीवड़ी हैं है अने हुई इस्ती है। उद्योगी पार जनने प्रवास करने सरमाय प्राप्ता हुआ करन संस्कृत हैं। असावक स्थानम प्राप्ता करने क्यान क्याने सहस्त हुआ

-रायनाः ।

e galande de la companya de la comp La companya de la co

स्यायसम्यन ।

हैं। यह बात सदासे चछी आई है कि मनुष्य इत्तार्श्वक अपने छाम करनेमें ही अपना करवान कर सकता है, और ये ही छोग सबसे अधिक सफरना प्राप्त करते हैं जो सबसे अधिक दह बने रहते हैं और सब्दे इत्यमें बाम करनेमें सबसे बड़े दहने हैं।

सवन वह रहा है।

श्रीम बहा करते हैं कि वकरीर अंधी होती है; पाना सच तो मों है कि
तकरीर इतनी अंधी नहीं है जितने मानुष्य । जिन होगोंडो बीवनका कुछ
अनुष्य है वे जानने हैं कि जिस्स ताह इसा और कहाँ अपने प्राह्मिंड पासी
अनुष्य है वे जानने हैं कि जिस्स ताह इसा और कहाँ अपने प्राह्मिंड पासी
स्वता हैं उसी तहत करतीर भी उपयोग मुन्योंका साथ देनी है। वहेंने यहे
हामीम भी मनमदारी, प्यावनीकता, वसीग, आबह हापारि साधारण गुण्य
भी पास उपयोगी लिख हुए हैं। बहुतमें कामीम मनिवाडी आवश्यका भी
सी हों होंगे, परन्य वु यह में निवासाती मनुष्य भी हत साधारण गुण्येंने
काम क्षेत्रा हुए। वहीं सामाणे । हुछ मनुष्य मो यह भी वहीं मानने कि प्रतिमा
कोई विकारण बहु है। एक मिनुस अपनारक्का क्यन है कि उम्लेग कानेसी राणि हो गिलमा है।

मान्य वैज्ञानिक स्मृत्यकी वृद्धि वही विष्यक थी, हो भी बन होगीं है जन्में प्राप्त करावे स्मृत क्ष्मुनं मान्य हाम हाई हिन्ते ? " तो उन्होंने नम्मृतामं उस्तर विद्या है स्मृत करावे हिन्दे ? " तो उन्होंने नम्मृतामं उस्तर दिया, " दन वर भीत हिन्द मजार वर्णनं हो थी। इस नम्मृत्य होना है भीर वस नम्मृत्य होना है आर वस नम्मृत्य होना है अप वस्त्र करावे हैं अप वस्त्र करावे हों करावे वस्त्र करावे वस्त्र करावे वस्त्र करावे वस्त्र करावे वस्त्र करावे हों स्त्र करावे वस्त्र क

क्वल उत्थात और आजहके होता यम अनुस कार्य हुए है कि बहुत्तम नामी नामी अनुकारक हुए काल म सहद हो गया है कि वार्तना कोई कि अस सम है। वास्त्र विद्यान वास्त्रेरका सन है कि वार्तनामाली अनुवादी आर सरदार सनुवादित बहुत हो बोहा औरत होता है। वैक्षरिया कहा करता

अखंड उद्योग और **आ**प्रह I

या कि सभी मनुष्य कवि आर पका हो सकते हैं। रोनेव्ह्सका कथन है कि
प्रायेक मनुष्य पिप्रकार और मृतिंकार हो सकता है। प्रसिद्ध दार्यानिक छोक,
हैछर्पाटिअस, और डिडीरोटका मत है कि सब मनुष्यों में प्रतिभाशाङी पननेकी
एक सी शांक भीगद है और यदि बुछ मनुष्य अपनी मानसिक शक्तियोंको
काममें छावर किसी कार्यको कर सकते हैं तो कोई कारण नहीं है कि और
छोग वैस ही सुयोग और साधन पाकर उस कार्यको न कर सक । यदापि यह
सप है कि परिधमसे अनुत अनुत कार्य हुए है और यदे यदे प्रतिभाशाङी
मनुष्योंने अहुट परिश्म किया है, तो भी यह स्पष्ट है कि मीटिक मानसिक
शांक और उत्तम भागोंक दिना चाहे कितना ही परिश्म कितनी ही उचित
रीतिसे क्यों न किया जाय, तो भी नुष्टसीदास, वराह्मिहिर, वाग्मट
अपया सानस्तेनका प्रारुमोंव नहीं हो सकता।

संसारके महापुरुपोंने बहुधा यह बहा है कि हमने प्रतिभासे नहीं, किना निरन्तर परिधम करनेसे सफलता प्राप्त की है। महारमाओंके जीवनचरित देखनेसं भी हमको यही माल्डम होता है कि मुप्रसिद्ध आविष्कारकतांओं, शिल्यारी, विचारवानी, और सब प्रकारके कार्यकर्ताओंकी पहुत करके अट्टर परिधान करने और बाममें निरन्तर छंगे रहनेसे ही सफलता मास हुई है। हन महाप्रमाओन सब चीजोंको यहाँतक कि समयको भी सुवर्णके समान बह-मान समझा था । एवं महायाचा पंचन है कि संपालना प्राप्त एरनेया गुप्त रहरू अपन राजयपर अधिकार माप्त करना है । और यह अधिकार निरन्तर लग रहन ५% अभ्ययन बरनम्प प्राप्त होता है । यही बारण है कि जिन लालन समारक सबस् अधिक हरायल मचाह है उनमें प्रतिभावा माणा । युर्ग हरू समर्था प्रतिभा कहा सर्था हतनी न थी जितनी कि उनमें के एक १ १३° गण्यमा आरे अट" पारधक बरनेव (२० था) उसके स्वाका-विव क 🔒 न न थे जिल्ला वि यं अपन बामम महन्त्रव साथ जनस्तर ंग रहत . ाव विधान अपने खंडमान पान्न शायाबाह सहयव विष-प्रमावत पाचि अपसाम । इसमें अहा पाछम बरनवा गुण नहा है। जारनका राहम एम वीरामान मन्त्याया. जी जम वर बाम नहीं वर सकत्, जान्यमः आर महरणमी मन्त्य भी बादी ल जात है । इटली भाषादी जुद बराउर र उथका आशय यह है कि जो चीर चार परन्तु निरन्तर बला करते

स्यापलम्पन ।

है वे बहुत भागे वह जाते हैं । संस्कृतमें भी ऐना ही वयन है-"दार्तर्प्रयाः वातिः पन्याः।"

पानम् याद स्वासं कि मार्थिसम् उपति वीर धोर होती है। वह यह प्रकार् दूरत हो साह मही हो जाते । कमारी उपनि पार धार धेर के हो तो हमें उत्पार मार्थाच करना चारिंग। तक सामायका क्षम है कि जो लोग प्रमोक्ता करना जातने हैं, वे सामायका है हम सम्माक स्वासन है। कहानकी प्रमाक्त करना के प्रकार के सामायका प्रमान करना जाता को प्रमुख्या स्वास प्रमास उपनी प्रदेश है में हम प्रमुख्य प्रमान करना जाता को प्रमुख्या स्वास हमारा आपन्य पर है कि प्राप्त करना यह राज्यकी आप समय प्राप्तना स्वासन्त्रम

जो अनुत्य हैचा कुशीये काम करने हैं व भीत्रक बाघ बनीआ रूप सकते हैं। बाम करनेरु किए चित्त हो समझतीड़ी बहुत आवश्यकता है। हमय बड़ी सहारिक्त आर्थित हो हम स्वतंत्रे किए जिस बहुतर्गहेंची आयसकता होती है उस सुत्य दहा प्रथमित और परिस्मान ही पास होती है। इस होनो वातोंको सफलता और सुप्तकी जान समझना चाहिए । जीवनमें सबसे अधिक भानन्द पायद उसी समय मिलता है जब हम सफाईके साथ उत्तम रीतिसे और दी रूगा कर कोई फाम करते हैं ।

विरोप कर उन होनोंको जो सार्वजनिक उपकारमं हमे हुए हैं पहुत सम-यतक और धीरतासहित काम करना पड़ता है। उनको तुरंत ही फल न मिलनेसे यहुधा निरुत्साह सा हो जाता है। ऐसे मनुष्य कम हैं जो अपने कार्य अध्या विचारके फलको जीवनमें ही देग हते हैं। स्वामी द्यानन्द स्रस्स्वती अपने कार्यका फल अपने जीवनमें न देग्न सके; उनके बाद अब हम उस फलको देग रहे हैं। महासमानके संस्पापक राजा राममोहन रायके विचयमें भी सही पहा जा सकता है।

आता मनुष्यवा सर्वस्व है। आसाके न रहने पर उसकी कमीको कोई चींत पूरा नहीं बर सकती। आशा न रहनेसे मनुष्यका जीवन एकट्स पलट जाता है। एक बड़े परंतु दूखी विचारपान्ने एक बार कहा था-" जब मेरी सारी आशा पर पानी फिर गया, तब में क्षेत्रे काम कर सकता है-कैसे प्रसत्त-चित्त हो सकता है।" आज्ञामें बड़ी प्रवल ज्ञाकि है। इस बातके बहुत उदाहरण मिले हैं कि सर्वेषा निरास मनुष्योंने धोड़ी सी भी आसा मिलने पर बड़े वह वार्य कर डाले हैं । मुख्यविषयाकरणके रचयिता खोपदेख पहले बड़े सन्दर्शन थ । बचपनसे जब वे पडनेको बेटे थे, सब उन्हें ब्याकरण बाह वरतेम यहा बणनाई होती थी। उ भपना पार बारवार बाद बरत थे, परस्त . ५७ स नारा ३१ । उसकार इसको प्रतासमझात था परस्तु प्रदाह भी स संभाग र . जो वह परिश्रम करने पर भी योगणाही क्ल ने आया. पर ा रिक्षांच्या किएन स्थाप वार्यास समझ लिया वि क्षणाहरू संधात स्वकृत वय स्थाप प्रशासका स्वकृत स्वयंत्रकाई। सार्था कर्णा करणा सम्बन्धः । सीप्रवादी स्व with fair at what his fring to out the trained animage ्रिक्तार है. दावरका दला लगा चन् स स्था हिन पहला र. ज परवा गाप्पाराम श्रुव किए सेव दाव किसे तक हुपर उपर सामें राहर है। । राज सर्व १ एक स्थापन ग्रह ग्रहण पुलिस पर सम्





स्यायलम्बन । हुआ भी यही; मेंने तीन वर्षेने फिर सब बिल बना किये।" धैर्यका यह कैमा सन्तर उदाहरण है।

क्या पुन्तर उदाहरण हैं।

सर भाइकर म्ट्रन्त वेषाय एक प्रोदाना च्यारा बुचा या, दिलको वह
'हाइमण्ड' कर कर दुस्तर करता था। एक दिन सनके समय म्यूटन दिमी
हामके मिण बाहर चला गया। श्री में नेवर सोमान्त्री कालती हुई छोड़ गया।
बुजा कमोरी अकेवर रह गया। बुज नमान बाद उनके तीमें न माहदा करा।
भाषा कि वह एमाएक ऐसे जोरमें मेंग पर सरदा दि जातती हुई बनी और
गई भीर नम बमान किनको लिलकर तैयार हरनेमें म्यूटनको कुई वर्ग भी
थे, जलकर समा की गये। 'म्यूटन जाव शीरकर भाषा और जमसे वह सम
हाल देना तन उसने बहुत हैं न हुना, यसनु जनने प्रोप्त भाषत कुनी
माता नारी। उनने पैसी बाम दिमा और वह बेनण्ड हुना है कर वह
गया कि " इंडमण्ड, सेरी जो सानि हुई है उसकी तुसको क्या नवार हैं।"
कहा जाना है कि इस बारजोर्ड जल जानेने म्यूटनको इनना दुना हुना है

उमां स्थाम्यको यहम हानि पहुँची भीर उसकी बुद्धि दिक्षाने म रही।

थगंड उद्योग थीर शायह ।

माहित्यसेवियोंके चरितोंमें भी धैर्यन्नतिके अनेक उदाहरण मिलते हैं। यान प्रतापचन्द्र रायने 'महाभारत' का एक अँगोजी अनुवाद प्रकाशित करनेका निक्षय किया था । यह निक्षय हतना इद था कि बाह्य साधन न होने पर भी सफल हुए विना न रहा । उन्होंने इस काममें अपने एक मित्र केसरीमोहन गांगुहीसे सदायता ही थी । ये महाराय संस्कृत अच्छी जानते में । पुस्तक थोड़ी थोड़ी करके भी भागोंमें प्रकाशित की गई । परन्तु तथ इस पुस्तकका ८४ माँ भाग निकला तप प्रतापचन्त्रका देहान्त ही सवा। उन्होंने इस पुस्तकके प्रकाशित करनेमें बारह यथतक कठिन परिध्रम किया और आर्थिक सहाबता पानेके लिए भारतवर्षमें चारों और अमण किया। उनको केपल भारतधासियोंने ही नहीं किन्तु पूरप और अमेरिकावालोंने भी धन दिया । प्रतापयन्त्र स्थयं धनाद्य न थं; परन्तु उन्होंने इस पुस्तकके प्रका-ज्ञानमें अपनी गोंटका भी रुपया खगा दिया । सन् १८८५ ई॰ में उनकी अमण करनेसे मुखार आगया और इसीन उनके जीवनका अंत कर दिया। शत्यदाय्या पर पदे हुए भी वे अपनी पुस्तकके विषयमें सोचते थे। स्या अय पुन्तवके संपूर्ण होनेकी एउ आशा है ? बया मेरे जीवनका एक मात्र कार्य अपूरा ही रह जायगा । यहां चिन्ता मरते दम तक उनको मानसिक कष्ट देता रही। उनकी प्रयल इच्छा थी कि पुस्तक संपूर्ण हो जाय । उन्होंने अपना प्रियपतना सुदरीयालाको पुलाया और कहा,-''पुस्तकको संपूर्ण करना ।

स्यायक्रम्यन् । मेरे श्रादमं धन मत रुगानाः क्योंकि उम धनकी पुस्तकके प्रकारानमं जरू-

रत पड़ेगी। जहाँ तक हो सके तुम साधारण जीवन व्यतीत करना और पुस्तकके लिए रपया बचाना।" उनकी मृत्युक्ते प्रधार् मुंदरीवालाने अपने पिन्दी आजाका पालन करना अपना धर्म समझा; केमरी मोहन गांगुलीने मी सहायना देनेसे मुँह न मोदा और एक वर्रमें पुलकका क्षेत्रांत प्रक्रांतिन हो तथा । भाष्यियामहार्णेय श्रीयुन नरोन्द्रनाच यसुका जीवन बड़ा ही शिक्षापर है। उक्त महारायने बंगभाषामें विश्वकीश नामका एक बृहद् प्रंय दिननेम संकल्प किया और उसे उन्होंने बड़ी बोम्पनापूर्वक २८ वर्ष तक निरन्तर कटिन परिश्रम बरके समूर्ण किया । यह पुम्तक २२ किस्त्रीमें संपूर्ण हुई है और सब नरहके ज्ञानका भंडार है । जिस समय नरोन्द्र बाबूने यह काम आरंस दिया या उस समय उनकी अवस्था केवल इकीय वर्षेकी थी । इतने बडे कामके लिए उनके पास धन न था । उनका बेतन बहुत थोड़ा या जिससे वे अपने बुदुम्बका निवाह काते थे। पहले विश्वक्रोशकी ब्राहकमंत्या बहुत ही थोडी थी, परंत् जब इसके कुछ अंक निकले तब लोग नगेन्द्र बाउकी योग्यता पर मुख होकर उनके प्रयक्ते बाधय देने छने । सरकारने भी उनकी सहायना करनेके लिए कुछ प्रतियाँ मोल लेना स्त्रीकार कर लिया। बीचमें नगेन्द्र बाबू कर बार बीमार हो गये और कई भागतिवित्रतियोंमें फैंस गये, परन्त उन्होंने अपने प्रिय कार्यको त्याग देनेका विचार मपने जीमें कभी न भाने दिया। वक बार से बहुत ही बीमार हो गये थे । उस समय उनकी दशा यही ही निराम्यातम् स्था । उस समय उन्होने कहा या-"सुन्ने इस वातका वदा शोक है कि में विश्वकोशको समूर्ण किये दिना जाता है।" परम्त अस्तर्मे यह क्षेत्र सर्व हो गया । इहन हैं कि इसके विश्वनम नगन्त्र वावको प्रधाय हजार पुस्तक दलकी वर्डी और ज्याच्या दरणाध रूपया सच करना पदा । यह ब्रुप वरा-माहित्यमें यह स्व है और मसारक मर्था विद्वाबान इसकी सम्बद्ध्य प्रशासा की है। बार्ट्ड वाइय रूप्य और भा टा समाग्रयांव विश्व-ः कारक विस्तरका प्रयान किया ता पान्त रन्द सफलना न हर्द । स्पार्टी क्षम करन पर उनके वेयन जवाब र जिया । यह नगन्त बायका ही धेय । वा उन्होते इतन समय तक सरतोड रोप्यम करक अमृतिपाओड्स દય



ENTREE 1 विक्योरियाने भी उनकी एक पालहको पहा और उनकी बड़ी प्रशंसा की। गुर्वर-माहि"यमें उनकी पुस्तकीहा शव तक बवा सम्मान है। कुछ काल बार बररामतीने 'इत्रियन रोगोदर' नामक पत्रको भगने अधिकारमें ने लिया और उमका संवादन करना शुरू कर दिया । वे केपड प्यका मेपारन ही नहीं; हिल्तु उसके मंदेशी सभी काम करने थे। इस प्याम समात्र-गुपारके दिवनमें बड़े उत्तम हास्वपूर्व केल निहला करते थे। इस

पन हे नगाने हे लिए बहरामती है बाग मधेष्ट धन म था; इस लिए एक बार

उन्हें भागी बाहि आभूषम लड़ बेल देने पड़े । परम्पू वे धरहाये नहीं। धैर्वपूर्वक निरम्बर परिश्रम काने रहे । भीते ही बालमें उनके पत्रका इस देशमें भीर विदेशोंने खब गरहार होने लगा । उसके प्राद्यींकी शंक्या बद्दम अब गई । मारतके गवर्तर जनरल भी उथे चड़े चावये पहने छते । बन्होंने दी पत्र और चलाव । उनमें से युक्त 'हूरर मुंह वेरर' उसकी शायके पत्रा' बाद तक निकल रहा है भीर उत्तव थेथीडा वय समझा जाता है । बहुराम-सीने मामाजिक सुवार के लिए बहुन सम किया । विश्वामी के प्रशा सुवार-मेडी उन्होंन अनेक बार चेशा की। इस काममें कोगीने बहुन बाधारें बारी और उनकी बहुत पूरा सना बता, परन्तु प्र-देनि किसीवी एवं म सुनी । वे अपनी पुन दे वंब थे । कोग कान थे कि वे केरफ मामके निए बहु काम करन हैं और इस तरह ने उन्हें बहुनाम करेंड निक्रमाई करना बाहते या पाल्य उन्होंने मीहरों साने वाल भी म करहते हिंचा । उन्होंने मालीय वियोधी समिनी में नेना मुख्याका साम विकलानेका सर्वत किया ह द्वाम नियाका भी मचार दिया। तिमलाक विकट वर्षेत्रमें तो प्रतिव रिक्टियालय सम्बन्धत । तात है दिन बता है पर भारते ही परिवासका ant arena the was ented out with the and their a () a rea art mer a rari ein are ar mennenter ent-ताम बन १० ० व इसा - ६० व ६० वह महाम विमायन पामहत मनने

C 60 H CH 614 f: 44 452 674 fatel 874 fo 614 411 mage an issue midt ere etr ar at rent tie ein fal.

कीर पुरावरिक द्वार सर्वसारतालये समाजन्यवादवा बीज शेड्रीत बराल, बाजाभीकी सरम वर निधायभीकी द्वार स्थानिक भेटा बराल, यास्सी कीवा भी रिस्ट्र द्वारिक पुराव कीर निर्माकी सामयता बरास, सिरोर्ट्यिक बारे सूत वर भी क्षाते द्वार कीर का सामा, में सम्ब बात सामकी स्थि-द्वारिका एक बहुत ही द्वारतहत्वन द्वारहण हमारे सामने स्थारी है।

र्रश्युणा द्रण्या तीयन भी धर्म-सिन्या विधित द्रणाहरण है। इसके विधा एक समार्थ थे। इतिह होने पर भी थे भगने ही गण्योंकी एक लेखी पालाएमें भेजते हो। इतिह होने पर भी थे भगने ही गण्योंकी एक लेखी पालाएमें भेजते हो। पर इसके महादेश पर में हिए थे। इसकिए उसने महादेश दर्भ कर की। परन्तु होता सहका मिनुष्य पर नेमें बचा महादा हो। की। इसके प्रमा कर पर बचा मान हा पर्यश्च हुआ तब एक नाममें समार्थ हिमा लगा थे। इस भागा नीम बमाने समार्थ हुआ तब एक नाममें हम इसके महादा प्रमा । इस बमाने उसने पर्या हुआ से पर्या हमा नाम । इस बमाने उसने पर्या हुआ से परा हिमा समार्थ हमा थे। यह प्रमा भाग भाग निवा भीर हिंदू बन जानेना विधा दिया बरता था। यह प्रमा भाग भाग निवा की। परा हों वा प्रमा । सार्थिक पर्यो देश बहु हों। सार्थ हमा स्था । यह पर बहु हुआ तब उसके भीराया १९ पर्या हों। मीधीना काम नीम धुकने परार्थ है। जब उसकी अदस्य १९ पर्या हों। मीधीना काम नीम धुकने परार्थ है। जब उसकी अदस्य उसके परार्थ ही। यह परार्थ भीराया परन्तु हताकी पर एक नीमी सो देश कार्य पर सीर नाम सार्थ किसी कर सेता परन्तु हताकी पर एक नीमी सो देश की। सार्थ समार्थ समार्थ हता था।

्रस्के बाद यह एक गाँवमें आ रहा और वहाँ जूने सीनेवर पेवा बहने एमा। हमी समय वीनेश्टमें इसने परेवाजीमें हनाम वाया; हम बाममें यह बड़ा निपुत्र हो गया था। एक बार उसने एक सनुष्पत्रों सहमूखी मालको बोरोग ए जानेम महायता है। हम बायेमें उत्तरी जानतक गई होती। यह हम बाममें लीने साथ हम हिए शांग्र हो गया था कि एक तो उसके एम गामना गांव था और इसर उसने आमहने वार्य में हमहिए के रायाश्च में ला ये था। एवं याग्य समय नगरम यह बात मजहने के एक रायाश्च में ला ये था। एवं समय वार्य समय वार्य यह बात मजहने के एक रायाश्च के ला कार्य समय जार गांव सम्मान कार्य समूब्य कर उस नगर है अब पुरुष-को प्राय: सभी महसूबी प्राप्तको चौरीसे से जायह कारो ध-माहक किनारे पर गये । उस मन्त्राने, जो महसून बचानेक लिए भाग मालको बोरिने ले जाना चाहना था, भागा जराज किनारेने पुछ पूर नता कर दिया । उसके सवायकों मेंने एक स्थात तो कहाती वर संक्रेत करने भीर मालका क्षिपानेक लिए खड़े रहे और बुछ जहात वरमें मार्चीमें माल अरका हिआर पर कार्नेक लिए निवल हुए । मैगुएल कृत् इन्हीं सहारालींने वा । रात बड़ी भैनियारिया । भोड़ा ही माल इमाने पाया था कि भीरी नना और समूद एकबारन समा । जो लोग नावी पर से उन्होंने धीरण चाण किया और साल बनारनेके छिए प्रदानने प्रभीनके किनारे नक कई पश्चर कराव । दिन नावम इन् वा उसी नावमं वैदे हुन् वृक्त आव्यक्ति होती हवाने क्य गई और मी ही उसने भपनी उन्नां हुई रोगियो प्रवर्त्या सेवा बी, लों ही प्रयक्त शोकन नाव भीती हो गई। गीन शावती मी मान ही हुन सर्थ । आ अप रहे के कुछ दर नक ना नायन विपार रहे, परम्यु अब प्रम्हित कृष्य कि नाम किनार ही भार म जाहर समृत्ये और भी भागे बहती जाती है लग मेरता राज कर दिया । व अमीतय तो जीवके काम दे पर में भीर केशा राज था। इन्हीं नैराबीये इय भी जा। यह बड़ा ही करिनाईमे मेर का अपन ना यक साधियां नीत्रण किनार पर पहुँच राया और वहीं सुधेरे सक met a freger gan auf est : mart bif ar ma birifa un fren ma å इन्हें कानाम स तय । व सपड तथ सबसरे ही रहे थे । अब बूल शास जिल्ली गृह तथ इनकी जानचे जान काई। यशिर्धे कुछ क्रम सामाने पर पन अपन करका करा गया मा तो सीकडी नेरी का आ नराचारक सुक्ता ही इस प्रकार बार्गीने वर आनेने इसके स्वार्थ ही

स्त्रम का का सम्यागण मा तो मीमकी नृति का सा ।

कुण्यानक ताममी ती त्रम जकार सामित देश आगेरी प्रयाद स्वृत्योदी सम्यान तो ताममी ताममी का जकार सामित है वा स्वृत्योदी सम्यान तो ताममी का कर्मा कर्मा कर के ती स्वृत्यों सम्यान के उपलित है के ताममी क्षेत्र के ताममी क्षेत्र के ताममी के स्वृत्योदी सम्यान के ताममी के त

और हुमके बाद यह एक हुकान पर जूना बनानेके काम पर नौकर रह गया । इप मरते माते पचा, शायद अब इसी कारण यह गम्भीर हो गया शीर उपट्रव करनेकी प्रवृत्ति उसकी कम हो गई । कुछ समय पीछे धर्मीपरेशक शाक्टर ऐडम क्षार्कके उपदेशींने दृष पर यहा गहरा प्रभाव दाला और इसी समय उसके पिताका देहान्त हो गया। इस कारण तो यह और भी अधिक बाम्भीर हो गया । उसना स्वभाव बिलवुक्त पद्क गया । उसने किस्से पड्ना लियना शुरू कर दिया, क्योंकि यह इस बीचमें प्रायः सब ही पुछ भूल खुका था । उसके एक मित्रके कथनानुसार उसके हस्नाक्षर इस समय ऐसे माद्रम होते ये अमे कियी सकड़ीने अपनी टीगोंको स्याहीमें हुमाकर और पागज पर फिरकर एक अजीव नरहके चिद्ध पना दिये हों । इंट्रेन अपनी उस समयकी रियतिके सम्बन्धमें पीछे पीछे कहा था कि "जितना ही में पहता था उतना ही मुझे अपनी अनिस्ताका अनुभव होता था; और मुझे अपनी अनिस्त-साचा जिलना पना रूपना था, उतनी ही में उसे दूर करनेकी चेटा करता था । अवकारा मिलने पर में अपने हरणक भणको बुछ न बुछ पहनेमें संगाता था । महाको भगना निवाह करनेके लिए मजदूरी करनी पडती थी इस कारण परनेके किए बहुत घोडा समय भिल्ता था, और इसीत में अपनी इस सम-वडी बर्माको पुरा परनेके लिए भोजन परनेके समय अपने सामने किनाय कीलकर रार लेता या और बममें कम ५-६ पूछ पड लेता था।" एवक नामक क्षेत्रवृक्ते निदंशींकी परकर उसका ध्यान आएमलानवी और आकर्षित हुआ। चमने घटा कि "इन निषंधोंको परकर मेरी मानसिक निदा हट गई भीर भेंने अपने नीच विचारींनी छोड़ देनेका पढ़ा संबल्य कर लिया।"

हसके बाद इपूर्व घोड़ेसे रायोंसे निजी स्पयमाय सुरू कर दिया । उस समय उन्नर्धा वार्यनापाताको देखका एक पहाँगी पशीनाहेने उसकी कर्न है दिया और इससे उसका स्थापत अस्ता पहाँन तथा । इस उसीमाँमे ऐसी स्थापता लग्न कि उसने एक ही वर्षके प्रधान सात कर्न चुका दिया । परानु द्राव बार स्थाप कर्न शत्म काल पक्ष हिया । वर्जना वन्नमें उसे इन्तर्ध परान्द्र प्रधान कर्न शत्म काल प्रकार स्थाप । वर्जना वनमें उसे इन्तर्ध परान्द्र प्रधान कर्न शत्म कर्न स्थाप कर्न स्थाप स्थाप वर्णन स्थाप कर्न करा कर स्थाप स्थापना प्रधान स्थापना कर्न करान कर्न

स्यायसम्बन्धाः

मन्त्रंत्र होना चाहुना था । उसे हुम प्रयन्त्रंत्र भी। भीर महत्वना भी हुई। तिन्त्रम् सामितिक परिश्रम करते हुन भी उसने अपनी सामितिक उसने कर ने के नित्र नामोतः, हिलाम भीर सम्प्राम्त या अध्यनमक अभ्यन्त विश्वाः मंत्रं सामान्त्रातका निर्मेत स्थ्यपन करनेका सुनीत हुम काल मिन्य कि इस निव्याम स्था नी निवर्णों अभीशा कम मुन्तके हुनके आवश्यकता थी। मुत्ता स्थाने भीर आध्यमका अध्ययक करके काल साथ यह भीरीनी

र्वने हा बाम भी बहने कहा। । उसे राजनीतिमें भी मेस ही गया, उपारी हुआन पर उस मामके राजनीतिके जैमी कोसीडी भीड़ होने जा।। अब वें न कार्य पे, तन वह रुखा उनके शाम मार्डजिनिक दिख्यों पा समर्पीय करी बच्च जाना था। इस बायंग उसका हुनता समय क्या जाना था कि उपारी कमी कमी दिख्यों लांक हुए समयक्षी बसीडो एस कार्य के लिए आधी राज-मक बाम बना पारणा था। गाँवने सम्मेण कार्य कार्यनेतिक बोधाई बच्ची किया बन्ने थे। एक बार जब हुए गणको एक मुनेका तथा बना रहा था तब बड़ कहका उनके कमार्क भीजा रोजनी तथा बन्ने एस्टाविक मार्था आप

बास करना है भीर रिजर्स हुए। उच्च साने होंडा करना है। "से बान हुएहें कुछ सस्य बार भारत कर सियाने कहीं सिजर नुप्त-मुम्ने उस बहासाओं में उस नामान कोर्ड होन्या गारी हुनी ने बसा हिन्दी हुनते करने दिएल-"महीं, योंट कोर्ड मार कारने किल्हान नाम नाम स्वाध्य प्रकार ने होगी, जिससी जय कर्नु-केंद्र कर गारित सामेंन हुई में प्रकार कर महिन्दी कार कार केंद्र कर मार्ट केंद्र कर मार्ट सामें कर स्वाध्य की होगा केंद्र कर मार्ट कर कार्य कर कार्य कर कार कर कार्य कर क

truck was in the at . The sea right rise rise

असंड उद्योग और आप्रह I

प्रेम पहले पहल एक कविताके रूपमें प्रकट हुआ। उसकी कविताके फुछ अंश जो अयतक मौजूद हैं यह सूचित करते हैं कि आत्माके अमृतिक शह अविनासी होनेके मम्बंधमें उसके विचार कविना करते करते ही उत्पन्न हुए थे। उसके पर्नेका स्थान रसोईयर था। यहाँ यह चूल्हा मुख्यानेकी घोँकनी पर किनाय रराजर पड़ा करना था। यथे शीर मचाते रहते थे और भूमधाम करते रहते थे। तो भी यह अपने छेख दिया करता था। उस समय पेन नामक छेखकक ' युद्धिना युग ' नामक पुग्नक प्रशासिन हुई थी। लोग उसे पड़े पावसे पड़ते थे। इस पुस्तक प्रतिवादमें हुवूने एक होटीमी पुस्तक लिपी, जो प्रकाशित हो गई। यह अग्रमा कहा बरता था कि पेनकी पुस्तकने ही मुरी लेखक बनाया । फिर तो बुछ समय प्रभाव ही उसने जन्दी जन्दी कई छोटी छोटी पुरुष किय दाही। बुछ पर्योके बाद उसने ' मनुष्यवा आत्मा अमर है और अमृतं हैं इस नामकी प्रतिद्ध पुरतक लिग्दी, प्रकाशित कराई और उसको ३२० र • में वेच दिया। इस स्वमनो वह उस समय बहुत जिपादा समझता था। हम पुस्तवकी बहुँ आहतियों हो पुत्री हैं और अब भी उसकी कहर की जाती है। बहुतमें युवा स्थाक अपनी घोड़ीमी सफलता पर भी फूल जाते हैं। अभिमान बरमें समाने हैं; परन्तु हुनको विश्वित भी यमंड न हुआ। प्रतिद्व छेख-वींमें राणना ही जानेपर भी वह अपने घरके द्वारके आगेबी गर्शको साहा करता था और अपने किप्योंको जाईके लिए बोबले लानेंस सहायता दिया करता था। उसने वृष्ट समय तक तो साहित्यको, अपना रोजगार भी न बनाया था: वह होचीवा बाम बरवे ही ईमानदारीये उदरनिर्दाह बरना था और उसमे जी समय क्यता था उस पन्तर तिस्त्रमा समाता था । परन्तु पीठे यह अपना सारा ही समय सर्गर यस ग्रम लगान लगा। उसन एवं भासिवप्यवा संजातन बर्ग १३ १६० ११ पृथ्वी प्रवास्थित । वर प्रयोग बरन स्था । उसन बर पा । " अपन ते उनक भी रूप रे पर वहां वहां व्यान के जिस A NAME APPRIATE OF MEN POR ATT OF DIE व नन्द्राना क्षा रीचनव व (स्वन्द्रक्र) and the second services against and . . . १ व.१. १४ १२ के जीपन सदय हुआ।

पाँचयाँ अध्याय ।

माधर्मोकी सहायता भार सुयोग। ——————

" शाली हाप अपना कोरी बुद्धि कोई महरनका काम नहीं हो सकता ह काम क्यो और शाधनींने होते हैं। बुद्धि (मानभिक्र क्षाफ्त) और हार्य (धारोरिक बर्लक) दोनोंको ये गायन एक समान आवरणक हैं। "—केसन ।

" भूगोग के मिर्टी के बल आगे की ओर बाज होते हैं, गीड़े में आर बह गजा रहता है। यदि मुख उगके आगे के की भी बाक को ही बह सुक्षा देवां अजयागा। १९४५ वरि मुख उमें आगे में निकल जाने होंगे सो दिर गैमार्टी की देशी ग्रांज नहीं है जा उमें १९६६ में दें

द्भियों भावित्वय घटना था देशकी श्रीलांक भागे जीएगाँ कोई बाग बाग नहीं होगा। नह किंद है कि बागी बागी सामा पाने बानने वार्गोंदी पिन दाय ना जाती है, वा रोगा है और बोई स्वयत्तिना साम को जाता है, राज्य इंग मारके नामकी माराधें के हक्ता सूर्यना है। इस निवाद साम श्रीला गाँधमा बान दहना-इंगोगार्स नगे रहना ही सबसे बाद्या श्रीत मार्गों है।



क्षापरभ्यम् ।

कर गर द्राराने एक सम्मे दिया और तरिक्कोनेन से प्रम समय केरण ११ वी करेंका या उस ध्यासदृष्टि देखा और उसकी गतियो समयके स्था करने के करना नवाक ध्यासने सम गहें । इसके बादे सक प्रमो ५० की यक न नवान नोर सनत किया तब करी वह सोगक या विश्वसात्र स्थारित करता कर तथा किया बारियोम सीर स्थारित्यक्तरी सतियास सपूर्व सार्य वया तस्त्री है । इसी तहर तिनिक्कोन सन एक बार बह सुना है कियी

न्तरभातन वह सन्ताह लिए एवं वेदी तनद (बहात) हे बाहे हैं हैं भितान दूरश्च हानु हाथ डिम्मान्टे तुर्व है, तब इनने इस हारती और काम जान ब्यान्टा मीर बनायों वह दूरबीबड़ा शारिकार दारेंने काती हुन्य : बार तोराभ्यत न्यार्थह हामत हुन इस कर मा तुरुक्धी वात सुरवा डी रह अप्याप्त क्यार्थ्य हमत हुन इस कर वहना बहुत हो। वहनेत ईन एक करनाव्येड डिमाइस अन्यान हिला बहुता हो। एवं नहरूत ईन एक वहनाव्येड एक अस्तान वृक्ष करातु कर वहना वार्यां मी

and they call are talk which in gas are been gard and talk talk. It was all talks and talk talk. It was a second or the talk talk talk. It was a construction of talk talk.

,~ ##

साधनोकी सहायता और सुयो<u>ग ।</u>

तक युर्पवालोंको अमेरिकाम पता भी न या। इस सकरमें कोलम्यसको एक माससे भी अधिक समय लगा। जब उसको जहाजमें पलते चलते यहुत दिन पीत गये, तब उसके साथी निराज हो गये। उन्होंने समझ लिया कि अब स्पल कभी न आयेगा। उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब फोलम्यसको समुद्रमें उकेल कर परको लीट पलना चाहिए। उसी समय कोलम्यसको समुद्रमें तेरती हुई पास देखी। उसको देखकर यह समझ गया कि भूमि निकट है और तब उसने अपने साथियोंको भी समझाया। ये मान गये और मान्त हो गये। कोई चींब इतनी होरी नहीं है जिसकी सरफसे हम उपेशा कर सके और कोई पात ऐसी तुष्ठ नहीं है जिसकी सरफसे हम उपेशा कर सके और कोई पात ऐसी तुष्ठ नहीं है जिसका अभिमाय मालम होने पर यह जिसी काममें उपयोगी न हो सके।

छोटी छोटी चीजोंका ध्यानपूर्वक निरीक्षण करना, व्यवसाय, शिल्प, विज्ञान और जीवनके हर काममें सफलता प्राप्त करनेका गुप्त रहस्य है। मानव जातिका ज्ञान छोटी छोटी बातोंसे ही मिलकर बना है । ये बातें पीडियोंकी परम्पासे इकड़ी हो रही हैं। ज्ञान और अनुभवके छोटे छोटे अंदा यडी साव-धानीसे इकहे किये गये हैं और अब उनका बहुत बड़ा समृह हो गया है। यद्यपि ऐसी बहुतसी छोटी छोटी बातें पहले पहल महत्त्वहीन ही मान्द्रम हुई होंगी तो भी पीउसे वे बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई होंगी और तदनुसार उन्हें शानभंडारमें उचित स्थान मिल गया होगा । बहुतसे विचार जो स्ववहारसे सर्वेषा अतीत जैसे माञ्चम होते थे स्पष्टतया व्यवहारीपयोगी फलोंके नीजरूप सिद्ध हुए हैं। जब फ्रिह्मिनने माइम किया कि आसमानी विजली और घर्ष-णमें उत्तवा हुई विषुत् एक ही वस्तु है तब स्रोग उनका उपहास करते थे और कहते थे कि "ये दोनों विजलियाँ एक जातिकी हैं, यदि यह जान भी लिया तो इसमें बया लाभ हुआ । यह किस कामकी पात है ।" इसका उत्तर फ्रेंकिन यह देते थे कि "एक छोटामा बालक किस कामका होता है ?" नुम्हें सोचना चाहिए कि वहीं बालक एक दिन बालकोंका बार हो सकता हैं। जब राज्यनीने यह मालूम किया कि मेंदक्की टाँगके साथ भिक्त भिन्न धार्त्रों के रख देनमें उसकी दोग खींच भागी है, तब यह किसकी खयाल था । ३ यह बात, जा देखनेम नुष्छ जान पडनी थी, ऐसे महत्त्वपूर्ण परिभाम पर भरता परस्तु इसाम तार द्वारा समाचार भेजनेके उपायका

विष्ठाय हुआ, जिसके द्वारा संसादके समस्त देशीके समाचार इपाये क्या आवा करते हैं । इसी प्रकार प्रश्नीक सीचे देवे दूर पण और वर-राशियोंके जोडे छोडे धाँगीं आ बुदिसानीने अधिमाय समावये मुलारियाम विद्याय दुवा और सात औरतेवा बाम निष्ठात, विसमें सब करोगें गया स्थाया जाता है और करोगें सन्दर्भेक्ष स्था निष्ठात हमानी चंता निष्ठक समावे।

पानीकी हैर्सिय उल्लाग लाग्नेने भारका पेता होता सामास्य बात है। इस अपने स्मोर्ट्सपर्सिय इस बात प्रतिन्ति हेलते हैं। इसी भारको कर पर स्पार्ट्सिय वार्ट्ड इस कार्टिड हास काममें लाने हैं, तब इसकी सांति कोर्सी पीर्ट्सिड सांचिक कारचा हो लागी है। वह अपने कम्मे स्मार्ट्ड हरोंकी पट्टार्ट्सी है और को को सुन्दे मुस्तिक सामा कारती है। सार्ट्सिट मानिस्से माने निहालने में पेता कोर कारचानीके कालनेम तथा कारत व लिक हो हरेंसे निम्न सार्तिकों प्रयोग किया अपना है, से भारकों हो सांचित कर अपनोशन है। यही मानि अब पुरनीके सीला कार करती है तब परेसियने प्रयास विकरणी है और प्रकारके काम पुरनीके करायानात कर देती है जिससे मंतार्थ इतिसालमें को वहें भार पारिकार हो सांचे हैं।

बदा बार्गा है हि परके परक मारिका आहा ग्रीरक्टराबा ध्वान मारुकी मार्गिकों भोर भारुकित तृष्या था। यह देशके हर (बिहेग्स) में देर या। वर्षा पर बदा भागी बारून पूर्ण पर बारा दूश या। इसने प्रश्नी मींक रहा था। बातबंदे हुँए वर बहा बढ़ब नेता हुआ था। इसने प्रश्नी पेला हि भाग्दे जीरिने पर बढ़का उपाद बरू मा बहु। हमार्थ प्रग मारुकी मार्गिका जात दूष्या भीर दिन उपने भागे दूष अनुभवका बज एक पुल्यासे स्वार्थित करा दिला, जिससे मारुवानी बहेड भीना बायदी प्रश्निकी भोजसे नामा तहे। उसके बाद नेत्रेष्ठी, स्वृद्धित मारुकी स्वार्थ ने आहमे

मुप्तिनी और सपोत्तिने साथ उत्तरन, भीन उनको दिशी कार्यदी तिर्दिने स्थारत सप्तकारत क्या सारी उत्तर है। से स्वतुत्व कोई स की दास दियां-अनेता संक्रम कर केर्न हैं, उकती सम्बाद गुरेशा दिया तार्य हैं, भीर कीं स्थान प्रदेशे सीएए स्ट्री सुद्दे और उनको उनको कार्य है। दह सर मन्त्री वि क्रॉलचें, भरायकारीं, श्रीर प्रदर्शेरियेंवि लाभ कार्तवारींने ही दिलान कीर दिल्लासंसदी कामसे कांत्रव काम दिला है कीर यह बनाएन की रीव करी है कि की शतमें कांधिय प्रसिद्ध गंग्रदता और कार्रियकारय हुए हैं जुन्हींने विकास कारोंने किया यह थे। । प्रांतक विकास राज्य रिक्टिसीने किया चित्रकारामें बची विकास मार्ग पाई । आयहप्रवास माधिकारीकी जनती है । अर्थात कावदयवनावे कारण है। सारे आजिएकार हुए हैं---ग्रामुखका जिसके दिला म चला उमेर्या यह गोल बनता गया। सम्रोत अधिव मृत्युत्वव यह-शाला ' बरिनाई ' या पारणाला है । संबर्ती और बरिनाइयोंने ही तरह तर-हवे. काक्षित्रार होते हैं । बुक सर्वोत्तम शिष्यवारीने बहत भई भीतारीने बाध विचा है। परस्तु बाद श्वरंग वि मन्त्र कीजारीके हारा गही किन अवसी चतुराई और धेर्पर बारण शिरपवार बनता है । धुरे शिरपवार के लिए अर्दे भी भीजार तुरे हैं। एवं चित्रवारने विजीते बदा कि, " आप अपने इंत मान्द्रम गरी दिन्य विधित्र शितिये सिलाने हैं । " उपने उत्तर दिया, " महा-दाय ! में उन्हें अपने मानवण द्वारा मिलाना हैं ।" दरणक प्रमिद्ध वार्यकर्ताक विषयमें यही यात समग्राना भादिए । पारशुखनने अनेक अहम बीजें -- जैसे रुवादीयी घटी, जो टीक घंटे बताती धी-एक साधारण चार्ये बनाई। चार् एक ऐसा भीजार है, जो हर मनुष्यके पास होता है। परन्तु प्राधेक मनुष्य प्रसायन मही होता । पानीवा एक समला और दो सापमापक चंत्र, केवल इन्हीं श्रीजारीये दावटर दर्हपाने अप्रवट मापका अनुसंधान किया. यह विक्र किया कि सृष्टिकी समाम चीजोंमें सुपी हुई गर्मी रहती है । दाहरर घोछे-स्ट्राने बहुतमे महरपपूर्ण धहानिक अनुसंधान केवल चायकी एक पुरानी रकाषी, पहीके बीबी, बागज, एक छोटीसे तराजू और एक फुंकनीसे किये थे। बटक (उदीया) निवासी महामहोध्याय पं॰ चन्द्रदीसर सिहने

बद्ध (उड़ामा) निवामी महामहोष्याय पे॰ चन्द्रहीरार सिंह्ने ज्योतित्मंबन्धी अनेक अनुसंधान साधारण पंत्रों सह दाले थे। उनके पास एक जलपटी, एक दिष्चक, एक प्लोल, एक शंदु और एक स्वयंपह यंत्रके निवाय बुछ न था। और ये यंत्र भी उन्होंने प्राचीन भारतीय ज्योतिष प्रसावांनी स्वयं पट पड़कर बना लिये थे। आज कलके पश्चिमी बन्तोंका सो उन्होंने बहुत समय तक नाम भी न सुना था। वेवल प्राचीन संस्ट्रत भंगोंके आधार पर दुशने दंगसे ज्योतिय विद्या मीकी थी; बहुत दिनों तक सी नथे. पिक्षी ज्योतिक-लाकारी उन्हें हका तक न नहीं थी। चंद्रतीनस्पिद्धी-बालबान्ध्री संस्कृत व्यक्ति या थी। उन्हों सुरुसे ही नह मक्षण सुप्ति देवनेना भीर न्योतिनसाम जानतेका बहुर ग्रीक था। उनके व्यवते उन्हें दो चार नारे भावसामें बताव दिवें के, इतसे अधिक वे कुण व बताव मने थे। चन्द्रतीनस्पित्त जब भीर सरसान न तेला मक रचने सी संदुष्टिक न्योतिन-मार्गार्क व्यक्ते भीर समझवेडा बयान किया और इस बार्गम जक्ते वर्षे सम्प्रता हुई। उनका जीवन नामकानक्ष्य एक बहिया उत्तर नहीं वर्षेने मार्गात संस्कृत भीरी हो, दिर उनमें स्मित्त हुई बारोदि सम्प्राध्य वर्षाम बन्ने के मिन स्वयन दिवा और जब मन्या माराम उन बारी मिजक मन्या हुन बन्नावा साराम स्वयन्त्र भीर सम्ब हुया। हुने वा भीज सम्पन्त हुन बन्नावा अधिक स्वयंत्र भीर सम्ब हुना और

करक-शांतियक सामारक बादू योगिसानदाड़ी भेर यह गहरी बार मेर्-संस्थान हुं तन करें उनकी दिहनारों सामार करा सामार्थ हुआ। एक साधारण कामार्थ सहस्र केल स्तंतुनकीरीई स्थानसानी मृत्य सामाय का स्था त्या हों है धीर साम मार्था योगिस साहदे सीमार्थ करेंद्रे किए उनकी करें अब होंद्रे धीर साम मार्था करान दाया। एक हिंद सामेंद्रे सामार्थ उन्होंद्रे तुम की सीमाण्या करान हुआ। हुल वा काम्योनसी मृति ही करी दिल्ली कर्डीची स्थानक का सामार्थ्य केला हिंदा भीर उनके दीने सीमार्थ कर्डीची स्थानक का सामार्थ्य केला हिंदा भीर उनके दीने सीमार्थ करेंद्र सामा करान सीमार्थ करान हुआ हुएसमारक सामार्थ हुआ। हिंदा बीमायकान उनके हुस्थीन हिंदाई निर्मे देशका उन्हें बड़ा स्थान हिंदा बीमायकान उनके हुस्थीन हिंदाई निर्मे देशका उन्हें बड़ा

चेहरेमाने बंग्हरने बहिता हरता है। बीत किया भी ता व वर्षी बान-मार्ने पीड़ाल्यूरेल बावह एक स्टेम्बर बंग्हर क्या कि हाना। इसके पिट्रसेंड उस्ते कुत वर्षणक हिया। इसके क्योंने स्टेमिट वर्षेट बनुबन्नार किसे। यह 3444 दिल्ली बाद बोगालक्येन देश किया सारी दिली हुए कह सार्था बीदी बीतोंडा स्टेम्बर सार्था करें किया है। सीमाना पर राज्य रोजर एकारों प्रकार नेपाल्यालयी एमारियर किया विकास क्षेत्रक किया है सुरुष्ट की प्रकार की क्षेत्र की प्रवाद की मिनकर मिनकर

ब श्रीमही में सा सिलानेदी बाता निर्माण्यों ये विदेश प्यात्माचंत्र हेनावत्त्र सिला थी । यह बहुपा बहा बरमा था वि "बोई मही प्रानमा कि में इस प्रीति हो । यह बहुपा बहा बरमा था वि "बोई मही प्रानमा कि में इस प्रीति हो । यह बहुपा बहा बरमा था वि "बोई मही प्रानमा कांग्रहानं हो । यह बहा कांग्रहानं कांग्रहान कांग्रहान कांग्रहान कांग्रहान कांग्रहान कांग्रहान कांग्रहानं कांग्रहानं कां

कार्यान साधारण भवतमें पर भी समुख्ययो उपनि करनेरे सीरे अध्या साधन मिल सनमें हैं, यदि यह उनमें लाभ मार वरनेरे दिल् सर्वर हो। अध्यादम लीवा स्थान, जब वे बहुईवा बाम करने थे, दिल् भाषामें दिल्ली हुई बाहुवित्यो हैरनम हिल् भाषाके सीमनेबी और आकर्षित हुआ। उन्होंने एक पुराना स्थानल मोल के लिया और उस भाषाचे वे स्थयं सीहाने लगे। तब पहुसन्दर्स्टीनमें, जी एक गरीब मालीवर छड़ना था, एक महावाचने पूछा कि, "सुम छेटिन भाषानी पुराने पहुनेरे बोग्य केने हो गये।" सी बसने उत्तर हिया कि "धारै मनुष्य करनेरे बोग्य केने स्था साध कें, तो वह जो वृष्ट चारे सीम्य सक्ता है।" स्थानातक प्रयक्त सुपा धैर्यने और सर्वानोता धमपुरंक सदुप्योग करनेरे सारे वाम सिक्द हो जाते हैं। हॅलेंडका प्रसिद्ध कवि, उपन्यास-देनक और द्वितामण सर शास्त्र र स्ताद्ध दर बाममें आमोशित में मेंहे हूँ हैं देला या और संयोगीने भी साम जय दिला बताया । उसने एक लेलक में यो मीहती करके हाईलेंड्रन सेत रेणा, यहां पर सन् १०४५ के दिहोहते क्ये हुए कीगेंने मिनता दी, और जनसे जाने आगी अंपीड़े दिये सामग्री सात कर की। इपने हुए कहल बार् जो मंगोलवा एक पोहेने कान मार दी, विमने वह हुए दिलीत कपने कितनेंग असम्प्र हो गया और यात्र भीत्र पहे दहनेंग्ने मन्द्र हो अस्ता अपन वह सालपाड़ कदा बी था, इसलिय जार समय जनने अपने सन्तर से बान बरना ग्रुक कर दिया। तीन दिवमें जमने अपनी समय प्रथम और मीहत

इव सब उदाहरणींन मालूम होता है कि संसारमें देवयोग मतुष्यहा जनना सहायक नहीं है जिनना उदेश थ निर्शतरका परिश्रम है। निर्शन, जनना सहायक नहीं व राजना उद्या व राजस्ता आक्षम है। राजक साकती और बहेग्राहित मनुष्यों है जिये वर्षोण्ड सुयोग भी दिनी बामने नहीं है। वे उन्हें निर्देश समझहर उन यर प्यान तक नहीं हैने। यानु वह जानकर सामर्थ दोना है कि यदि इस बार्य और प्रयन्त करने के सुयोगीहीं-की हमदी मरेव मिलने रहे हैं-जाने न हैं और उन्नीन की नी कितना बार्य हो सकता है। याद्र मिलायस्वरूपी भीजारों हे बनाने हा स्थापार करते हुए भी स्मायनसाक्ष्य और वंजनिवाहा अध्ययन करना या और न्यितारी रहे एक रेंगरेजने जर्मन भाग सीत्वा करता था । शतिवान अंजनका आविष्यारकती करीदित्सम दिवमें भेजवडी बीकी करता था, राजको भेकगरित और माध-कराहरूमना १९२म मनका थाका करणा था, १९२६ धेवारिक भी सार-रिया सीमा करना या भीर दिसमें सीजने के लिए उसे दिनने समयदी सूर्ध क्रिक्टी भी उसमेंने कुछ सिन्दर रिकार कर कोशने ही साहित्रों वर साहित्रों सीजने समान दिना करना था। धंतुन हेमस्यस्त्र १९५८ सर्वे बीकर थे। वे दिनार करने स्माधित काम दिना करने थे। साह्य दिस सीक्ष स्त्र करण क्यार द्विमानकार्य कार्ने सीमा करने थे। इस तहर उसमेंने बहुत दिन्दरिक बीसमा कार्ने क्यार कर सुन्दर्भ कुत हुन्साइन क्यांन बहुत हत्याक कारण जान कावण के पूर्व हुत्याहरू स्थानित बी, त्रियोड शांग देशका बहुत वहा श्रवसार से रहा है । श्री, बहुत, बहुत्यादे पहले कहे निर्यंत के । वे गुरू स्थानदे वहीं भीड़ति बहुदे शब्दे साथ शांतर बहुते गये । वहीं साथे सार्वकड़े बासये



स्पासलस्यम् ।

सानके मनिया भण्यक श्वागेरसीने समयोक कोरे कोरे अंगीची कार्ये वाकर एक बाग और चीजनारतमक कोर किया था। भीजनारी मणीवा कें बंध उसे को समय विमाना वा उसीने यह किया था। गोरेस और असिकिंग मं स्थान कंग उस समयोत किसे कह यह राजप्रभारिक सारोबी-निमानी वर्ष कार्या वार्या थी-मणीवा किया कार्या थी। मिलिङ्क बुर्रिटने सुरावि आपने समया विपांत करते हुए 10 नवीय तथा मार्गीय माराविं और मूलावी कर वार्यामानकी जायों बीती।

इस अनुन्योंने नपने बामोर्जि को क्रेस कराया है वह अप्रूम है। बान्यु वे इम क्रमको ही अपनी बारकताना क्रम समझते थे । देखीसानने प्रथ 'सम्बद्धर ' (दश) नामक काले सम्बद्धमार हाच क्रमाचा सब प्रते करके बरस रमको तीन बार किमाना वहा, तब करी मच्छा विसा गया । अगुडमेरी कारी एक पूराय कर पराष्ट्र बार किना की, तथ बने संतीप पूछा कीर नियमन बच्नी पुलब नी कार किनी। हेस्ती बहुत बर्पानक प्रतिदिव १९ des feuras ver : me ar anen ach ach ma mint m, nu feura केने के का रचनताच काने बताना या, चीर वन इसमें जी वन बागा था सब गरिनका सञ्चय काहे काला था । वं० ईत्रारचान्य विद्यासागर रिमाराम्य क्रम्ब रा बंद बाम व बीर संब दामवर्षे वा तो का बरमे में का भावन करामा नारि वस्त बाचकाक काम किया करने थे। श्रुपणे 'श्रीने era etrang i a de ma altum ara from an afinerarya with their to ares arough and on fired any or fit " Th at ga ga et till er att mer li berter frumt f fo fie bet gur BARR LITE WHE TE STOLL THAT & IS AT MIN HELT OF THE P. A THE PART OF THE PART AND A PARTY AND A PARTY OF

the date of the term of a good that the district of the control of



स्यावसम्बन्धाः

जिष्टमाके हारा जमको जो योड़ीयो आमदबी होती थी वह भी जाते तो और यह मित्रहीन हो गया। बुछ वर्षीनक यही हाल रहा। परन्तु यह मिद्राल, जिस्पर हाँदे हमने वट सहब करनेपर भी वरावर वटा रहा, योदे भीरे आमानि निरोड़माँम पित्रह होता गया और पद्योग वर्षके वाह तो सर्वमाधारणने उसे एक वैज्ञानिक निद्राल मानक प्रकृत वर लिया।

चेचक (शीतला) से वचनेके लिए डीकेके अनुसंधानको प्रकाशित करने और स्थापित करनेमें बाक्टर जैन्द्रको जिन कठिनाइयोंका मामना करना पश् था वे भी हार्वेकी कडिनाइयोंने कम न थीं । उनमे पहले बहुत मनुष्येने गोयन-शांतला देशी थीं और खालाओंकी यह चर्चा सूनी थी कि जो कोई गायके बनकी शीतलामें पीड़िन हो जाता है यह चेचकमें वचा रहता है। इस बातको छोग एक तुच्छ गुप्प जानकर सर्वधा निर्धिक समझने थे और उस समय तक कोई भी इसकी सीज करना सार्थंह न समस्ता था जवतक कि संबीगवरा जैनरका ध्यान इसकी श्लोर न गया । यह युवक उस समय विद्यार्थी था । एक प्रामीण लड़की अपने मालिककी दृकानपर द्वा हेने आई थी । उस समय उसने जो कह कहा उसमे जैनरका ध्यान इस और आकर्षित हुआ । जब चेचकरा नाम लिया गया, तब लक्कीने कहा, " में इस रोगसे ब्रस्तिन नहीं हो सकती, क्योंकि में गोयन-शीतलामे पीड़ित रह चुकी हूँ।" इस गतकी ओर दीनरका भ्यान तुरंत ही जाकरित हुआ और वह उसी सम-ससे इस विश्वका अन्वेषण करने तथा देखमाल करनेमें छम सबा । जब उसने अपने मित्रोंसे गोयन-शतिनाडे रोगनाशक गुणींडे सम्बन्धमें अपने विचार प्रकट किये तब वे उसका उपरास करने लगे और उसको अपने समा-असे निकाल देनेका भय दिम्बाने त्यो । सौभाग्यका जैनर लड्नमें जान हंटाके यहाँ विद्याध्ययन करने लगा । एक दिन जब उसने उनके सामने अपने विचार प्रस्ट हिये तम नान हटरने थोरथनाएणे उत्तर दिया हि " कवल विचार है। व करें।, चेष्टा करें।, चीरज रक्तो और बार्गकोम शैक काम करें। " हम समानियं जैनरको द्वादम वैधा और इसम उसके राथमें विधिपूर्वक स्रोज करनेकी सची कला आगर्ट । इसक बाद वह घुवा करने भीर इस विषयमें निरीक्षण आर अनुभव करमें ही इच्छाचे अपने घर चला आया । इस कामको कर छनातर बीम वर्ष तक करना रहा । उसको अपने अनस्थान पर ऐसा

साधनीकी सहायता और सुयोग ।

विश्वास या कि उसने स्वयं अपने विचार एक पुस्तकमें भकावित किये और उसमें उन तेर्मुस मनुष्योंको सफलतापूर्यंक टीका छगानेका हाल छिया, जिनको फिर किसी विधिसे चैचकका रोगी यनाना असंभय था। उसकी यह पुस्तक सन् १७७८ हुँ० में प्रकाशित हुई।

प्रथम तो इस अनुसन्धानको और ध्यान ही न दिया गया और फिर इसका बरुपूर्वक विरोध किया गया । डाक्टर जैनर टीका खगानेकी विधि और उसके परिणाम शाक्टरोंको दिखानेके लिए लंडन गये;परन्तु वे एक भी डाक्ट-रको उस विषयकी परीक्षा करनेके लिए उत्साहित न कर सके और स्वर्ध ही तीन मासतक प्रतीक्षा करके अपने पर लौट आये। लोग कहते थे कि वे तोगतमंत्रे रोग उत्पन्न करनेवाली चीतको निकालकर मनुष्योंके शारिसमें प्रवेश-कराके उनको पदा जैसे बनाना चाहते हैं । इससे वे उनके तरह तरहके हास्य-पूर्व विश्व बनाते थे और उनको गालियाँ देते थे। पादरी लोग रीका लगानेको रीतानका काम समझते थे। गाँवके लोग तो छाती रोककर कहते थे कि " जिन बचोंको श्रीक लगे हैं उनके मुँह बैलके मुंहके समान हो जीवगे और उनके हो फोड़े निकले हैं ये प्रकट करने हैं कि उन स्थानींसे सींग प्रतनेवाले हैं! उनकी सरत गायके समान और आवाद साँढके दहारनेके समान हो जावनी ! " परना टीकेमे वास्तवमें साभ होता या, इमिटिए घोर विरोध होने-का भी होंगोंको धीरे धीरे उसपर धदा होने हगी । एक प्राममें एक सज्ज-नमें टीटेंके कामको आरंभ किया। यहां पहले पहल जिन्होंने टीका लगवाया जनपर होतोंने पायर फेंके और बुछ दिनोंतक सो उन्हें घरके बाहर न निक्र-हते दिया । दो अमीर खियोंने, जिनका हमें आदरके साथ स्मरण करना चाहिए हिम्मन करके अपने बढ़ोंको टीके छनवाचे और इससे और छोगोंने बहुत बुछ इठ छोड़ दिया। बाबहर छोग भी भीरे भीरे मान गये और लब टीकेका महत्त्व मात्म ही गया तब कई दावटरीन तो जनरके इस अनुसंधानकी अपना ही बतलाना चाहा । परन्तु जैनरकी ही अन्तमें विजय हुई । सर्वसा-धारणने उनका भारत किया और उनके कार्यका प्रतिकाल दिया । ये अपने वेश्वर्यके कालमें भी ऐसे ही नग्र रहे, जितने वे अपनी अपसिद्धिके समय थे। लोगोंने उनसे अनुरोध दिया कि " आप शंहनमें चलकर रहें। वहीं रहकर आप देर साल रापा वार्षिक पैदा कर सकेंगे।" पान्तु उन्होंदे उत्तर दिया





स्वायसम्यन ।

श्रील-विद्यालकारक समार्क मनारांत सर रोडेरिक मार्थिसताको कुठ वर्ष हुए रायार्थ डोक मामक मानुष्य मिक्का को एक मोर्थर कमा करता था। चलने पूर्मालकार्यो न्या रिक्का का अब रोडोर कार्यामन कमार्थन रामके मार्थ-पर मिले, जार्थे वह हुँट देखारि प्रकार करांनी पुत्रत किया करता था, का उसने अपने मार्गक स्वक्रपांस बुद्धांनी सुराने क्या पूर्मोलियातांकी बार्व स्वत्यह भीर इस सामके के पूर्ण करांनी सुराने क्या पूर्णोलियातांकी बार्व अध्यक्षा मिलनेश्य मार्गम पूर्ण मार्गम क्या के थीं। मिक्र पुत्रनेश रामकेशियातां की स्वार्थने प्रमान क्या कार्यक के थीं। मिक्र पुत्रनेश प्रकारणां को स्वार्थने प्रमानियातां हो जार्थ है, क्यिप प्रवादातांका की उस केलांका आवकार है। सर रोडोरिकने बहुर है कि "में यह जावकर बातां स्वति हमार्थन कार्य के स्वार्थने स्वस्ता प्रवाद मिक्स क्या के स्वार्थन की जावार्यो रंगा था। उसम जान के से श्रालंभ दम्य पुत्रा मार्थने उसके उसके कीरोंसे मिक्र के भी स्वार्थन कराने सामने कराने विस्ता देखा थे। इस उसके कीरोंसे मिक्र के, भीर कुठ उसके ब्याने सामने कराने विस्ता देखा है दिने थे। ये मार्ग्य कराने तुन्दर सीमार्थ व्यवस्ति में और उत्यर उनके

छद्वा अध्याय । <्रञ∞्⇒ शिल्पकार ।

" यदि तुम दिनी दृत्ही चीजडो महत्वपूर्ण गमम कर प्राप्त करो, परन्तु वह होपमें आनेपर महत्वहीत गिद्ध हो, ती और आगे कही, तारीक नो चेष्टा करतेमें है, स कि गिद्धिसे ।"—आर एस मिननीज।

''विद्रे पुन पुनराप प्रतिक्रम्यमाना ।

प्राथमित्रमत्त्वा न पार वजानः। " र—न प्राप्तः पित्रोडकर स्थानाय परिधा क्रिय विवा पुत्रः श्री नहीं हा सकता। पित्रि जाह कथा बीतास्थवा हाम हो चार और हाह कथा हा, विवा करून प्राप्ताक उसम होता नहीं मिल सकती। एक मृत्यर चित्र शीचने

े पार पर प्रधानिक आजपर भी उल्म पुरुष काम करना नहीं छाडते ।



स्थायसम्बन् ।

हैंग्लंडके अर्थत मासद शिलाकार भी ऐसी रिपातिमें पैदा हुए हैं जो शिलांशियक प्रतिमाको उन्नतिके दिए विज्जुल मामान्य यो । शिन्तवरी भीर पेक्तनेक रिता इन्नाहे थे। वैरी एक मल्लाका लड़का था। रोमने भीर जोन्स वर्द्र ये। नार्थिकोट परीसाव था। जैक्सन दर्जी या। टर्नर नार्द्रश लड़का था।

तार जोगुआ रेनाल्सकं समान, माइकल प्रॅंगोलीको भी उद्योगसाधियों बढ़ी खदा थी उत्तवस विधान या कि वाई हाय पताई आयुवास टीक दिंग क्षान करें तो मानकमें नाई जैंगी विश्वतन कराना उठे, उत्तवी हुन्हें प्रतिमा प्रपारत सीची जा करती है। वह स्वयं दिना धवारिक परिभा करतेवाला था, और अपने सहयोगियोंकी अपेक्ष अपिक समयक कप्रपादक कर सकता था। इसका कारण वह था कि वह बुंदु में तथाराम भोजन करता था। उन बढ़ अपने बार्म क्या दिना था, तब बने दिनमें योदी तोई भीर ताराहणे आवादकला होते थी। यह बुद्ध करके आपी तार्मते अपना कार पुरू कर देना था। रात्रहों वह अपनी दोगोंमें मोमकणी लगा कम खात हंत्रण करना था। कमों कभी बह इनना यक जाना था कि उपने उपने इत्तर वह तथा था। स्वानकों वहने वह स्वतं प्रकार था। और जोंदी



<u>स्यायसम्बन्धः</u>

खगी, इस काल वह अभिमानी शोकर विशादने खगा। यदि ऐसा न हुआ होता, तो यह और भी बद्दा रिप्तकार बनता। उसकी क्यांति यथारे, अस्त्री हो गई थां, नागांव वह अध्यवन, प्रयान और पेशांत्र प्राप्त न हुई थी। यद रिचाई विस्ततन बाल्क था, नव अपने निराक्ते प्रस्ति होसारीगर

तिका संवादर हिमा, अध्ययन विश्वा, पार पारध्या किया आह पूरण नव कीनोलीं में प्रितिस्पर्देश विश्वास हुआ। स्वर जोड़ामा देवालदेश विश्वास हुआ। सुर जोड़ामा देवालदेश वावस्वादमी भागा पह प्रकार प्राथा पर किया हुआ। सुर जोड़ामा देवालदेश वावस्वादमी भागा पर प्रकार प्राथा हुआ। इस्तर क्षां के प्रवाद करी में वावस्व प्रवाद का हिमा दारा प्राथा हुआ। इस्तर क्षां के प्रवाद कर में प्रवाद कर में प्रवाद कर मार्था भी स्वर्ध की मार्थ कर मार्थ और वह विश्वास कर मार्थ । मिल्य के प्रवाद कर में प्रवाद कर मार्थ के किया कर किया कर प्रवाद कर प्या कर प्रवाद कर प्या कर प्रवाद कर प्या कर प्रवाद कर प्रवाद कर प्रवाद कर प्रवाद कर प्रवाद कर प्रवाद कर



स्पायसम्बन् ।

और कभी कभी असफल होते थे । उन्होंने रंगोंके भरनेमें बहा परिश्रम किया, परन्तु उनकी उल्लाहित करनेवाला कोई न या । सन् १८७३ में मिन्दर चिमहोम. जो महामदी शिल्पशालांके अधिवाता थे, दावनकीरमें प्यारं । रिविमांके कामको वेलकर और यह आनकर कि उन्होंने चित्रकारीकी शिक्षा किसी इसरेसे नहीं किन्तु अपने आप प्राप्त की है-उनकी बहुन आश्चर्य हुआ । उन्होंने यह सोचकर कि 'यदि रविवर्माद्या साम संसारको त दिलावा जायमा तो यह स्वर्थ जायमा' स्वितमांसे कहा कि महाससी प्रवर्शनीके लिए तम एक अच्छा चित्र वैयार करी । इचर टावनकोरके महारात्र रवित्रमांकी योगयनाको जान चुढे ये, इसलिए उन्होंने इस कामके लिए स्वि-बर्मोको यथेष्ट आर्थिक सहायता देता स्त्रीकार कर लिया । कई सहीवे परिश्रम करके रवित्रमानि एक चित्र तैयार किया । यह चित्र एक मेर-महिलाका था मी अपने वालानो चमेलीके कुलाँके द्वारमे र्मृष रही थी । विश्वने प्रदर्शनीकी शोजाको द्विगतित कर दिया । उसकी वर्षा मर्शमा हुई और रवियमाँको इसके उपल्ह्यम प्रदर्शनीकी औरमे एक मुक्यंत्रक भेद दिया गया । हममे उपछ उत्साह बहु गया-उन्हें विधान हो गया कि मैं भी बुछ कर सकता है। दसरी बार उन्होंने एक तामिन्द्र-महिलाका थिय बनाया । यह भी भच्छा बना आर इसके उपलक्ष्यमें भी उन्हें एक पर्छ मिला। इसके बार उन्होंने अपना 'शाक्तका-पत्रकेलन' नामक समिद्द चित्र बनावा, जो शोगींको बहुत ही वसन्त भाषा और महायह गवर्तने उपे माने लिए स्थार दिया । अव बरहोंने पीराणिक निय बनाना गुरू वर रिपा बिनक द्वारा दिग्युभेंकि पीराfor era कोर्गोद्दी कॉलोड़े सामने मनीयमें होने करें। इसी ममन मा री. माध्यापने उनदा वृक्ष वित्र वर्धाश-मरेशको दिव्यमाधा । उसे देशका सही-राज्ञ बर्ग दी प्रमुख रूए । दर्शने अपन राज्यानियेष्ट्रे अपनार पर राज्य सांची आर्माचन दिया भीर उनका बड़ा सन्दार दिया । इसी तरह उनका वरिषय क्रमुन्दरशमे श्री हो गया भीर प्रश्नमें वे भारनवर्गेंड अपने गामवर् वर्त्रीक्य क्यिकार हो गये। आरनको उनक वियोध भनियान है। इस सरह पद मार्थिय बल्लक दिना दिनीही नहायता द बाने भार ही तिथा राक्त और जिल्लाम परिवास करके हमार सामने एक हमाम उत्ताहरण होड त्याः हतदा अनुदास दरद वर्षेद राष्ट्र यामापाट यम्बोराज्याय अदि अन्य स्ता चित्रपट स्वाम नेश्नीत्य द्वार स्ता है।

चेंक्स नामका संगताश उद्योग और धेर्पको कार्पसिद्दिका मूलमंत्र समझता था । वह स्वयं इस मत्रकी आराधना दरता या और दूसराको भी इसके अनुसार चलनेकी सम्मति देता या । यह यहा दयानु और प्रेमी पुरुष था, इस कारण अनेक उत्साही पुषक उसके पास सम्मति और सहायता लेनेके लिए ताते थे। एक बार एक सप्टकेने उसके घरका दरवाजा सदसदाया। क्षीरकी खुटखटाइट मुनकर वेंक्सकी दासीको क्षोध आगया । उसने एउकेको मुद्र प्रमहादा और पहाँसे चले जानेके लिए वहा । इतनेमें शोरगुरू मुनकर पंक्त हार्च बाहर भागवा । उसने देशा कि एक छड़का भागे हापमें एक वित्र लिए तड़ा है और दानी उसपर छाल-साती हो रहो है। एठा, "छड़के, मुझमे क्या बाम है !" उसने उका दिया--"मैं भापके पास हस लिए आवा है कि आद हुपा करक मेरी सिफारिश कर दें और मुझे शि^{हन}विद्यालयमें चित्र-विधा सीयनेके लिए भारती करा दें।" वेंन्सने रूप्येसे कहा--" उत्त विदालयमें भरती होना महत नहीं है। यह मेरे हायकी बात भी नहीं है। पर तुम्होर हायन जो चित्र है उसे सी मुझे दिवलाओं। " चित्रको अच्छी तरह देगका वेक्सने बहा-" एडके, अभी उक्त विद्यालयमें भरती होनेके लिए बर्ज समय चाहिए। इस समय घर शाओ और भरनी पाउरालाका अध्यास जारी रक्तो । में ममसना है तुम इस चित्रको स्थामण एक महीनेमें अधिक अस्टा बना होगे, उस समय-तेपार हो जानेपर-मुझे यह दिगला जाता ।" स्ट्रा धर चला गया और उस चित्रके समार करनेमें परिश्रम करने स्त्रा । पहलंदी अवेक्षा हुनी मेहबतसे उसने यह विश्व तैयार किया और महीनेके अन्तर्मे वेंदमको जावर दिग्याया । विद्य पहलेकी अरेका अच्छा या; परन्तु वंत्रमने उसे फिर हीय दिया और बह दिया कि " और भी परिधम करो, और भी अभ्याम बड़ाओं। " एक सप्ताहके बाद सहका किर उसके घर गया । इस बार उसका थिय बहुत अच्छा या । वस्यते बदा-" लड्के, प्रसस हो: माहम रम । यदि तू जीवा रहा तो सेमारमें अपना नाम कर जाएगा।" केंग्सरी भविष्यद्वाची पूर्त उत्तरी। इस रुद्देश नाम मुख्येखी या । यह वरा बामी विश्वकार हुआ।

्रें तथेनुटी सीतिनी बामका एक और प्रमिद्ध विश्वकार ही गया है। उसका बीवनपरित्र कहा ही विवक्षण है। यह केवल विश्वकार ही स या।

क्यायम्दरस्यम् ।

विनिर्दाय निरामी यह इस्ता अभीनक बनी ही थी कि यह बीन्ती बाता मीर्ग, इस निर्मा मीर्गात उपके तीस्त्री भी कुछ समय कराता स्तु, राम्यू बातामी उसे यह स्ताम प्रमान् न मा । तिम्बरियांची और दी उपकी पित्रम अभिन्ती थी। जब नह क्योरिंग आरासी और आदा, स्ता इसने साइयम निर्मा थी। जांच नह क्योरिंग आरासी और आदा, स्ता इसने साइयम निर्मा थी। जांच निर्मा विचारी विचारी देशा और दूसनी तिम्मुक्ति करात विचार विचार क्या मान्यों के विचारी होते पूत्रम भी नदी साम तम तम्ब दिस्ता स्ताम के स्ता बाने आरा वीम्या राज्य कृत्य के स्ता साम तम तम्ब दिस्ता का साम कोने साह वीम्या राज्य बा सुन्त के स्ता भी हम्पात्र का हम्मुक साम काने साह वीम्या राज्य की सीर्था कृत्य के स्ता की निर्माण्य की सामच्या माने साह दीक सो में के साम कर्य का उसने कि निर्माण्य की सामच्या साम दी कर ते का से का सी

क्षान्त्री वार रोजाव उसका क्या साध्यक हुमा । वार्थनुत वीर्यो उसे सुका-क्या बाम काम कीर बारा वार्यान्त्रीय दिल काम कारी मीडा राम दिला। वार्यान्त्रीय बारी मानी दिलामीय कामची काह्य और उसकी वार्यानुष्टी वीर्योज्य विकास कारी रामी वार्यान वार्यान्त्रीय का वार्यान्त्रीय सामें और सोता, मोदी, पीता भाटि पर सदये महत्त्व माम महता था। मीतेका, भीर मुहरतारी तथा श्रीसीं मनवार्गात्त्रा महत्त्व मो यह बहता था। जो हो यह दिली मृतात्वी दिशी माममें महाई मृतता था, तो हो संक्षण पर होता दि भी लससे महत्त्व माम महिला। इस सहत् था दिशी मृतात्वी समावता पह्म मतारोमें, दिशीको जिला मानेमें भीर दिशीको जनस्वत पहुंचेत माममें महत्त्व था। मानवार्गे उत्तर्वे स्पयनायका ऐसा बोई भी भंग माम जिसमें यह इस्सोंने आंग महत्त्वें इस्टा म स्थात हो।

हीत्-वीमें को उनेम भीर उप्पाठ था, उमीक बाग पर इपना नितृत शिएकार हो गया। पर बड़ा परिसमी था। कुछ म नृप्त वाम निरम्प ही विधा बरता था। वरत बरावें किए यह हमेगा नियार करता था। यह बमी कमी होगको पणा जाना भीर वारों में मुझा, होग, भीर- क्यों मूम दिरहर कि करों हमें गूड भागा। पीनम भीर परिसमें भी यह बमी बभी हिल्लाई देता था। वह भपनी बामिंद माय पोट्यर ही बरानाथा, हमसे अपने साथ बहुत्तमा सामान नहीं हो जा मकता था। भगप यह नहीं आता साथ पहें जमें भपने भावराथ भीजार क्यों बनाने था। यह कर ही अपने विधाय हो पर भीरत बरता था। अपने हाथसे ही पर सकता बना हो हो हो हो हो हो हो हो हो सहाय हो जाता है कि उसमें सारी कारीगरी उसमित्र है। ऐसा नहीं कि एक सनुप्यने उसका होया—स्परेता बनाई हो और हुससेने उसी होंचेंक अनुसार क्यान थी हो। होटीसे होसे बीज—कमरपट्टेश बक्तुआ, बहन, सुहर आदि भी-उसके हार्योम आवर मुन्दर बारीगरीवा मसूना हो वाली थी।

सीहती हरतर्बाताल और शीजनाके लिए बहुत प्रभिन्न मान्य मा । युक्त सुनारकी लहन्नीके एक पाँदा हुआ मा । उसे पानेके लिए एक हानरह उसके पर आया । मेलिनी भी पहीं पहा मा । उसने देखा कि हान्दराया भौजार पेत्रील आग भए हैं - उस समस्यके हान्दरोके भीजार प्राप्त ऐसे ही हुआ करते थे- अन्य समन्यक कार हान्दर सहिए। अन्य समन्यक कार हान्दर सहिए। अन्य समन्यक कार हान्दर सहिए। युक्त कहन सम्पर्त स्थान करते सम्पर्त साम्यक कार हान्दर सहिए। युक्त कहन सम्य

... 3

दुष्यम् छेवर एक नक्ष्मा तैयार कर लिया । तित्त्व असी सक्ष्मये बारदाने इस शहबीके फोहेका सक्ष्मलाएर्वक चीर दिया । सैलिजीने अनेक उत्तमोत्तम सूर्वियों बनाई हैं । इसमेंने सूनाती हुन्द्रदेव

सांक्रीन अने के उपाधीपत सुनियी कहाई है। उसमें भे चुनारी इत्युच्य (त्रिरिटर) की चौरीकी सूर्ति बहुत ही ब्रिट्स है। वर्षियन देशकी कैंगेडी सूर्ति भी उसमें क्षीर्तिकी बदानेवाण है। यह सूर्ति उसने क्योगिके शहर क्षामीके नित्यु बनाई थी।

जब उनने गोर्गणनाई मूर्निका वहना बनुता भोमका बनाका हाइप्पा-हक्को दिल्लामा तब उन्होंने तिमय बनाये कह दिया कि इस नमूनों की सोंगों बाल ने सामंत्रत है-चौरी दूनां बांगों सहीं उठ गर्का। वह मुन्दर नैटिनिको भोगा था गया। उत्तरे तत्त्वाल ही गोडण कर किया कि हैं इसके बनायेका केलक मत्त्रत्व के ब करेगा हिन्दू हुने कारकर ही बेट्टिया। इसके बनने निमीध मुनि ने निमा की भीर होंगे आपना मीने देहर यका विधा। इसके बाद उत्तर उत्तर सामें बद्दाबर उने केल की बता विधा त्रीय मूर्गि यह बनाया चाहरा था। इस मोनके क्यार उनने कुछ कराया हो सामें कुछ इस उत्तर मार्गिको मीर्गिक स्वार प्रमाने साम दिवस वस्त्या की चार्या की दिवस कम मुर्गिको मीर्गिक स्वार करने बोर्गों साम दिवस वस्त्या भीर सिर्गाक संतर्भ त्रीया का क्यार सम्मा सम्बन्ध स्वित्य स्वार स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ

जिस भिट्टीमें बह मूर्ति दलनेवाकी वी उसके तीने एक गर्दा बनाया गया था। इस गर्देमें बीमेडी चार्चे रल दी गर्दे और जनका विचला हुना रस बाहिक सन्तिर्विक द्वारा मीचिकी बीसमें जानेका चल कर हिचा गया।

यानु प्रापाने के निन्दु स्वाधीन बहुक्या है उन हक्द्रा कर निका गया था। अपूर्धि वक्ष आग अगरे गरे नव समेर अगर आग आग हिन्यामां स्वाधीन मान्या कर्षाया हिन्यामां स्वाधीन मान्या क्षित से क्ष्या क्ष्या क्ष्या हिन्या हिन्या है स्वाधीन स

34

पाई पर पह रहा। मुठ कोम उसवी चारपाईक भागपास बैठे हुए इस दुःसमें सहानुभूति प्रकट कर रहे थे कि इसी समय एक मीकरने उसके कमरेमें भारत पहा-मद काम किमए गया, उसका सुधरना कठिन जान पहता है। यह सुनते ही सिटिवीची जीत भागया। बीमारिकी परवा न करके वह सुरस्त उठ सदा हुआ और भट्टीके पाम घाट दिया। बाही जावत देगा कि भागके कम हो जानेसे पास पास है।

एक वहीतिक वहाँभे उत्तरे मूर्ण लकहियोंक हेर उदया मैंगाया और उत्तक आगाँ हांकना हारू कर दिया। आग पिर प्रथम उटी और पानु मत्ने लगी। परन् आग कि पान मत्ने लगी। परन् आग कि पान मत्ने लगी। परन् आग कि पान मत्ने लगी। परन् अगाँ भेर मेर भी बस्त रहा था। आगकी लपटमे बचनेक लिए सीलिनीने कुछ मेंने और कुछ पुराने वर्षों भेगायां जिनकी ओटमें राहा होकर यह लगातार लकही हाँकने लगा और कभी लोहेंची एहाँन तथा बनी लग्ने पेतिनी पानुको चलाने लगा। निदान पानु गल गई। हुनी समय एक भयंबर आयाज हुई और मिलिनीकी और निर्माण पान कर जालामप होति किर गई। दुर्भाषमे भदीका हैकना पट गया और एक उचालामप होति किर तह मुर्भाषमे भदीका हैकना पट गया और लिल पहुँ कि साम निदान एक उचालामप होति किर गई। दुर्भाषमे भदीका हैकना पट गया और अगत पहुँ उसे सींचे और वहानी है सिलिनी पीन्य सहने लगी। यह देगा भर उनको उसने महीने दल दिया! जिदान पानु वर्षेष्ट बेमसे पहने लगी और परिवस्तकी यह मुन्दर मूर्ति वल गई। पाठनोंको बाद होगा कि पीलिमीने भी हसी सरह अपने परके अमया- वक्षों भदीने हिंग हैया था।

जान पर्टेक्सरमेन मामका एक और प्रसिद्ध शिल्पकार हो गया है। उसका पिता मिट्टीन साँचे पनाया करता था। पर्छेश्समेन पालकपनमें रोती रहता था-जममें पप्ती फिरते न प्रनता था और अपने पिताकी दूकानमें तिन्वोंने महारे थेटा रहता था। उसे पुस्तकें पड़नेका तथा चित्र सींचित्रका वहा जीक था। एक दिन यह एक पुस्तक पड़ रहा था कि पाहरी भिष्टुते उसका दूकान या आया। उसने लड़केने पुस्तकका नाम आदि पूछनेके पाह बना "यह पुस्तक पुरुष्ति पहनेके योग्य नहीं है। में तुग्ने एक और पुस्तक देशा अय पटा करना।" दूसरे दिन उसने मुश्मिद कवि होसरका एक

स्यायसम्बन् ।

काम्मोके लिए बनाई थी। जब उसने पर्नियमधी मूर्तिका पहला नमृता मोमका बनाकर ठाहुरसा-इक्की दिखलाया तद उन्होंने निश्चय रूपये कर दिया कि इस नम्नेको केंसिमें डाल देता असंभव है-कॉसेमें इतनी बारीडी नहीं उठ सकती। यह सनकर सैकिनीको जोश मा गया। उमने सन्बाल ही संबक्ष्य कर लिया कि में इसके बनानेका केवल मयान ही न करूंगा किन्तु इसे बनाकर ही होड़िंगा । पहले उसने मिट्टीकी मूर्नि तैयार की और उसे आगकी भट्टीमें देकर पढ़ा लिया । इसके बाद उसने उम पर मीम चहाकर उमे कि जैमा ही बना दिया जैमी मृनि वह बनाना चाहना था। इस मोमके ऊपर उसने एक प्रकारकी मिही चढाई और फिर उस मूर्तिको भट्टीमें रख दिया। इससे मोम पियल गया और मिटीके दोनों वर्लीके बीचमें काँसा बलनेकी पोली सगढ़ हो गई। इस मधार उसने साँचा तैयार कर लिया, अब मूर्तिका दाळवा बाकी रह सवा । जिस मिटीमें यह सूर्ति दलनेवाली भी उसके नीचे एक गडा बनाया गया था। इस गरेमें कॉमेकी चानुपें रस दी गई और उनका विवक्त हुआ रस बारीह बलियों हे द्वारा मैं बेबी पोलमें जानेका बान कर दिया गया । धातु गलानेके लिए पहलेहीने बहुनमा ईंधन इक्ट्रा कर लिया गया था। भरीमें जब भाग जलाई गई तब उसने इतना और दिखाया कि बूकानमें भाग हम गई और छप्परश कुछ माग जल गवा। इसी समय आँधी भा गई और मेह भी बरसवे रुगा। इसमे गर्मी कम हो गई और चार्चे व गरु सर्दी। सेलिनी घंटोंतक इंधन पर इंघन झेंकिना रहा और भागकी प्रश्वलित करना रहा, परन्त जिननी माँच चाहिए उनती बही पहुँच सकी। यह ऐमा यह गया और बीमार हो गया कि उसे भपने कार्यकी मिद्धियें सम्देह होने छगा।

दसने हाचार होका इस बामको शैक्तींके सुपूर्व कर दिया और आप चार-

दुकड़ा रेक्स एक नश्तर तैयार कर लिया । निदान असी नश्तरमे दाश्यने

सीर्टिनीने अनेक उत्तमीचम मूर्नियाँ बनाई है। उसमेंने यूनानी इन्द्रदेश (जुण्टिर) की चौत्रीको मूर्ति बहुत की मामद्र है। पूर्मियम देवकी कॉसकी मूर्ति भी उसकी कीर्तिको बतानेवाली है। यह मूर्ति उसने क्लोरेंसके सहस्

उस लड्कीके फोड़ेको चक्छतापूर्वक चीर दिया ।

पत्यह पर्पकी भवस्थामें परीवसमैन सरकारी कलाभवन या रायल प्रेवाहे-मीमें भरती हो गया । यदापि वह औराँने अधिक मेल-जोल रखनेवाला च या, संयापि सारे विद्यार्थी उसे जान गये और उससे बड़ी बड़ी शाशायें करने लगे। उनकी भाशायें सफल भी जल्दी हुई। पहले ही वर्ष उसे एक चाँदीका पदक मिला और हसरे पर्प यह सोनेका पदक प्राप्त करनेके लिए परिश्रम करने लगा । सभी लोगोंका यह विश्वास था कि सुवर्णवदक प्रलेक्समीनको ही मिलेगा: क्योंकि योग्यना और परिधाममें उसमें पदकर कोई न था। पान्तु इस पार उसे मकलता न हुई, यह पदक ऐसे विद्यार्थीकी मिला जियका कि फिर कभी नाम भी न सुन पड़ा । युवा परीश्समीनकी यह अस-यलता उसके लिए उलटी लाभदायक सिद्ध हुई। क्योंकि परास्त होनेपर रदर्मकर्यी मनुष्य निराण नहीं होते, उनकी अन्तःशक्तिकी उच्चता चोट साकर और भी अधिक जोरामें बाहर निकल पड़ती है। उसने अपने रितासे कहा कि "महो समय दीजिए। अब भें ऐसे ऐसे काम करूँगा कि जिनकी प्रशंसा कर-नेमें स्वयं रायल ऐकाडेभीको अनिमान होगा।" इसके बाद उसने हुना और चीगना परिधम करना ग्रस्ट कर दिया। उसने कोई भी सद्धीर उठा म रक्षी । चित्र बनानेका काम यह रुगातार करने रुगा और धीरें। धीरे उसने बहुत अर्फ्डा उप्रति कर ली। इसी धीयमें उसके विताकी आर्थिक अवस्था बहुत खराब हो गई। मिट्टीके मींचींके व्यापारसे उसका निर्याह होना बटिन हो गया। पुवा फ्लेक्समेन नहीं चाहता या कि में अपने चित्रविद्यांके पारेश-मको पुछ बम बर्धः परन्तु उसने हृदयको रह रक्ता और स्वार्थत्यास झाके अपने अभ्यापके समयको कम करके रिताक बाममें सहायता देनां शुरू कर दिया । उसने होमरके काम्पको फेंक दिया और उसके बद्दले अपने हायसे कती है ही। " मेरे पिताका और मेरे सारे बुट्टम्पका पोषण जिस स्थापारसे हो, यह गुरो शुनीसे करना पादिए; इस बातकी विन्ता करनेकी बहरत महीं कि यह स्थापार किननी हरूकी किसमका है। जैसे यने सैसे दरिद्वताकी याम म पाउकते देता ही मेरा काम है।" व्यापारके सम्बन्धमें यह अकसर पदी बहा बरता था। बहुत समय तक उसे हुसी तरह अपना समय क्रीना पड़ा, पान्तु इससे इसे लाम भी हुआ। यह स्थिततापूर्वक काम कानेका आही हो गया और उसमें धर्मगुणकी हुद्धि हो गई। इस तरह मदीनिग्रह

स्यायसम्बन्धः ।

वीररसपूर्ण काम्य छाकर उसे दे दिया । छड्का उसे बड़े पावसे पड़ने छग उसने मन-ही-मन संकल्प किया कि मैं भी इन पीरोंके चित्र शंकित करिंग बाल करेंगा।

जैसी सब पुरुकों की प्रथम चेहायें होती हैं चैसी हो एकेससीनकी एकां भी हुई। जब ने एक पितारिक दिलाई महि तर उसने उससे बड़ी ना भीड़ि सिकोंदी। एक्तु फंकेससीन हमताहम सा हता के तर के सो प्राप्त भीड़ि सिकोंदी। एक्तु फंकेससीन हमताहम हमताहम के तर प्रथम के नीर विश्व करा मेंने निक्तर परिक्रम करता हहा। उसने चीनी सिद्धी, मोम और मिरी सिकोंने नानोंने अपनी वावजुदिका उपनीय किया। उसने बनावें हुए सिकोंने नानोंने अपनी वावजुदिका उपनीय किया। उसने बनावें हुए सिकोंने कानोंने अपनी कियाने अपनाहम के सिपी कियाने कियान

पुन्द्रह वर्षकी अवस्थामें परीवसमैन सरकारी कलाभवन या रायल ऐवाहे-मीमें भरती हो गया । यद्यपि यह भौरोंसे अधिक मेल-जोल रखनेपाला म था. समापि सारे विधार्थी उसे जान गये और उससे बड़ी बड़ी भाशामें करने रूते। उनकी भारायें सफल भी जल्दी हुई। पहले ही पर्य उसे एक चाँदीका पडक मिला और इसरे पर्य यह सोनेका पड़क माप्त करनेके लिए परिध्रम करने ख्या । सभी खोगोंका यह विश्वास था कि स्वर्णपदक परीवसमैनको ही मिलेगा: क्योंकि योग्यता और परिश्रममें उसमें बदकर कोई न या। परन्त इस बार उसे सफलता न हुई, यह पदक ऐसे विधार्थीको मिला जियका कि फिर कभी नाम भी न सुन पड़ा । पुषा परीवसमैनकी यह अस-फलता उसके लिए उलटी लाभदायक निद्ध हुई। बयोंकि परास्त होनेपा दुबसंबद्धी मनुष्य निराश नहीं दोते, उनकी अन्तःशिकती उष्णता घोट खाकर और भी अधिक जोशमें बाहर निकल पहनी है। उसने अपने पितासे कहा कि "महो समय दीजिए। अब मैं ऐसे ऐसे काम करूँगा कि जिनकी प्रशंसा कर-भेमें स्वयं रायल प्रेकांद्रभीको अभिमान होगा।" इसके बाद उसने दना और चीतुना परिधम करना शुरू कर दिया । उसने कोई भी सद्देशर उठा न रश्ची । चित्र बनानेया बाम यह खगातार करने लगा और धीरी धीरे उसने बहुत अच्छी उद्यति कर की। इसी बीचमें उसके पिताकी आर्थिक अवस्था बहुत खाब हो गई। मिहीके सींचोंके स्थापारमे उसका निर्वाह होना कठिन हो गया। युवा परेक्समेन नहीं चाहता या कि में भएने चित्रविद्याके परिध-सको कुछ कम करूँ: परम्यु उसने हृदयको रह रक्ष्या और स्वार्थन्याग करके अपने अभ्यातने समयको कम करके विताके काममें सहायता हैता शहर कर दिया । उसने होमरके कारयको फेंक दिया और उसके बदले अपने हायमें बर्सा ह हो। " मेरे पिताका और मेरे सारे बुटुरयका पोपण जिस ब्यापारसे हो, यह गुरा सुर्वामं बरना चाहिए, इस मातका चिल्ला करनेकी अस्तत नहीं 14 पर स्थाप र विजना हरूका कित्मवा है। जैसे बने सैसे दरिहताकी ्र ज पत्रवज दला हा मर काम है। स्थापारचे सम्बन्धमें यह अकता ्रा १८ वरण भा बहुत समय तब उस हमा तरह अपना समय खोना .. १६सम् रम् लाङ ना हुनः यह स्थरनापूर्वक ब्राम करनेका हर राष्ट्र करेर उसम ध्रयरणवा बृद्धि हो सह । इस नग्ह मर्वानिधह

स्यायसम्बन्धाः

करनेकी कमरत पहले हो। उसे कटिन मालूम हुई होती। परलु अल्मों उसे कममे लाभ बहुत हुआ।

मीभागमे क्षेत्रमीनके विप्रचातुर्वकी बात जीतिया बेतपुरके कार्ती तक जा पहुँची। उसे चीनी मिटी और मिट्टीके वर्तनी पर अच्छे अपी विजीहे बसूने बनानेके लिए परिवरमीन जैसे पुरुषकी बड़ी आही जरूरन थी। उसने इस युवा विश्वकारको अपना सब काम सीप दिया और यह बड़ी बुशलनाये बसे करने लगा । परिश्वमीन जैसे भुजल कारीगरको मग्नी इस सरहका काम नुष्छ मान्द्रम होता होगा, परन्तु चानत्वमें देशा त्राय तो यह ऐसा न था। मामुन्ता ज्याखी, मराहियाँ अथवा हेमें ही अन्य होरे धर्नेनींवर जो विद्यहार्य किया जाता है इसारी समझमें बड़ी इन स्थापारका सचा काम करता है। क्योंकि को वर्तन लोगोंके वितिदिनके काममें आने हैं, सान-पिने उटने-बाने हर समय जिल्ही जमरत पहली है, उनके जपरके विश्व लोगों है लिए हम रियाची शिक्षांके साउन वन जाने हैं, इतना दी नहीं बरिक अनकी निजी नुवार ही शिक्षामें भी वे बहुमूच्य सहायता देनेपाले ही जाने हैं। जिस विश्वन कारको अपनी उन्नतिश्री बहुत बड़ी आकांशा है यह कोई आहि बहुपरिश्रम-माध्य बहुम्ह्य बात बनानेकी भीता इन छोडी छोडी चीचोंडी बनाडर भपने देशवानियोंकी अधिक स्थापशारिक लाम नुष्या सकता है। अपनी इन इति-मीने यह भगने नमाम देशवानियों हो गुण्याप शिक्षा दे सहता है, वह कि बढ़ी चीत्रकी नो कोई एंक चनाहा मरीह कर अपने नुर्फेस बस्तुर्वतर्में रख केता है कहाँ देव कनगासान में। देन भी, नहीं सदने। वेनहुद्दे समयदे बहुने मुरोरमें नीती भीर मिद्रीहे बर्गनीहे आहार भीर उनहे हमाडे पिय बहु भद्रे होते थे। हमहिण उपने हम तीनी बातीमें उन्नति बरनेहा हर मेहका कर दिया था। उसके इप मेहदाको कार्यम सीमन कार्येह दिए करिश्यप्रैतय जिल्ला कर सक्षा उत्तरा प्रयन्त हिया । वह वेत्रपुरकी समय ब्रावार अनक प्रकार प्रिशिष्ठ वर्गनींद्र नमून ग्रीप नक्षा बनावर हेता रहा को कर प्राचीन काएते थेए हिम्मानक जनान पर निवार कामा था । इस-सर्व वहनत अन सी भी हर है जो तीतरात और वाहतीय हम इ शहस बनाएं हत बारवरपार बारवांच यान्य है। एउटरीयरपार्थंच प्रविद्य दर्भन दिनके बार वापार्थक बाराबार्यम क्षेत्र राज्यक राज्येतवस्थार्थक क्रीवि

ारोंक समान, प्राचीन कारीगरीकी नक्छें बनागा। वहाँ जितने केंगरेज यात्री काने थे, ये सब
कार जो कुछ काम यनवाना होता या हमीसे
उसने होमर काहि विविधिक प्रत्योंके आधारपर
नाये और उन्हें बहुत ही मरने दानोंदर येवा।
गमगा १२) रू. मिलना या। परनु यह केंवल
रचवोंक और अपनी यनावो उत्तत बरनेके लिए
उसके पित्रोंचर लोग मुख्य होने एनो और उसके
हमी यमय उन्ने वह यह यह कादमियोंकी करकरण आदिक नमें स्विध यनाये। यह अपने यर
गथा कि हमी समय कनोंग और बर्गराची वर्णउस्त पना लिया।

ाम उसमे भी पहले पहुंच गहुं थी, इस बारण उसे ना बाम मिल गया । उसने नाई मैस्सपोहदबी बाद-- नाई जो फेर्ट मिनिस्टरमे बाज भी बध्द सामके साथ - नवी बॉलिबो मिस्स बर की है। उस समयके सबसे र इस मुर्निको देखकर बहा था '' यह होटा मनुष्य तो । ! ?'

ेमीचे सभामदीने परिवसीतके आनेका हाल गुला और मैन्सरीत्रकी मुन्ते देगी, तब उन्होंने उसे बहे आहरके त लिया और वह एक मल्यान पुत्रच बन गया। यह हवा-जिसने सीचे देखनेवालेकी ह्वामसे थिए बनानेका त्रकार्वास्त्रव्या आधार्य समझा जाने एगा और सास्त्र-ल्लाक हिंदा स्था । हमसे बहक और कोई हा अब हे हैं ते अन्य प्रकार के क्लाक्ष्र कर सिंदिन स्थान की

स्याचलम्बन ।

कार नहीं हो सकता जब तक कि यह रोम और व्लोरेंस बगरोंमें जाहर मा कल ऐंत्रीको भारिकी पनाई हुई भनभोल वस्तुओंको न देल के । रेनाक्ष इन विद्यार्गीको सभी जानते थे । इनका क्रिक करके परिश्रामैनने क्रा "सं मेरी हुण्छा मामी शिक्पकार होनेकी है। " क्लीने कहा-" बाव नामी शिक कार अध्यय बनेंगे और रोमनगर भी जरुर देखेंगे।" पतिने पूछा, " परा यह कमें हो सहता है ? मेरा तो आर्थिक अवस्था इतनी अध्यी वहीं है। पंत्रीतं बहा, " याम करी और मिलस्पपी बती । में इसम हर तरह गर बता देनेंड लिए तैयार हूं। में यह नहीं चाहती-बोई यह म कडे कि एन जान बरीनममैनकी चित्रविद्यामें उद्यति न होने दी । " इसके बाद उन दोनों

दिया यन जमा ही मानेपर रोम जानेका बका विचार कर किया भी

करिक्तमिननं कहा, " में रोम बाउँगा और देनारुबची दिललाउँगा कि क्या पुरुषकी दानिके लिए नहीं किन्तु सामके लिए दोना है। प्यारी एन, सुम में काय काहता । " इस ग्रेमी जोडेने अपने साधारण ग्रामे वीच वर्ष धैर्य भीर भागगरी बाय व्यनीत कर दिये। परन्तु रोम जानेकी बात उनके सामनेथे कर्म कुछ बड़ी भरके लिए भी दूर म हुई । जनका एक यैगा भी भाषत्व कार्योको छोत्रकर निर्वेक अर्थ न होता था । भगने शेक्स्पका उन्हें हिमीये जिक्र भी न किया । समझ ऐपाईभीये भी उन्होंने सहामना न होंगी, वे अपने धेर्य, परिश्रम और संस्थापर ही अवश्रीवण रहे । हम बीचमें क्टेक्स्समन बहुत ही थोडे विश्व बनावर क्षेत्र । मधीन कस्यित क्याँके जिल्

व्यक्ति सह । इस रिय उसंद्र काम जो कीर्निस्तेन बनानेंड आईर हमेंगा भाने थे, उन्हें ही बनाकर वह अपना निवाद करना था। इस समय भी बह केंप्रकृषका काम किया करना था, क्यांकि नह मजहरीका यन वाधीरांत्र है देना था । सहज वह कि इसकी वास्त्रना एडबीडिन बडनी सई भीर वह सूच कारत और द्याम गांग्य काना एथा। इसकी मानदा की दिनपा दिन बहुकी गड - बहाब माग उसका पत्रम भारत करते माग बीत क्यान समास

बांगमरमर चाहिए, वरम्यु उसंक वास इतना झन्य व था कि जिससे रागमाम

त्रव व्यवस्थान काका राज्य तथा कर सुका तक अवसी क्रथीवरिय राज्या रहान का तथा। एक रहेगावर यह विश्वसार्यं सम्माय बाहे

हरात हो राषा, तब सार कानूस हुआ कि कीने माने सामा की बार मीना क्याह हीत सहस्र। है। बुंध वित्र होन्यों बीमाना मार्डिंग कीत परिश्वस एटराना कार्याम् । यस हन्दी राश्य शह रिमाण्यके सम्पूर्णक याम कार्य जनार कीर लग्न सामाए सक बन्म बागी बाग्न प्रमार्थे काम की बाधा । प्रमानी कृषा चनानी कींग करी। की क्रम बाई। इसमें बाल गर क्या प्रशासाय बाग बार्स काम क्षेत्र काम की काम eniais ogi mani eki i eninish men denni biok franci sibenka, wib करते राज्या नार कर होत्वास जनार राष्ट्रमा भग भी र पुगर्मा म सुवागरोदि हैतन करातन था । सार्था तमारे हम बचार जिलमुहोत्तरे को हैताही समा है। जीत सम महामारी विभागेत्व । होतह सामध्ये भागूनी भागूनी होता भागात । कुण स्थान विभागान्त्र की। द्वीति भाग बनावे विका काली मूल भीता विका बीत अवनी करे

परिस्तिनने बहुत वर्षी तक मुन्त और शानिनपूर्व जीवन व्यनीत विधा । इत्तरीयें उसकी प्यारी की चक्र बसी, शिवका बसे बहु दुन्तां हुमा । इसके बाद वह भीर मी कई वर्ष जीता रहा भीर इस बीचमें उसने, करी सबसे अधिक सुन्दर और मावपूर्व जिल्ल बनाये ।

महत्तरं शास्त्र भारतप्त्र (चेत्र बनाये ।

महत्तरं शिल्पकारोंको भारतना याम्र करनेक पहले बड्रे बहे कह बतने पड़े हैं जिनसे उनके साहस और सहनजीकतादि गुर्जेका पूरा पूरा परिचय मिलता है। मार्टिनको अपने जीवनमें बहुत ही अलग्र कप्ट सहने पहें थे। जब यह अपना पहला थड़ा चित्र नैयार कर रहा था, तब उमपर कई बार भूंखों मरनेतककी नीवत भा गई थी। कहते हैं कि एक बार उसके पास केवल एक रापा रह गया था। इसे उसने उसकी समझके कारण रस छोड़ा या । इस रुपयेको ' लेकर बद युक रोशिशालेकी दकान पर गया और एक रोडी मोल लेकर जब यह जाने छगा तब वृकानदारने उससे वह रोटी ग्रीन की और वह रपमा उस विश्वकारके मिरमें फेंक्कर मारा दस तरह उस चमकदार रुपयेने उसे अरूरतके वक्त घोला दिया-वह सोटा निकला । भूका विश्वकार घर आया और अपने सन्तुकको शाहकर देखने लगा कि उसमें कोई दो चार दिनका छूना सूना रोटीका दुकड़ा मिछ आय तो मूल कुछ शान्त हो आय: पर सेद कि वह भी म मिखा! मार्टिनमें उत्साहकी वड़ी ही जयशातिनी शक्तिथी। यह अपना काम वैसे ही उद्योगके साथ करता रहा। उसमें काम करते रहने और प्रतीक्षा करने रहनेका बधेष्ट बल या। जब उसका यह चित्र बनकर सवार हो गया और छोगोंने उसे देखा, यो उसकी बड़ा ही प्रसिद्ध हुई । और और प्रसिद्ध विप्र-कारों के समान उसका जीवन भी यही शिक्षा देता है कि परिस्पितियाँ बाहे वैसी बुरी हों: परम्यु मिनमा, परिश्रम और उद्योगकी महायतासे एक व एक दिन भवद्य सदस्ता होती है। गुणी सत्त्वको सत्तमें भवद्य हो स्याति मिलती है चाड़े वह देरमे ही मिले।

जब तक तिस्पेका स्वयं नयने काममें बिल नहीं स्थाता है तव तक पादालकों उत्तममा उत्तम शिक्षा और शासन उत्तकों तिस्पेका नहीं बना सकत । उत्तकों भारती शिक्षा आप दो करना चाहिए। स्वतिसां है बना कुछ बन रा सकता। उब पूर्तिन अपन रामा है याथ रहका पर बनानकी कुछते



यह कह देना काफी है कि आवेजातिका मार्यान दृषिदान जल्याह और पीरताक उराहरणीस मार पढ़ा है। परना भन बड़ी आवेजानि उल्लाह्मूल हो गई है। कैंगरेस क्यादि आदिवीम उल्लाहको मात्रा बहुन बड़ी हुई है और बड़े हुण उनकी उन्नदिक करण है। उल्लाह और साहसकी बमी ही समारी होनताका ग्रस्त कराल है।

अपने उत्पादको बदाते रहना बहुत जरूरी है। सचरित्रका आधार इसी बात पर है कि हम अच्छे कार्मोके करनेकी प्रतिज्ञा करें। उत्पाह मनुष्यको यही बड़ी मुसीवर्तोमेंने निकाल कर ऊपर उठाता है और उद्यतिके मार्गपर चलाना है । प्रतिमाशाली मनुत्यकी अपेक्षा उत्साही मनुष्य तियादा काम कर' सकता है और उसे आधी भी बिराशा तथा भवका सामना नहीं करना परता । किसी काममें संग्रखता पानेक लिए सुबीम्यताकी उतनी भागस्य-कता नहीं है जिननी संकल्प शक्तिकी है। कोरी बाम करनेकी शक्तिमें ही काम नहीं चलता, किन्तु उत्साहपूर्वक स्थातार महत्त करनेकी इच्छा भी दोनी चाहिए । इच्छा करनेकी शक्ति अनुष्यके चरित्रवलका केन्द्र है, या मीं कहिए कि वह मनुष्यका सर्वस्व है। इसी शक्ति आइमी काम करनेमें समा रहता है और उसकी हरएक चेष्टामें जान सी आजाती है। सबी माशा उसीपर निर्मेर है-और जीवनको सर्वोत्तम बनानेवाली चीत्र आशा ही है। निरू तिनार हुन्तरीय जावनका त्यापान वर्गान्याक्य वाच्या वाच्या हो हो वाच्या त्याही मतुष्यका हुनियों में कहीं भी ठिवाना नहीं। दिल्की मामूर्तीके वाच्या वर दूसरा मुख्य बहीं। याहे मनुष्यका प्रयत्न निष्ठक भी चांव जाय, हो भी उसे इस चाहमें संनोष सिट्टेगा कि मैंने चयारालिट प्रयत्न किया। जो मनुष्य धीरम रावकर मुभीक्तींकी झेलता है, ईमानदारी पर भारू रहता है, और कड़ीर दुलमें पहंकर भी अपने उद्योगके बळवर खड़ा रहना है, उमे देशकर श्रीन मनुष्योंमें भी उत्पाद और हर्ष पेदा होता है।

परानु केवण एका करते रहता पुत्रकों के समझको रोगी बना देगा है। इच्छामों के सीधा देश व्यवस्था परिलय करता चारिए। एक बार विमी बच्चे कामण हरता कर्कि करते हिना दिवसिका देशन है। बर बाजना पाहिए। जीवनकी भरिकांच परिध्यतियों के बस्ती मेर-बतको तुर्गाक बाम बार केता बाहिए, वस्ती है देशा करने में बार्चत करण भीर कपनी पिता मिलाई है। जीवनमें स्ति अधना सम्बन्धन में मनने के विना कोई काम निद्ध नहीं हो नहता। बाम करनेमें कभी मेंड क मोदल चाहिए। उत्पाहभीत होनेसे बुद्ध भी नहीं हो सकता।

उत्पाहपूर्वक साम विधे दिना कोई महत्त्रपूर्ण काम मही ही सकता । मनुत्यकी उन्नति मुल्य करके अपनी हुन्यामे उन्नीय करने और कटिनाइचींका मामना बरनेमें होती है और यह जायबर आधर्ष होता है कि बनुधा वे बाउँ क्षी देखवेंमें असंभव भी मानूम होती हैं ऐसा कार्नेये संभव हो जाती है । र्ताम आहा। स्वयं एक ऐसी चीत है कि यह संसव बातोंकी प्रायक्ष कर दिन्तारी है। हमारी हरणार्वे मापः उन बामींडी सूचर होती हैं। तिनकी इस हर सहते हैं। पानु शामर और वार्वोद्दीन मनुत्योंके माथ यह बात महीं होती । ये हर एक बामनी भमंगव पाते हैं जिसना मुख्य बारण यही है कि बा बाम उनको सम्माव मा स्थाना है । फ्रांसका गृक्ष मौत्रवाद सक्यार क्षपने बमरेमें चूम चूम बर बहा बरता था कि " मेरी प्रदश हुएता है कि में क्रांसरा मार्गेल और एक मनिया मेरायति हो जार्रे।" उसदी यह शीव हरण उसकी सम्हरामें अपना हुई। सचनुच ही यह पुषक एक सुमीनद सेवारति हुआ और अन्तमें फांसडा मार्गत हो गया।

इस्टार्में हुए ऐसी पाकि होती है कि उसके द्वारा मनुष्य को होना चाहे बता हो सकता है, भयन को बरना चाहे वही बर सबना है। एक संस्कृती क्त करना था कि "येथा तुम चाही येथा ही यन महते ही, क्याँकि हुन्छ-शांदिया देवके माप ऐसा घनिए मंदंध है कि हम मधे दिलमें की कुछ होने के हुरता कर बही ही सकते हैं। ऐसा कोई नहीं है जिसकी उत्पट हुन्ता आलाकारी, मंत्रियी, नम अपवा उदार होनेकी हो और दह दैया हो के ली ताय। " बदने हैं कि एक समय एक दर्द एक स्वारक्षीय है। जिल्लाहरी ह । अधिक सावधानीके साथ बना रहा था । कोर्गीने इसमें इसका कारत र च । इसने उन्नर दिया कि १ में इसे अधिक सावदानोंने इस रिजा बनाना . ताकार उस समय तक सराय न की बाय बन कि कै कार बन का कि के . १५६४ बन है कि यह बहुई अनमें न्यायक नहां ही हम ... देश भूतेव मुरोगात्मक सीमाद स्टाइस स्टाइस स्ट अधुनवन वेस विने हातिको सामा व की वह तक व

हाँ हर बारचार बार सा कि बार का हार कारण

" क देंप्सिनार्थस्थिरतिथयं सन.

प्यास विवासिताने व्यासित ॥ ""
इच्छाड़ी स्ववस्ता दिवस वे में सामितान हो, पत्य
यह इट एक प्रास्तीका भनुभव है कि मृत्य ग्रास्तुम्ब को सिम्हान्त हो, पत्य
यह इट एक प्रास्तीका भनुभव है कि मृत्य ग्रास्तुम्ब कार्नीह चुननेमें
स्वतंत्र है कि मृत्य असे स्वास्त्री हो। वक्त कर हम दिव कार दिवा
वात है कि वह असे म्यास्त्री दिवा बताको; िन्यु उपमें तो पेगी शांक
है विवयंत्र हारा वह एवं में तस्त्रम है और कहाँमि हामनेत सा कर भागा
स्वतंत्र हाराता मृत्रा कर सकता है। हमारी इप्यामीर बोई आफ कंपन
बोद है। मह सोग अनुवाद करों है की असने हैं कि हमारे घमा बर्जनेय किसा तर्वस्त्री स्वत्रार वार्मी हित याद। जीवने कथी कथा, उपसे भाग-क्रिया, वार्मीमानात, और गांवर्तिक अपरे-दान्त मह पर पर्या-हारिक विवास यह वार्मी हैं कि इत्या भ्वतक है। अगा यह विवास जान। रहे में दिस्सार्गक्त नामांनाता न यह भी गीधा, याद, उपनेग करवा;

इत वस्तुच्ये प्र प्रश्न १००० १० महत्त्वे दशनरे १ मेनेका प्रश्न प्रमुख्यामा अतद्वा नित्तका क्रीत राज स्थल १०००

मार बाम करनेमें स्वतंत्र हो नहीं तथ हिमी निश्चित मार्ग पर कैसे यह सकते हैं। तियम दिम बामके होने यदि सब सोगोंडा यह विधास म होना कि जानुष्य उनका पालन कर सकते हैं और करते हैं। देश सम पर हमारा अंतर्कता वहां बदता है कि हुएगा स्वतंत्र है। हुएगा ही एक ऐसी पीन है जिस्पा हमें पूरा अधिकार है और उसको हुम अधुम मार्ग पर पलाना हमारे उपर पूर्णता निर्भात है। हमार्ग सार्ग अध्या हमारी हमार्ग हमारे उपर पूर्णता निर्भात है। हमार्ग मार्ग अध्या हमारी हमार्ग हमारे सार्ग हमारी मार्ग निर्भात है। हमार्ग है। उनके केरें में प्रेमनेक समय भी हमारा अत्राहम वहना है कि हम उसके हमारा सकते हैं और असर हम उसके कामी है। मार्ग सकते हैं और असर हम उसके कामी हमारा सार्ग हमार उसके कामी हमारा हमारे विश्व हमारा है। इस सम्में स्वाहर है। आसर हम उसके कामी हमारा हमारे जिल्ला हमारे स्वाहर है।

एक विद्वार्त एक बार एक नव युवनमें यह बहा या-"इन वहार तुमकों इर एक बात निक्षम वर लेनी चाहिए; नहीं तो तुम पीठे पड़नाओते कि मैंने अपने पैरोम अपने आप बुरहाई। मार्ता । इच्छा एक ऐसी चीज है जो अपन्य मुगमतामें हमारी आदतमें दायिल हो जातों है। इस टिए एड इच्छा बराना सीगरी और उस पर आप्त बने रही । इस शिमि अपने अतिकित जीवनको निक्षित बनाओं और जिम नाह हमा चलनेसे सुनी पतियाँ उड़नी चितारों है उस नाह अपने जीयनको हायोदील मन होने हो। "

स्प्रस्ट्रावा मन था कि युवन जैमा यनना चाहे यहन हुए येमा हो यव सहना है, यदि यह प्रतिका कर से, और उस पर आमए रहें। उसने अपने प्रवृद्धी एक बार यह लिया था----"तुम अब जीवनकी उस धेमी पर कामधे ही जहींगे तुम्हें हाये बाये सुहान है। तुमको कर हम बानके सुद्धा अवद्धा हेंग्रे वर्गात दिल्ला मीधिन निकारिक अनुसार चानके हो, एक संकार कर बावने हो और तुममें मनोचल है। वहीं तो तुम कालधी वब जालोंगे और तुम्हार बक्राय और चरित्र कार्योशित तथा निकामें दुवरोंका मा हो जावता और एक बार हमा निश्च कर पर उस्ता मुगम न होता। हुसे विचास है ११ दहक अपने आपको बहुन वुच अपनी दुक्तानुसार कर प्रकार में सही राज्य कर हुसे के नहा का सही दूसर पर अपने मा करी हम उस्ताई।

स्यायलस्यन ।

वर्षना हुन्। बानकी सुधी रहेगी कि तुमने देमा संक्रम दिया और उनके याना । " निरों हुन्या बेचक विवास क्ष्यम एउनाया नाम है-सब माँ उनके वर्षना प्रयोग का निर्मा है। यहि एड् हुन्या हृत्यिकी रिक्यमान केंग्नि कारी याज्य, मी यह रामाने सामह दानियाक होगी भी रहि भी उनके साथ दुन्यमें कार्य का बागी । वान्तु यहि अच्छे बाग बारेकी एं हुन्या भी बाब, मी यह रामाने मामह नामहारक होगी; और बुद्धि मानी उनकेंग्न महारक होगी।

" कहीं बाद है नहीं सब है, " यह एक पुरानी और सबी कहारत है। को मनुष्य किमी क्षामंत्र कानेका दर संक्रम का लेना है, वर अपनी मिन-जाड़ बलने ही मान कवावांडि कर बर देना है, और बनने बामडी पुरा बर बालना है। इस मगुड कामड़े बोला हैं, इस बानडा दिवार माल करना श्रायः बील्य बनना है । हिनी कामको पूरा करनेका पत्रा हराता करनेने दी बरुषा वर बाम पूरा दिया या सकता है। धार्मुनने अनत्रवधी वय बारेरी प्रांतजा बर की भीर उन्होंने वह काम कर ही बाला। मुखारी वस सामीर्ग जिनहों भयत्रवना होती थीं, कहा बरने वे कि 'तुम केनळ साही प्रांता कर सकते हो ।' वे नुरोतके प्रतित्र बीतिल रिकिकी और सहारीर नैतेशिक दनदे समात ' जर्ममय ' शहरकी कोर्गामेंगे निकाल श्रेता चारने थे। 'में वहीं कर सकता ' भीर ' वर्तनव ' ये केले शहर हैं जिनते के सबले जिलारा मुला करत थे । वे निहाहर कदा करते थे,-" बीलो ! काम करी ! क्रीशिश करें। " प्रवास बीपन इस, नामका प्रत्यक्ष प्रमानत है कि समुन्त आसी क्रिकोंडी उत्मादपूर्व उपनि बन्दे बहुत मूछ यर सहता है। हार्ड आर्पाने शक्ति गुप्तकारे में ब्रु रहती हैं । केल्क प्रमश्रे प्रशामि माने भीत स्वर्तन वनेदी क्रमन्त है। काध्यम प्रमुद्धिय गीर्वियन रामहेची भवनी क्रिका बीर प्रवक्ता क्यानम ही बरा ब्रोगा वा । वे प्रव दिनी मीनामें क्रमीन दान व तन का मादा दिनाय देव म दहने व वाला हनद गानी ome are take their anima are surely at making that 4 : con the me are ath as est a le . The as at all ase fe a ma er ier ge trat at fe 'a tra agaat er er å' का व राज्य न त्या है है । विकास मान्य का सामाही !



ताइ माप सहय किया कि यह बात इतिहासमें अध्यस्य महत्त्वपूर्ण विती माने लगी है । इस गुद्धमे वैकिंगटनने अपनी प्रतिमा और बुद्धिमत्ताचा परि-भय देखा यह बतला दिया कि वे बड़े भारी सेनापति होतेके उपरान्त एक अच्छे राजनीतिज भी थे । वे स्वभावतः बडे विश्वविदे मिजातके थे। परन्तु बनकी कर्मक्ष्यपालनका इनना नवाल स्वता या कि वे अपने मितातकी कार्में रत मकते ये और तुमरे कोगोंको बड़ी झालूम होता था कि उनमें सहनशी-भना कुरकुर कर भी है। मान-बदाईडी हुच्छा, श्रीम, सपना कियी भीर भगगणहा केशमात्र भी उनके चरित्रमें न या । बीर वैल्पिस्वने भगती चर्च-राई, बीरता, मादम और धीरजंदे द्वारा को कहाहबाँ तीती उनके कारण उनका माम समर को गया।

जिय मनुष्यम उथ्माह है वह काम करनेको इमेगा तैया। रहना है भीर को दुछ करना चाइना है उसे भूरत्न ही निश्चय कर हैना है। प्रत्र पात्री लेक्याक्रम पुत्र गया कि " तम आदिका जानेको क्रव तैयार हो सकते हों रे "तब उपने मुस्मा ही उत्तर दिया, "कल बाम-बाछ ही "और जब अधिराये पता गया कि " नम जनाअमें सवार होनेके दिल बच हैगार होग, " तब उन्होंने इना दिया, " अभी । " अब गुगल समाद शक्षरने बेरामधीको दिला करक राज्यकी बागडीर स्वयं ब्लाने हालाँ की. तब परे मुंबतारीत अववरक दिस्त्र दिलीय करवेकी सती। श्रीनपूर्ण श्रीजामीरे, मानवेम आहमार्थाने भीर कहामें शाहाना सीने विद्रोह करके स्वर्णत होना बाहा । यान्त अक्षत्र बाने देशियोंको बळगात होनेका कभी अवसा म रेगा सा । यह माञ्च हो कर दिया भैन हवन परव कि ये मोत सपनी सपनी बना इस्ता का यक हवन वक प्रकार बन्ता किया भीत हमता दिश्व पर बर्धान इनमा अन्य हा हि इनका बन्हा में न ता हि वह हमती Ben e ant Bertenne bred at tal die binatel ein ALAN SA CREAT FOR A APPROVANT PRINT RE WEST

क्षण भी स्वयं न्त्रो देनेसे आपतिको आनेका मीका मिल जाता है। भैने आरिट्र-यात्रालोंको केवल हमी वजहमे हता दिवा कि उन्होंने समयकी कर्र कभी न की 1 जब वे अपना समय स्वयं गैवाने छत्ते तभी भैने उनको परास्त्र किया !"

पिछली सदीमें अनेक केंगरेज अफनरोंने भारतपर्वमें यहा उप्पाह और साहम दिलाया था। सर चार्ट्स नेवियरमें बहुत माहम और भैक्य था। उन्होंने एक बार केवल दो हजार भैनिकोंने, जिनमें केवल चार सी भेंगरेजी सिवाही थे, पेतीम हजार बलवान् और राजधारी बन्दवियोंका मुनावला विया । यह सचमुख बड़े साहसका काम या, परन्तु नेवियरको अपने ऊपर और अपने शादमियोंपर भरोसा या । बद्धपियोंकी मेना पुछ ऊँचे पर थी । नेवियरने उस सेनाके मध्यभाग पर आजमन किया । नीन पेटों तक घोर युद्ध होता रहा । नेपियाकी छोटी सेनाके हर एक सैनिकने बड़ी द्वारवीरता दिलाई। क्योंकि उन सबमें अपने सेनापतिका सा जीव भरा हुआ था। बहुची बीसगुने होनेपर भी भगा दिये गये ! युक्स ही नहीं किन्तु सभी कामोंने इस तरहके साहस, रवता और भामहसे कामयावी होती है। कुछ ही अधिक साहस करनेसे पानी मारी जाती है। योडा ही और आगे यडनेसे मोरचा जीत लिया जाता है; पींच मिनिट तक और धीरता दिखानेसे छडा-हमें विजय होती है । चाहे तुममें शांक कम हो, परन्तु तुम अपने शत्रकी बतावरी कर सकते ही और उस पर विवय पा सकते हो, यदि तुम अधिक एकाप्राचित्त हो कर कुछ देर तक और लड़ते चले जाओ । एक किसानके लड़-वेने अपने पितासे यह शिकायत की कि "मेरी तलवार छोटी है," पिताने उत्तर दिया कि "एक कदम बड़ कर मारो ।" यही बात जीवनके हर कामके त्विषयमें वही जा सकती है।

वाराग हमीरने विवीहका उदार साहम और दूर मंक्स्पते ही किया।
हिम्मरा नाम पी दि यह बालक जो देवल नामकाराजा था—जिसके पास न पूज पाल सना पी और न राज्य था—ऐसे यह कामको कर सकेगा परन्तु १८ ८०० उदोग और मार्मपर रिधास था। साहम बड़ी पीज है। १८ ४०० उदोग और मार्मपर रिधास था। साहम बड़ी पीज है। १८ ४०० व्याप सन्याव लिलान द्वासको अवस्थान मी मेरिसोके १८० व्यापक सन्याव लिलान द्वास सम्याव व्यापक द्वास लड़ावा १८ ४०० व्यापक सुराहको व्यापको हुई। सर राज्य नेव ब्यार मुराहोको

नहीं भारी सेनाके जिल्ह हक्षीपाटकी प्रसिद्ध सहाईमें खड़ा कर दिया था। राता टोजरमाळका जीवनवरित बन्माद और माहमका विविध बहाहान है। उन्होंने एक दरित्र वामें जन्म किया था। बचानमें ही उनके गिएडा रेडामा हो गया । उनकी मानाने उनको बरुत थोड़ी शिक्षा ही । अब रोडा-मण कामकामके बीत्य हुए तब वे जिलीकी और बीक्रीकी मणातामें वर्ष िये । करें दिन बाला करनेके बाद वे हिली पहुँचे । भूने प्यामें धर्मशालामें िक रहे । तुमरे दिन थेया द्वेषतेके निय नगरमें किरने करे । चलते किरने ने एक बादगार्दा राज्यके पास का निकले । वहीं वे नौकर हो गए । वे योजामा दिमान हिनावका काम जानने ये । यननावालीने उमकी परीप्रा भी भी । उस समय दानरमें दो चार आतमिवींदी प्रवरत भी थी । वरी रह कर रोहरमानन भागार्यक्रमक उन्हाँत की । इस तरह रोहरमानने मृत्र समय मक मधाद भेरतायके वहीं बाम किया । श्रीत्वादकी मृत्युके बाद शृत्येशमें कमजोर राजा दीने करो । हुमार्थेने आकर तिलीके नक्तपर फिर काजा कर थिया । इस घडनांड कुछ महीते कार हुमार्नुडी सुक्त हो गई भीर सम्प्र अकार शिहामनाहर हुन । टीडरबल अक्टबरके बड़ी मीकर ही गरी । पूर समय बाप अक्वाने उन्ने भाने यह स्थ्य राज्यका बाम पितृई हिया। इस बाममं टोस्टमकने भवती कार्यस्थाना और बोम्यमादा सच परिचय रिया, समाद क्यान उन्हें बामने बहुन मनक हुए । अब नी रीहरमण्डी भीर भी बड़े बड़े बाब जिल्ल करते ।

मने बार बार्यापने रोहामणको गुनगारा चार्य करने है हिए केता। त्र केर कार्यात कार्या हुई भीर उन्होंने क्विन पर्दे। अब क्षेत्रकार क मान्त्रस करेतुं बराइ क्षिते मुद्र गत् । ह्या बर्ट्स वर्तेषु हो ना और महम विस्तास और महत्त्वा प्राप्त ही । सहस्रते उपहा हा सम्मान हिल्ला क्षेत्र उनकी मत्त्र मधाद दीवाद नियत किया । यहित क्षात्मको रक्तीको । होत्ती क्षी हुई । इसके बार बतान सीर हुन-المدينة ومن ألمر الأم المدينية الماء عليه المنط क्षेत्रमाने हेन बहुना है भी भीति कहा जान दिया। इन सरमारित रेशनमंत्रे देनों काण और चुतारे विस्ततारे कि बातमार की यह गते। बारामान कुरा कर होते हैं उसके होतामहरू मानिक वेस्स आहे हतार

कोर्र मसोकार मध्य म था। उन्होंने समल राज्यका मुस्कि नार दाता राज कर दिना ! क्षेत देशवार अनुवार उसके दिवार का करते । क्षिर उन्हेंनि उन्होंने के सब भागीका हागान निवस हिया भीर हागान बसूल करनेवाले कर्मवारियाँकी

राज बीरफरक क्रोबरफरित भी इसमें हुए कम शिवित वहीं हैं। हम्होंने भी एक विश्व बाले बच्च हिन्त थी। उनके दिशा एक माथाना बाहन स्पर्यक्त की । ्रम्हात्र का प्रमाण करते करते करते स्वापन समाप् अवशके बरातीलें है। ऐसी स्थिति उसते करते करते स्वापन समाप् अवशके बरातीलें तिने जाने हता । या मन एक निर्मन पालके माहम और उद्योगका पत दा। अवदावे दासामें बोरहत दाने पहन देने दुखे दुन बातन सेंड होंड दर्ग नहीं बलगा। मुजरे है कि एक बार मकार महत्त बहुत्तरिका हमार्ग हंग रह है बहुम्परिने देशका स्मीत देश प्रस्ता भार का कि बार कार करते वस्तानं स्थल होका उसे अरबा दुसाला ह्वासरे हे हिना । The state of the s The second secon ्राप्त । इस होते जानको जान होना साह होना हो हम का है पर हिसा प्राप्त के स्थान जानको जान होना साह होना हो हम का है पर हिसा ्रा द्वाका बुट्ट रामक हुए त्या उत्तरित साम करता बहुक्तियेको इनातमं दे हो। सम्माद् अक्वरते बालकमी इस बहुताई और पुण्याहताको देखकर बड़ी अनकता मदद को और बीरक्लको अपने बार् मीकर राम निया। यह कमा तेक हो ता न हो, रास्तु यह नियद है है विराद कोरी उपमें हो बादमाहके यहाँ नीकर हो गये थे। बीरक्लने अपने कामये और विरोद का अपनी हाजित-जारांगिये बादमाहको थोड़े ही समयों मिसा लिया।

तियां (च्या वेद्य-कोराक भी सीता तिया। वे कई बार युद्धपर भेने गये भीर बारमाहने उनके साहस भीर पीरतादी भूरि शूरि प्रांता थी। सन् १५६५ ईंग्समें ने युद्धन्तम् राज्यांने युद्ध कानेके तिक भेने गरेश हमी युद्धने बार कत कान भावे। बारमाहको उनकी सुन्धुने ने बारि कुमा यह कान्यांने है। बीरवार किंगा भी कप्यों करने ये और बारमाहने उनको कीरायकी पर्यों से थी। बारमाहने उनको एक जागीर भी ही थी। बारमाह बीर-बाको हमना पाहते थे कि ये उनको कभी भानी लीतांके सामनेथे सूर न

भीर बारोमें भी जो दुवसे भरिक सामिन्दर्ग भीर लाभदायक हैं भरेक मनुत्यों ने कुछ कम जलाइ भीर नाहम नहीं दिल्लाया । तिम नाहस तर्रा स्वेशनों कुछ कम जलाइ भीर नाहम नहीं दिल्लाया । तिम नाहस तर्रा से सोहरोक्कों भीर दश्यरास्त्रामें भीर दश्यरास्त्रामें भीर दश्यरास्त्रामें भीर दश्यरास्त्रामें भीर वर्षमाद स्वोगित किन हम नाहस्त्रमा करने हैं। ये जो कुछ करने हैं कि हम लागाओं को मान के कुछ करने हैं कि हम लागाओं काम महि करने हैं है के हम लागाओं काम महि निर्मे है मेरे हमारे से महि काम के स्वाधित प्रता के सि हमारे दिल्ला से से स्वधित हमारे काम हमारे हमारे मेरे हमारे महि काम हमारे हमारे काम के सिंह काम काम हमारे हमारे महि काम हमारे हमारे

उत्साम और साहस !

। हन्हीं गुणोंके फारण में सब सरहकी सुसीवतें सह हेते हैं और किसी ्र पुरुष अस्ति कारते । असर अपने काममें उनको मीतका भी सामना करना पड़े तो वे बड़ी सुतीमे अपनी जान दे केते हैं। ऐसे ही बीर मनुष्योंके हाता ईमाई पर्मका इतता प्रचार हुआ है। फ्रास्सिस जेविअर ऐसे ही पीर क्षात्र क्षेत्र क्षात्र पुरुष के। उनका प्रस्म एक कुठीन चरानमें पुत्रा चा। मुख और ठाठवाटकी अन्य था अनुसार प्राप्त के किया में बहुत थी। पान्त उनके पाम कमी न थी। कोगोंमें उनकी मितहा भी बहुत थी। पान्त उन्होंने सारे मुख और धनपर छात मारी और यह दिख्छा दिया कि संसा-उन्होन सार पुष्प कार प्राप्त कार्य कार्य मार्थ कार प्रदेश हिया है है जिसके सामने प्रतिष्ठा अध्या धतकी छूठ समें पहुतमी पात हेमी भी है जिसके सामने प्रतिष्ठा अध्या धतकी छूठ त्म पुरापा कर्म और मनुष्यको हेमी ही यानीको ओर एड्य रागता चाहिए. । असरित्यत नहीं और मनुष्यको हेमी ही यानीको ओर एड्य रागता चाहिए. । उनके आचार और विचार दोनोंने ही भएमनसाहन ट्यननी थी। वे पीर थे, उनक जाना जा जा जा कर के हमांकी यात सहझमें ही मान होते थे, प्रतिहाक पात्र वे और उदार थे। वे हमांकी यात सहझमें ही मान होते थे, परन्तु ये उत्तपर अपना ममाय भी दाल मकते थे । वे आयन्त घोर, स्ट्रिन-अपने और उत्पादी मनुष्य थे। जय ये पेरिसके विश्वविद्यालयमें दृशीनतास्त्रके अपा जा उन्हों। उन्न पार्टम वर्षकी थी । पहें हायोहामें उनकी गहरी मिल्रता हो गई श्रीर पे अपने मिल्रको धर्मीपरेश करनेक काममें ायता भी देने छते ।

उसी समय पूर्वतालके सम्राट् जान मृतीयने भारतवर्षमं ईसाई धर्मके ाचार कालेका संकल्प किया । इस कामक लिए बीवादिशा नामक महा त्यार परानवा परानु में अचानक थीमार पड़ गये, इस लिए जो का त्य प्रमाण का उसके लिए दूसरे आहमीकी सलाज की गई और प्र वत जीवजा पुन लियं गये। जैविश्रम अपने साम बहुत भोड़ा सामान हे नुरत्त हा जिल्ला नासको चार दिये और किर चार्निय भारतपर्वको रा ो तम किस जनाजमें ने बेट में उसीमें सोआ (बन्बर मान्त) के स ता र र र स्थान तव रजार संतियः जा शोभावा रख्ना करने जा रहे त्रा त्रामा या रागर मा जतावर वाहा with made and amounted contribute and Markett to the state of the sta

स्यायलम्यन ।

विनोइके सामान इकड़ा करते थे, और रोगिवॉकी संदा गुकूण करते थे। इसमें महाद उनमें बड़ा प्रेम करने करों और उनकी आदरकी दृष्टिंगे देखने करों।

पदीने किर वे दुक्तिकी और और आपे वहै। बार बार और गाँव, गाँव, गाँवनी और शांताग्रंग जबकी धी। बजी बाती थी। छो जाने धार आपे और बरेदेस मुनर्स थे। उन्होंने अपनी पर्स-तुस्ताहों अनुवाद कहैं दक्षिणी आपाओं से कार लिये थे और बरेबी अपनी पर्स-तुस्ताहों अनुवाद कहैं दक्षिणी आपाओं से कार लिये थे और बरुकों कारवार आपे कर दिन था। इन्हीं अनुवादी कर हों अनुवादी से करकों को मुनता थे गीर बरुकों हा उन्हों में तिर हा कहें पर बाद अपने माता जिसाओं और वहीं सियां धी बाते माता हिम्मी अपना देश की पर वहीं से दुस्तावहीं पर्देश की पर वहीं सो पर वहीं से दुस्तावहीं पर्देश की पर वहीं सो पर गाँव माता की पर वहीं से दुस्तावहीं पर की पर वहीं से दुस्तावहीं पर की पर वहीं से पर वहीं से दुस्तावहीं पर की पर वहीं से प्रति हों से पर वहीं से पर व

उत्ताः शेर साहस ।

धनंदे मतुवाची हो जाते थे। उनके हरवमें देशा इवामान था कि जो होग १७५५ थ व्याप प्रति ५५५ ४५५ ५५५ थयातात्र पा क्षा वार्षा इनको देखते ये उनकी याँ सुनते ये उनमें भी द्वाका सेवार हो जाता या।

पह मीचका कि प्रचारका काम पहुत दश है और काम करनेवाले कम भट लापकर कि अवारका कात गड़ा वह तिये। यहाँ उनहीं तिहरूक हे जीनेस वहींने महाना और जातानहीं वह दिये। यहाँ उनहीं तिहरूक ् कार्या पराय नर्पात्र वार जापायका यह । तथा वहा जाका भी उन्होंने नर्दे वानियों निहीं जो मनेया नर्दे भारतें बोहती दी। वहीं जाका भी उन्होंने नर्दे वानियों निहीं जो मनेया नर्दे भारतें बोहती दी। वहीं जाका भी उन्होंने नर आतमा माना या नवता नर नामा व वाता । वे मूर्ता स्वाम, स्व सहित हीतियों ने ने स्व की भीर होतीको है सह दे स्वाम। वे मूर्ता स्वाम, स्व सहित सामाना मान का त्या व्यापन देश क्यांचा । ये पूर्व प्रशिवन व्याप स्थापन व्यापन व्यापन व्यापन व्यापन व्यापन व्याप क्य सदम कर होने दे, यकों न दें । नियान व्यापन युक्त एतिसमके वार प्रय कर मध्य कर हात का पूर्व है सहिंस ही उनकी ज्यति सा द्वाचा सीर उनके विकोरकी सीर सा पूर्व है सहिंस ही उनकी ज्यति सा द्वाचा सीर

विवेकानम्बं जीवनमं भी बुर कम उसाह क्षीर सहस्तक दर्शन नहीं होते । क्षान्तिम क्षेत्रिशक समान के भी एक मति तिका धन कर दिया। कार साहत्मक वेरात मान वारत होते हैं। बस्मेयंत्री मेंसे व्यक्त महाक्त्रें संदे उटा करते थे। उनकी दर्शकरास्त्रे बड़ा प्रेम था। थे॰ ए॰ पास करवेडेम रक्रिय जनकी भेंट सामी रामहध्य प्रमहंसमें हो गई। उन्हें जक्त सामीर्व बान देनी बुछ प्रमेर आहे कि में उनके तिल्ला हो गये और उन्होंने मेरा संबंधन उनने बहुतनी बात मीती । इस बीचन स्वामी शमहमा परम और भी अनेक किन्द हो गये। मन् १८८६ में स्वामीनीका देशाना हो उनके अनेक शिष्योंने संतारके मुसाबो स्थाप कर उन्होंके समान बन्तीत क्रांत्रेश संकल का लिया। स्थित्रानन्त्रे भी यही संकल क्षीर कुछ समय बहुर वे प्यान क्षीर आययन क्षानेक लिए हिमालय तार पुरुवार के प्रतिवादको वहं गये और दुर्ग मनय तक यहँ वहं गये । वहंगे वे निवादको वहं गये और बाजदमकः अप्यान काने रहे । इसके बार वे मात्नको लोटे सीर कार कि के विदेश प्रमाण प्रकार काम होता । जिल्ला समस्य हे सा कर र भाग विश्व सम्बद्ध सम्बद्ध स्थापन स्

[्]रा वर्षः वर्षे रहणसम्बन्धाः स्थानः स्टब्स्स्निरहर्षे सुन्नः सन्त्रान्तः स्टर्णे ्राक्षेत्र स्टूलके विश्वयं क्ष्यां त्राव हरू केर्नियं क्ष्य įĘĪ

त्र म्यापी विवेदांमन्य अनेतन्द्रामें पर्वेने तय इस्ते वर्वे अने बहेंया सहसा करना पना । तो काना करनीचा अपने साथ सारतकांने साथ से का सब time of the at their site geffen and feele & for malitatil मील तक भीतनी देवी । एक दूब महिजाकी स्वाधावीकी वृश्य देख करी हैंगी भार्य और उन्तर बांचा है। वांच् में इन दिवान अनुष्य हा कान तिलीको रिला है नो बना अनोर स्वार दासार बन साच कर नम प्रदिनात अने कर मिनोड़ी राजन की भारे उस सारतन लागातीको जा लीना दिया। मय राज्यक मेंद्रम् अब बाग रुक्ट वा सच बीर स्नामीनान रुक्ते सार्यकार किया चन के भाग ब्यागाचि कोम्बनाव मृत्य को गावे-काक मध्याचि रिकामा म बन्। । दिन तर बन्दाधायाचा वर्षर करत मुद्रे । वे जीता बनायरिकाची पर्यंतमाध्यके कर सञ्चलहरू पान से तक। दमन वन कासीयांव दिश-गार्व-साबार करने को तब हम स्नाधाताका पोल्याको रूप पर शर्मा को हैं।औ देवाना वर्ग । बन क्यामाताका प्रमेनपांके समार्थन बाकर बारवर्क क्या से गवा और दल्ति क्या क्लीके बाप भागी समाने स्वाम आहे। दिन् पर्भेड मनिविधिक्तमे प्रवास्थित हात हा स्थीना दिया । यब स्वामीमान वेपाल वर्षेत को संभाद अपने स्वाल्यान किन अब तो क्वामीजोकी करें। प्रशेषा हुई और क्षा हो दिन समाचारम्थोद्वार बनकी नवाल सर्वेदिक एक मिन्से क्षी गिरे मन बनेन गई। बांबमी वृतिवाने एक स्तरन स्तामीतीना बांग्यमाओ Pfrair se font : equià fren' ains mit fom fa " uti-मामाध क्लाप दिव हार्व ह मि.मेर्ड सबने बडे चरे हे . दब क्यामपानो ही मन कर प्रमही बह सवान काना है कि बारन क्वर्म वहा का करान मन्त्व भी गुण वे हेमाई पंतीपरसंघों अजना निमा संचेता है। उनके तम श्रामामा वाम ममीरेकाक मनक नगरीय नमक्त्राच नाव ।-व ११कार करके ब्रह्मान वाल समाहकाई जनक न्यानांच संध्य करक रेटक प्राप्त प्रमान वह at nergen minute ten eintet remt nich nauf ten eine ein ein व वेत्रक प्रभाग यम करन नग । हरा है बार न्यामा रा ममास्था है विकास विकास

है। के बार न्यामा सम्मानकः उपनिषदी सा क्यांत्र दृशः हो सास नकः उपनिषदी भारता व्याक्यान दिये । इतः यह

उत्साह और साहस ।

विद्यान अंगरेज स्थामीजीके शिष्प हो गये और उन्होंने स्थामीजीको वेदिक

क्षण प्रति के अत्ममं स्वामीजी भारतपर्वको छोट आये । यहाँ आ कर तर १८४२ म जनाम त्यामाना माराययका छाट जाम भवामा कर स्वामीतीने कई स्वानींचर आस्त्रम सनाये और आस्त्रमासियोंको भेदिक प्रमेके धमेंके प्रचार करनेमं चड़ी महावता दी। स्वारको आवश्यकपा समझाह । हम देशके निर्मय और दुरिया होगाँके कह जन्म भनातमा जातन्त्रवारा जनमान । हेल वहां को मानुसं की । वस्ति हेंधया सानिक वस्ति वस्ति वस्ति वस्ति वस्ति । वस्ति हेंसया सानिक हर परनक राज्य स्वासानीका स्वास्त्य (तानुबस्तो) विवादने हता । बास्यति का । यस्ता स्वासानीका स्वास्त्य (तानुबस्तो) जान करनाय जानकी महाह दी, हम हिए वे किए हैंग्लंड गये। वहाँ उनका उनको परदेश जानकी महाह दी, हम हिए वे किए हैंग्लंड गये। न्नमा पदन नामका पटाट दा। हेमके बाद वे अमेरिका बड़े गर्म । बहाँ पहुँचा स्वारच्य पहुत रामान्यमारम्, श्रीर क्षेत्रान्य सीसायदी, सामक हो संस्वाय बर उन्होंन स्वान्तआलन आर पदान्त सामायटा नामक दा सत्याप सम्पदान्त सामायटा नामक दो सत्य काम का सम्पदात की जो अब तक भैनक्रेन्सिसको नगरमें भौगह हैं और खूब काम का

। ईं कि

ुर्वा समय फ्रान्सकी राजपानी वेरिस नगरमें एक धर्मसमा होनेवाली उसा समय आत्मका राजधाना पारम नगरम एक प्रमुखा हात्त्राहा थी । ह्यामीजीको इस मधाने तिमन्त्रण भेजा, अतएय ह्यामीजी थी । ह्यामीजीको इस मधाने तिमन्त्रण भेजा, अतएय ह्याएयान विशेष गये और वहाँचर भी उन्होंने हिन्दूदर्गनशायण ह्याएयान जारण गण जार पहाण जा उन्हान तहन्द्रशास्त्राज्य हे आरह सुद्धे। स्मी पीचमें स्थामीजीका स्थास्त्य कित विगड़ने छगा और वे आरह तित्र होर आतु । तस्य उपको भूतम् स्वास्त्रका ह्यम् स्वास्त्रक स् जनका क्षान महान् वार्यका था। उन्होंने कार्योम एक विवाहत स्वा जिनमा क्षाने महान् वार्यका था। भित्रमा अपन महार कामका या । जुलान कामम बनाया ! शिहक ह प्रचार करनेके हिए उन्होंने अनेक साप्रमोको इष्टा किया और उनके नेके लिए एक मर बनवा दिया। स्वामीजी अनेक आरतीय पुरायोंको तालकी शिक्षा ध्यये देने थे। इसी समय जापानियोंने श्यामीजीय कारक हिंग बहुत कुछ आमह किया। परन स्वामीजी उनके साथ पहलंक हिंग बहुत कुछ आमह किया। मर्ग । उस समय उनवा श्वास्य बहुत स्ताव हो रहा था । परन्त र्मा अपने दरेनाको न छोटा और वे भारतपर्यंस जी सो अर्थ कर विकास वहुन मा समय अपने शिष्योंको शिक्षा देनमें ्य पर् पात्रमंत्रा वर परिणाम एमा वि उनवा स्याह क्षा मन १००० हमतीमें उनका स्वर्तवान ही अवाश्याता और उथ्याति भन्य समारम विष्यं ही है

44.44.144

वन न्यांनी विवेषांत्रम् धनेविद्याने न्यूने तक वर्षे कह वह हर्षेत्रा वस्तान कर वर १ वर १ वर काला क्यानी की अपने साच आरवक्त कार के वह सब रामने ही जान की गया और इन्हेंच्य राजे जाने विश्वेष केया जोतीकार्य भीत्व केंक कोरानी करा। एक वृत्र करियाको व्यवसातीको सूक्त क्रेब कर हैनी बार बोर रमने कोला कि बार में हुन हिलाब अनुकर हो अपने विजीनों िला में नो प्रचा सनाविनोन् कुम्म । बस साम कर देश सामुना सार्वे कर नियाची जावन की भारे राम शावनमं स्थानीतीका जी स्थीता विमार मन राज्यक विश्व क्षेत्र प्रकार हुक्य वर साथ और स्थानीयान प्रकार वालीयान दिना तन ने काम स्वाधी मार्थी बोम्बनान सुन्ध की मर्थ--- प्रवर्ध यांचारीकी fraint a tre i fice at secur tiat att uve nå i a una securintala. क्षीनवाबाद के अन्यानक अन्य ले तथा प्रकृत के क्यानावाक विक्रवर्ष शाबार वार्त का मब राम स्थाना ता वीवनत हो देन पर पानी मार्ज दीली द्वाना वरा । यथ स्वाधा त्राचा प्रस्तानक समाप्ती कावत व्यवक प्राप्त है गया और रम्बोन बना करान्त्र वाच क्यानी सवाय स्थानीयो दिश सर्वि मनिविधिकारमें उपस्थित बोनेका ज्योता दिवा । जब स्वाधीला व क्लान्य पर्यं वा सभाव भारत स्वावधान दिव तब का स्वामाओं की बंदा बराबर हुई और दूसरे हा दिन समाचारकां हात उनका क्यानि अमेरिकाके एक निरंत दूसी मिरे तक कर्नुक गई । पश्चिमा पृत्रियान एक स्वरूपे स्वामीचीका घोषणाओ eftute ur foat : efuth bert' mum mas fant fur ant-संबंध स्वामी विषकानन वि वश्व वक्त बन करे हैं। प्रकार स्वास्थानीओ श्य का दमको यह लयान द्वारा है कि आत्रवर्णमें तथी ऐसे विदास मनुष्य मी तुर हे हुंबाई धर्मेंग्यरेश बोक्ट भेशना निर्त सूर्थना है। " इसके बार स्थामात्राह बाल अमेरिकाक अवस सताति निर्माणनाम आहे । उन्हें स्रीहार करके रशामाताने समेरिकाके अनेक स्थानोंने अयभ करक देति हैं। समेपर वहें की महत्त्वपूर्व क्याक्यान दिये । जोगोंको उनकी बात बहुत पर्वत आई और वे केरिक चर्मत प्रम कावे शर्म ।

हुम के बाद स्थामीत्री समीकार देखेड मते राग वर्षा भी रनको देखें ही नवाति हुई। तो माम तक उन्होंने वेद भीर रच नेपारित भनेक समावन ताली म्यान्यान दिया। हन स्थाम्यानीका राग्याम नद्दाना के मेनेक

उत्साह शीर साहस्र ।

विद्वान् अंगरेत स्वामीतीके शिष्य हो गये और उन्होंने स्वामीतीको वेदिक मान्यार करणात पुरा परामती भारतपर्यको होट आये । यहाँ मा कर धर्मके प्रचार करनेमं पड़ी महायता थी।

स्वानीति कर् स्वानीय आसम् बनाये और भारतवासियोंको भेट्रिक प्रमंके स्वारकी श्रीवर्णकता समस्ताह । स्त देनके क्रियम श्रीर दुरिया होगाहे कर भेजारका। याजरत्यका। योजारी । इस्ते वही क्षीतीयों की । वस्ते हिस्सा सामित हर करनक १८५५ स्वामानाम युवा युवा कारामा का । यरण रेतमा । बाहराहित सम्बद्धाः नाम न त्यां प्राप्तिकी महाह की, हम हिन्दू हे किर के खंड गाँवे। वहाँ उन्ह्रा विकास का प्राप्तिक (प्राप्तिक हे किर के खंड गाँवे। वहाँ उन्ह्रा जनरा नार्या जानवा नदाह यो में स्वाह यो से अमेरिका यह गर्य। यहाँ गुरुवः स्यास्तर तर्ह्या नेतर नाता। स्त्रक बार्ट त अभावना नाता हो संस्यात् कर्णास्तर पहेल नेतर नाता। स्त्रक बार्ट त अभावना नाता नाता प्रहेण संस्यात् कर उन्होंन आन्त्रज्ञालन जार वर्षान तालावन आनक है। त्रत्याच स्मापित की जो अस तक मैनफ्रेन्सितको नगरम मौजूर है और सूप काम कर

उसी सन्य फ्रान्मकी राजधानी देरिस नगरमें एक धर्मसमा होनेवाली रही हैं ।

भी । स्तामीतीको हम समाने निमन्त्रन भेता, अताप्य सामीती मा । त्यामानाका मूल समान त्यान स्वाह्मान हिन्दूर्गनमालम् स्वाह्मान करण के जात करण के जात के आरों प्रतेत का का प्रतासका स्त्र हमको स्त्र स्वास्त्रका स्त्रम स्वास व मनर। होते साम । नाट्य अनुस्त मानिस एक विद्यालय स्था भनर। होते साम । नाट्य अनुस्त समितिस एक विद्यालय स्था जिला और दीन हुती होगाई हिए एक आपन बनवाना ! मेरिक ह स्तार बस्पुर किंते वर्धाप्र समुक्ष सातेमाडा रेक्ट्रा किंता शुरू वेसक् भारता शार त्रांग वेसा लामाक रहने के सातमाडा रेक्ट्रा किंता शुरू वेसक के किए एक मह बनवा दिया। स्वामीती अनेक सारतीय पुतर्शकी ताक्री तिथा सर्व हेते थे। हमी समय जातिव्यति सामीतीय प्राप्तक किए बहुत बुठ आमर्र हिया। परितृ ह्यासीती उनके साय बहुनके किए बहुत बुठ आमर्र हिया। परना अस्त प्रमान उनका स्थासप पहुल सताब हो रहा था । पान्ड पर । अप विश्व के स्वाप्त के स्वाप्त वर्षमें की तो स्वाप्त वर्षमें की तो

कार गा उनका बहुन या समय अपने शिल्यों को लिखा देनमें रम पर परियमको यह परियास हुआ दि उनका स्वास क्षा सन १९०३ हमतीन उनका हमांचान ही क्षा क्षा उच्चार मन्द्र समामे रिका है।

store faffen remer Arm als mone militum & 1 und utenfent Prin star funder a die andt gig die fried fan aften bi. उसके एकेपीन कोई की कोमाल व था। में मान्यार हो, वर्ग एक सकामि वी भी राष्ट्रिय कार्न क्यों के किए वाचा थीं । अब विशिवासम वृक्ष करें -हैं। तन व एक बर्ड मालमें बीका हा तन । सन्ते हमोक केलमेंने ही र्माने एक स्वाप्ताम शास के दिया और इक्क द्वार कई वर्गी तक रागके . समय रूप रक्तमें देशिय माना बोची। इ दनी दभी विसमें दास करने वर्गात एक व्हान्य कामन राम करने थे और वहां करने से 1 मिलाबी कार्योंकी ; मानाम बान काड़ शामता ता, नरम्य व विद्या व विद्या नाष्ट्र माने मानकी पर्केश मोर बनाने हा शान थे। बेरिज जाना मान्य केन्द्राव प्रकथा स्थाप बंग-बचारना नार बाबांक हुना । हम ब्राम्ड विन् उल्लीन कुछ निक्रिया थी बीक्षों थीर वयातान्य काया नी क्याबा । व रुपेंचे कुछ महीने बीक्षी करने व बोर का महाने आविष्यम कर कर विश्वासम्बद्ध बरने हे । वे शैक्तिये मी इक्ष शाना कमाने वह वहने कियारम वर्ण कर हाथत वे और दशमने इस क्यम ना का क्रम है। यह दय हम्बीन न्यायक्षमान्ये ही दिया और बंभी देखील एक कैर्ना भी नशायता न थी। व्यक्तियी गीया सम सी-ने के बाद व बहन क्रियानहीं मीसायदिकों बोहते नानिका गर्व । वे स्वर्ण मनने सामेत भीन काना बाहत है, परमा वहींपर पद हो हा। या इस विक व वा सक । माजिकामें बाकर इन्होंने बहुतने काम रक्षांत्रतापूर्वक व्यावे वार्यक्ष को किन । किस बाराउमें न महाक्षेत्रका अंग्र गर्प य नव नह नह नाम निकास हो सवा । रुवान पुरुष निकार ना इस पर हक्ष्या विका था । er un smil en auf agen annie fau tin ar fur dit an

कि प्रमा क्या स्वयं क्यान छाए उन देश कर बत



कान्यका मोध यहीं तक बहा कि क्षेत्रमें सामग्रीहराएको क्षावे विनाक घर छिट्ट देता पड़ा शोलह वर्षकी कावसामां जब हमारे देखाँव जालक क्षणा नमान मेक-वृत्त की कानीनिन्देष्ट हो किताल होते हैं, सामग्रीहरायका एक ऐसे विचारके लिए, तिसको वे साथ ममझते थे, कोवनिन्दा सहना और काने विगाझ कोरमाजन बन कर धरमे निकल जाना साधारण हर्ताझं बहा न या।

धार छोड़ कर उन्होंने आरक्षण्येक अनेक प्रदेशींन वाजा की और दिर बीद प्रमंद्रा अप्यवन करनेके लिए गिरवण पहुँच। गिरवण्डों भी उन्होंने कार्य-मन्द्री स्त्रणें हों कर प्रकट दिला। खामार्थींके हिस् क्षाण उन्दार वहा प्रोध भाषा और एक बार वे उनको मार बावनेके लिए तैयार हो गये। परन्तु किर भी रामभोदनपाय करने दिवागांने शतिक भी दिवलिन न दुए। हम प्रकार चार तेये कर हेगाटन करने वे वरूपी लिए।

इतनेशा भी उबकी धर्म-दिशामा नहीं सिटी। इसकिए उन्होंने स्वदेशमें हाट वह इंतादे-पार्चे तत्त्वीको जाननेका सक्कण वह किया। उस समय उन्हों अदसाम दे मच्चे हो गई भी। इसी मक्तप्रांत उन्होंने भीतीये पद्मा आत्रि वह दिया। अनेक अमृत्याये होनेशा भी उन्होंने भीतीये वह ऐसा अपडा तान मात्र कर किया कि आर्थित भी उनकी लातनीये-की प्रत्यान करने को। केगीजे पह वट उन्होंने साहित्यको दार, पत्ता कि भी उनके बनको सान्ति न मिली। इस किए उन्होंने हिम्स भाग, जिसमें साहित्य दश्भ दास कियों। में मात्री अपडी अस्ताम साहित्य दश्भ प्रत्यान करी।

इस्त समय बार उनक हिलाका रहाना हा गया। इस निज सुमाणित सह सामामादरायप्य भा रहा। व रागपुः हा उन्हरीमा रीजान हो गये और अपना राहरण या ता भाग। उनक अगरण दिवसा माहब वह प्राचीत ये और उनम प्रदा प्रयासका आग रामत ये हैं, कार्य वार रामामाहन सामक उनार प्रयासका भा राहरण हो गया। उनहा प्रयासाहन सामक उनार हो हम जायाना हो गया। उनहा प्रयासा प्रयासा इस्तरण प्रमान इनेश्वर नाहरी साह साह अगर साह स्वास्थ्य स्था

कार्यक्रशल मवन्त्र .

द बड़े बड़े होता उनकी निहा, पुढ़ि भीर शतके कारण उनका आहर हती। देशकि बादगाहने उनकी राजाकी उन्नियन मिन्यित किया। ्रा । पर्याप नावापर प्राप्त भीर फ्रॉम गमे । यहाँके राजामीने भी ह अपने घर पुलाबर उनका पड़ा सन्मान किया। अपने राजा राममोहन-कि अनेक प्रतिब प्रतिब महत्य अनुवादी हो राये।

आठवाँ अध्याय।

कार्यक्रशल मनुखा। विका हि वहराहिना स्मीरति । "-कालेपात। त क्या द वम महामुक्ती देशता है जो क्याना कम मेहनतके साथ कर रहा

कृर पर राज्यां है पहीं सम्मन रावेस ११ - पुरेसारसे करावरें।

पहराव नार पर सम्मान करने हैं जो कहते हैं कि भवानारी लोग निक्त में महुत्व बनी मूछ करने हैं जो कहते हैं कि भवानारी लोग निक्त से महुत्व बनी मूछ करने हैं जो कहते हैं। उनका हाम बड़ी है कि एक दिला मार्गि कमी व हरें, क्षमंत्र सकीके फड़ीर हत पर करें अपने हरान्त्र करूको अपने आप बहाने हैं। के हाँ, यह सम्र है इन ११ ता अपने विक्तवरणा साहित्यमें और नीतिस संबंधि विचारके कि तिम मार्ड अपने विकास के स्थापनी क तथा कार करने स्वासी भी होते हैं. पानुत होने भी स्वासी हैं होते हैं उस अह करने स्वासी भी होते हैं. पानुत होने भी स्वासी है हात है उस अपने कर दिवारवाद और विस्तृत है और जो दहें पटे कासीके ्राच्याके जारण स्थापक स्थापके हैं है है जा प्रारायके एक स्थाप नह

Harts fram that &

्राप्त करणा । स्वतः स ्रेस केर जो के जिल्ला कर के जाने के स्थापन कराये हैं। जाने केर केर जो के जाने के जाने के स्थापन कराये के स्थापन कराये के स्थापन कराये के स्थापन कराये के स्थापन कराय The state of the s The state of the s + è THE THE WITE WENT BY _ ŧ '

यथ रिकार की कि तथ व्यानार्ते हुनने तृत्वीकी ब्राइस्टकार होती है, यर सम्में नेवीकार की रही? विजुक क्याना मानूक प्रश्न हरियों के मानूक प्रवाद की ही है। यर नो कर है कि व्यानार वादानिकी वादानी बचाता है। मूर्ण ने वर समाने हैं कि व्यानार वादानिकी वादानी वचाता है। मूर्ण ने प्रश्न मानूकों मानूकि कार्तिक कार्तिक कार्तिक कार्या कार्या की है। कुन को हुए एक मानूकने हम निर्म का्यास्था कर में हि वर ना ना त्या किया गानूकी हम ना निर्म कार्या का ना वह ना निर्म कार्या कार्य की है वर ना ना त्या क्या गानूकी हम्म कार्य कार्य का ना व्यान हिन्द कार्यों है कि कार्या कार्य गानिकी कार्य क

पित हं कारपारिक साथ मेहरण बस्मेश एक तरी की है। बहुन्या दिनीई, सुर्श्याप्त-दिक्कर ग्रीमांव बारांकी एको साथ बसाया सा-जीत तरियां सुर्श्याप्त-दिक्कर ग्रीमांव बारांकी एको साथ बसाया सा-जीत तरियां बहुन्य एका बड़ा बारां हैं। कारी इंडिजर्स रामांव कर्म तरियां के कि के इस कारपा सा हमांव के बारी तरियां मांवा कर साथ साथ कर्म तरियां बहुन्य कर्म कर्म कर साथ साथ साथ कर साथ कर साथ कर साथ कर साथ क्षेत्र कर साथ हमांव के साथ कर साथ कर साथ कर साथ कर साथ कर साथ कर साथ हमांव कर साथ कर साथ



लेक्या बामीने कुछ भी बाजा व बहुँबाई। ब्रम्मीने 'भागोद्य मगा स्वाध्य' । बाज्य मुक्ती पाणक विस्ती दिलाने ब्रम्मी बादी ब्रम्मी हुई। इस मुक्तावा है बर्गमाधारिका में दिवाय कर विभागीतींकी ब्रम्म मा कृष्याचा। कृष्य बर्मम वया रहात ब्रम्मलद्रांभवार एक पाणक भॅगोतींकी विसी दिगाने विभाग बर्गाने वर्षी भागी लगाति हुई। ब्रम्मीके प्रवित्त के ब्रम्मी बर्गमा बर्गमाने कार्या अस्ती लगाति हुई। ब्रम्मीके रिक्रावी विष्य बर्गमा बर्गमा कार्या कर्मा क्रावी क्रावाय कर्मा क्रम्मी क्रमान बर्गमा कर्मा व क्रमान स्वाधा क्रमान क्रमान क्रमान कर्मा क्रम्मी वर्गमा क्रमान करा सामान क्रमान क

तान्त्रक पूर्वति विश्वति विकास सामाना महेनामुक्तानि वाणे कारणाति तः उकारा, वालक इंगालिक मानारा करने हैं। उस्पीति के क्या तक करित मानात्रक वाल क्यानात्रकारियों आहे होते होते हैं। कार्यक्र विद्या तः उत्पादि करून सामा तक कारणात्रक दिन्यू व्यक्ति हैं कार्यक्रमात्रक दान कारणाञ्चक वर्षण कुर्गातिक किया है। तो कारणात्रकार करितारन सामक कार कना कर तमानी वीति माना वर तार्थी। वसने हैं दि, दूस कारणा वित्यव्यक्त इनका सामान्य तो तो तो कारणा हुमार बुगाना कारणात्रक वाल कारणात्रकार कारणात्रकार व्यक्त कारणात्रक पूर्व हिन्द सामान्य कारणात्रकार वाल कारणात्रकार सामान्य सामान्य सामान्य होती है। हिन्दी

बार्जन क्रमाम क्रेमिनक क्रमामक मामन क्रमान्त को पीर्युक्त परिवास बीट इस्तामक क्रमान है जार्यात मुनार्थनोक्त करन है कि दिसी वार्त्त क्रमान्त्र वह करने क्षम के का महादि है-कार्यादिक एन, क्रमान बीट मानवार क्रमार्थन । इस्त्र में राज्यादिक मानवार क्षार्ट तावनामा मूर्ग राज्या है। ही करी करी कुछ मुनार्थ मानवार के हैं। ही बार्ग कार्या है कर्मा वर राज्य जी हुए मानवार मानवार के मानुस्त्र हो बार्ग कार्या है कर्मा वर राज्य जी हुए मानवार मानवार के मानुस्त्र हो क्षार्य

क्षेत्र अस्ति क्षा है। कृष्य कर्रे कृष्य अस्ति क्ष्म है। कृष्य कर्रे

ह पुचरको याद रात्मा चाहिए कि उसके जीवनका सुरा दूसाँकी त और कृपायर इतना तिभैर नहीं है जितना स्वयं उसकी शिन्तपीयर। द्विमानीके साथ शमपूर्वक उद्योग किया जाय तो उसका उचित फल क्षिता गहीं रहता । ऐसा उद्योग मनुष्यको उप्ततिक मार्गपर हे जाता त्तुके स्वितात परिप्रको महर करता है और दूमरोंको भी काम करनेम

गारित करता है। चाहे मब होग समान उद्यति न कर सक, पाना हर-आहमी अपनी योत्यतातुमार उद्यति अवस्य कर सकता है। वह अच्छा वहीं है कि मनुष्यके लिए जीवनमार्ग हुन्से तियादा सुगम कर ह्या जाप । असे करवा और कष्ट उदाना इम बातसे अच्छा है कि हमारे सब काम कोई दुमरा कर दिया करे और हमको मोनेके लिए गुद्युदे विस्तर मिल जाया करें। सच तो यह है कि मनुष्यको काम करनमें उत्साहित करनेके लिए जीवनके प्रारंभमें जरुरतासं कम सामानका होना इतना आवश्यकीय है कि यह सार्वा मार्थित प्राप्त करने के हिए एक आवश्यक साधन कहा जा सकता है। गृह बार एक प्रीमद न्यायाधीरासे कियाने पूछा कि " वकालतमें सफलता प्राप्त ्रा पार कृष्ण नाम क्या कार्य क्या है शुंग उसने उत्तर दिया कि " उर वरनेके हिए सबसे बड़ा साधन क्या है शुंग उसने उत्तर दिया कि " उर होत अपनी पोप्यतमे सफलता प्राप्त हरते हैं, बुठ उत्तम संबंधीके हता, पुण देवदोगसे, पान्तु जियादातर वे होग सफहता आस बराते हैं जिनके . ५५८ वर्षे के सहस्ताओं स्वर्कियोंकी उद्यति और जातियोंकी सम्यताकी केहनत बर्वेकी जहरूताओं स्वर्कियोंकी उद्यति और जातियोंकी सम्यताकी पाम अल्में एक पेमा भी नहीं होता।

असरी यर समहत्रा चारिए। यदि हिमी मनुष्यदी जरूरत विना हायनी हिलांप ही पूरी हो जाया कर और उपयो किमी बानकी प्रतीक्षा, आकांश त्वा असीत करनेकी जरूरत व रहे, तो उस मनुष्यके हिए इसमे बा कर दूमरा दार बचा ही महता है ! वह निवार कि । व्यवस्था न भी कोर कर प्रत्या पान पर्याप कार्यमी आवस्यकता है, मनुष्यके लिए सब विषा-उदेश है और न उद्योग कार्यमी आवस्यकता है, ्रान क्षाप्त करत्यक और असझ होगा । देवार रहते रहते अनुस्पर्का जाव

्रित मनुसाँको जीवनमें श्रमपहला होती है वे प्रायः मोहे भारे बन ान हैं भी तुरल ही समा हेने हैं कि सिवाय उनके हराक आहमी उनके तक वहीं जाती हैं। ्रिप्तिन होता हुआ है। इस समय हुआ, एक प्रतिस हेताबने एक पुरू राज जिला है और साथ ही यह भी शीकरर किया है कि "भैं बहाने स्वीं आजना " और किर भी जयने यह जनीजा हिलाबा है कि इस जामेंने लोग जबके जाएक स्वीच्छ हो तथे हैं भी बही सेनी स्वामक्त का सावत हुआ! दिसर टाइन भी अंकाणिनने क्या एवा करना या और इसक लीगा यह एका कि जमाने कार्य कार्योंने अस्तरणता हुई भी जाके दुगुः पेंट माने क्यांने प्रकृति स्वामक जुन हुई सी जाके दुगुः पेंट माने क्यांने प्रकृति स्वामक जुन हुई सी जाके दुगुः

तृत्र मनुत्य ऐसे भी हैं जो यह समझते हैं हि हमागा जरम नुर्माणके रित्र मी हुआ है, मैसाह समोरे दिन्द है, इसमें समाश नृत्र कराराज नहीं। स्व सक्तर्ग कर मनुत्रक सैन्येमी इससे या नृत्य है हि उसकी कार्य मी स्वार भएक दिवास था; वह कहा करना था कि " बाई में सेती. वेपनेताण होता, तो बालक दिना स्थिते हैं दिहा होने कार्य ! " एक कमी कराय है कि " सर्मान मुस्ताक स्वार पाय ककारी है।" ह कृत्य होना समा है कि में सर्मान मुस्ताक स्वार ककारी है। यह कृत्य होना समा है कि में सर्मान स्वार कर स्वार कमार्थ क्षाय है तह उसके साम क्षेत्र के मिर्म स्वार अनुत्र न कर केंद्रन नमार्थ आये के तह उसके साम केंद्रण हुई मिर्म स्वार इसे होने क्षाय कमार्थ कि " संसाक सेत्र चेच हमारी नह सिक्स ने कर्नुत्र को स्वार दिसी स्वार क्षाय करना करना है। तेना समागे कि उसमें उसके स्वार समार है।"

िक्सी कारावां कार्यानीय कार्याने किए कुकर - इस सूरी ही सारावा-कार के न्यान हार्या, सारावां, सुर्गांद्र, सारावां सुर्वां की सारावां रूपा | वे बार्ग कर्यों नार्यां सीती सारावां हीर्मा, बार्यां के सुर्वां के स्वार्ता कीर्यां कर्यां की कार्यां की किए कर के सारावां है है। यह बार्च है (वे केसी कीर्यं कर्यां की कीर्यं कीर्यं कार्यों में तिया कर केरण महत्यां की मीर्यं सीत्र नहीं किए सारीय सीत्र कर कर्या है। अभी कीर्यं कीर्यं कार्यां कार्यों की स्वत्यं कीर्यं हो कर बार्या किरोगा है। इस्ता बीत्रवां कार्यों की मुर्वं कर्यं कर्यं कर्यां कर्यां कीर्यं कर्यं कर्यां कर्यां कर्यां कर्यां कर्यं क्रिक्यं कर्यं कर्यं क्यं कर्यं कर्यं कर्यं कर्यं कर्यं क्रिक्यं कर्यं क्रिक्यं क्रिक्यं क्रिक्यं क्रिक्यं क्रिक्यं क्रिक्यं क्रिक्यं क्रिक्यं क्रिक्यं प्राप्त करनी चाहिए-चाहे उसे अपने घरका प्रचंत्र करना हो या कोई रोजगार

जुरोत-भंपे, म्हारीताल्य और विज्ञानके संगंधमें हम यहे परे कार्यस्ती। बरना हो या कियी जातिका शासन परना हो।

अपने उनस्ता है सुके हैं। वे बह हिलाने हे हिला कार्य है कि सीयनके जार अगवर विश्वत उत्तोग करनेकी जसता है। हम रोजमाँ देखते हैं कि हरण कामन निर्मा होती होते बातीय भाग देनेसे ही महत्त्वकी उपाति

्रशासका वात्र है। यह भी बहुत जल्ली है कि हम होती है। परिश्रम सीभाग्यकी माता है। यह भी बहुत जल्ली है कि हम हराय होता हो भारत यामा यहा महात्र महत्त्र महत्त्र मीचर है समस हो हर्एक पानका अब जाम की है। देखमाल, बोल-बाल और काम-कान कि उसकी उत्तम तिला किली है। देखमाल, बोल-बाल और काम-कान

क अपना अभा ताला कर्ण वर्ण के प्रतिकार के साम किया जाय वह सर्छी ताह सभी बार्ने होक होकी चाहिए । जो बान किया जाय वह सर्छी ताह करता पारिए। मोदेने कामको भी अच्छी ताह करता इससे अच्छा है दि करता जालः । जन्म कामने अपूरा करके होड् हैं । एक पुदिमान् सर्या हम उममें दम गुने कामने अपूरा करके होड् हैं । एक

कहा करना था-" वुछ विसास भी करना चाहिए। ऐसा कानेसे वास उठ

पान हमार बहुत इस प्यान हिया जाता है । युर दिन हुए एक म समास हो जाता है।" विज्ञान्ते वहा या कि " मुत्ते हम बातमे आधर्ष होता है कि अवतक

नेमें मनुष्य बहुत बम मिले हैं जो दिमी विषयों अच्छी ताह साफ नेश एक साम तरीका होता है। यदि बोर्स मनुष्य धर्माणा, यो

सर्वाती भी हो, पानु वसमें अमावपातीकी आर्त हो, बारित त्राच्या और वजा व हो तो उसका कोर्ट भी विधास न करेगा। द्रके बामरी बतबत जीवन वहना है और इस लिए मनुष्य श

चन, उल्ह्म और सरहीपड़ा कारण होना है। रर एक बामधे विधि या विषमपूर्णक बरना जस्ती है। सर एक बामधे विधि या विषमपूर्णक करना जस्ती है। सर्वापपूर्वक बामक बाम हो सहना है। सिसिएवा बपव कार्मों है ' पर्यो करते करते करते वायते नहां है हि पूक्त देवें पृष्ठ कहा हैंगा कार ! ' भीर में दिनों कामके दूप उपनेदार अपूरा के छोड़ने में है मेरिक प्रकार मिलनेदार उसे देव हक लोगे ! का उसके राम कहा बहुत हो जाना या नव में आरंभ सीजन और आसाम करने कामदावों भी काम का देने में, राल्नु भाग कामके दिन्यों हिन्यों हो दिन्या किये न छोड़ने में ! होदिन देवा भी बड़ी पित्रहाम या कि '' एक दुर्गेज एक ही बहास करना पारितृ!' य का करने में ! कि '' आस मुझे दुण काम दोना है, मां काम करते काम स्थान करी हो जाना कर नक में दिन्यों भीर वानदा स्थान कर करी करना। स्थान मुझे हो कहा हो हो हम करा हो भी मिं प्रवासित्य हो हो में स्थान कर की हमा

भारण बीप्रताके साथ कर लेते थे । उनदा सिद्धान्त था कि "बहुतसे

गाहिल-कारों बार्गोदी देखेल करते करती गाहिल। तक सैतीनी हारण है दिन बारे इस बारण हो कि दूसरार बात दो साव, तो नून उस बायरों स्मर्च साइड ब्ली, और वाह तूम बातन हो कि तह बात कही तो हिंगी सैंदरों से को !! ' तंत्रनीयों नी इसी तरकों तक वासिड ब्लावण है हि "बार बाद बाद बाद। बुक्त करती स्थानिक साम हुत्र प्रमोप में दिसकों सामहरी स्थान

नुष्क भागती जमीपारक पात बुत्र क्रमीत वी विश्वही भागद्दी करावा माठ दूसन नामा नामाना थी। वह जमीरान विश्वहार देश त्या पर दिन्तुं कर्मने बार्गा भागी जमान कर सामी भीर वार्गा क्रमीत क्ष्म के दूसनी दिन्ता कर्मा बीच कर्मा दिन्ता प्रकारण दश हो। वह तथा वर्ग वाल नाम वर्ग विश्वस्त्र भीरत सामार दिन्ता पुरुष्का देश भाग और दशके जमीरानी पूर्ण हिं। क्षम सामा वर्ग करान कराने हिंदीन दिन्हा हो कराने क्षम करा करा है।

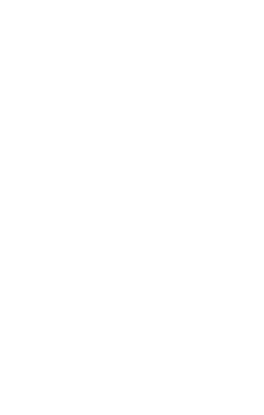
क्या का मान्यार है काराना वाचा गाँउ ही कारा प्राप्त क्या का क्या का में मान्यार हो काराना का वाचा प्राप्त क्या का क्या का मान्यार का वाचा का मान्यार का मान्यार का काराना की है मुख्य हुनका कारान का मान्यार का मान्यार का काराना की



धारण धीमलोक साथ कर ठेते के । उनका निव्हालन या कि "बहुयने कामींकी सबये जहाँ करोका बादी तांधीक है कि एक एकेम एक काम किया जाय।" जी। वे कियी कामको इस उम्मेदए अस्पूर्ण व छोड़ने थे कि मिंग्रिक अपकास मिसलेयर उसे दिर कह कियो। जब उनके धास काम बहुत हो जाना था तब वे अपने भीजन और आगास करनेक समयको भी कम कर हेते थे, परन्तु अपने कामके किया हिस्पोको किया किये न छोड़ने थे। द्वीपि-टका भी बादी सिद्धाल्य था कि "एक एकेम एक ही काम करना चाहिए।" वे कहा जाने थे। कि "आगा हुमें कुछ करना होता है, तो जब तक सम्मास नहीं है जा। मास मुझे परका कोई काम करना हो, तो थे एकामचित्र होका उसीम का बाता हुँ भीर उसे एए किये विचान वहीं छोड़ा। वाला हो कर उसीम का

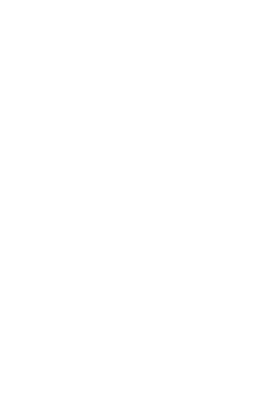
" आजका काम करपर कभी मन होते." यह सिद्धाल्य बन्ने कामका है।
"जी कर हो गर्क उसे भाज कभी साम करो." यह उच्छा सिद्धालय जन होगोंका है है
जी कामनी की सिक्समें हैं। ऐसे हो आपदाने भागत यह काम काज अपने
गुमाश्तीयर छोड़ देते हैं; परल्यु गुमाश्तीयर हमेगा विश्वास न कामा
गायिए--जरारी बार्तोंकी देखोर रूपय करती गादिए। एक ऑस्ट्रीजी कराया
विश्वास न बार्तोंकी देखोर रूपय करती गादिए। एक ऑस्ट्रीजी कराया
देखिए नाम चार्तोंकी देखार रूपयार काम हो आप, तो तुम उस्त कामको
स्वयं वाकर करते। और यदि तुम चाहते हो कि वह काम न हो सी किमी
भीरको औन हो। " दिल्तीमें भी हसी लाइकी एक मानिस कहावत है कि
" याद काम बाह काम।"

पुरु आफसी जमीदारके पान कुछ जमीन थी निमाधी भागादी काममा माठ हमा रुपमा साध्यम थी। यह जमीदा कर्मदार हो गया, स्म छिए जसने अपनी आधीन केष वाधी और वाधी अमीन वह मेहन मिला कही बीस परेडे छिए विमायेदर उठा दी। जब बीस वर्ष बीन गये तब वह विसाय भिमा वर्षकों किया पहारेडे छिल आपा और उसके जमीदारमें पुणा कि 'क्या काय यह जमीन क्येणों ''जमीदारने विस्तय हो वर पूणा, "क्या हुम न्यांदारों ?" किमानने जनाव निया, 'हाँ, आगर दाम पर जाये नो ले रूपा। '' जमीदारने कहा कि 'यह अपनान आधार्यज्ञक बात है। सम इसका कारण कताओं कि मान नियाई उसके वहुंग अमीनकों की



वारण वीधनाके साथ कर छेते थे। उनका सिद्धान्त था कि "बहुकों कामों को सबसे करनी करनेका बढ़ी तरीका है कि एक दर्भ एक काम किया जाय। " बीत है कियी कामकों इस स्थानेश्वर अपूर्त न छोत् में थे कि मेचिक मनकारा निवनेश्वर उसे किर कर छोते। जब उनके वास काम बहुत्त ही जागा था नव वे अपने सीजन और भारतम करनेके समयकों औं कम कर मेरे थे, यरनु अपने कामके कियी हिसके दिना किये न छोड़ने थे। औदि दका भी बढ़ी मिद्धान्त था कि "एक देकेन एक ही काम करना वादिए।" वे कम करने थे। कि " अगर मुझं दुछ करना होता है, तो जब तक बहा ममास नहीं हो जाता तब नक में कियों भीर बातका स्वाल त्रक वहीं करना। सगर मुझे यरका कोई काम करना हो, नो में एकार्सके होकर वसीं करा।

जाता हूँ भीर उसे पूरा किये दिना नहीं छोडता। "
आजका काम करणर कभी मन होता, 'यह मिदाना बड़े कामका है।
'बीकन हो तक उसे लाज कभी मन होता,' यह उस्तरा मिदाना बड़े कामका है।
'बीकन हो तक उसे लाज कभी मन करो। यह उस्तरा मिदाना कन होगों में है
जी आलगी और निकास हैं। ऐसे ही आपनी आपना सब हाम काज करने
पुमारतीर होता होते हैं, तरान् पुमारतीर हमेता दिवस व करान
माहिए-जन्दरी बातीकी देनलेश कर्य करानी चाहिए। एक मीरोडी कारण
है कि "पहि पुन चाहने हो कि गुरुशां काम हो जार, मो नुम उस कारको स्थाय करान
है कि "पहि पुन चाहने हो कि गुरुशां काम हो जार, मो नुम उस कारको स्थाय करा हो। "सि तुन चाहने हो कि यह काम म हो हो कि मी
साहित में में है। "सि तुन्दी भी हमी गढ़की एक प्रतिस्क क्यूनन है कि
"बार काम साम काम।"



कुद कारणों के विशास का तु के क्षेत्रिय में दिसारी कार दूरी के लिए कार दू बहा करता सामारता है। ते का विशास के दिसा है कारा दू के लिए प्रति कारी कारी कारी कारण कुद पाणी और वादी कार्य का ते कार किया की बात कार्य कार्य कार्य दिसा किराया है है के किया की कार की ता की ता की विशास के तेना कुद किया किराया है कि कार कार्य की क्ष्म के की प्रताद कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य की है कार्य कार्य की कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्यों की की ता कार्य की कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य के की की कार्य कार्य की कार्य कार्य कार्यों कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य के की कार्य कार्य की कार्य कार्य कार्यों कार्य कार्य कार्य कार्य कर की की कार्य कार्य की कार्य कार्य की कार्य कार्य

man ou altern and a or more than any deal of the first for the first first for the first first first for the first first

मुक्त मुसे हमान भी नहीं देना पढ़ता था, नहीं होता था, और गुम मुसे ुन अर क्यान मा नवा पूरा पर्वा पार नवा वात पार का अस अस अस को सबर तीन हुनार हरमा मालाना किसमा हैते रहे ही तिमगर भी उसकी तपर ताम हजार रुपया लालामा क्वाया द्वा रह हो त्वायर मा उसका क्रील हेनेके योग्य हो गये हो भ उसने उत्तर दिया कि ग हसका कारण सो नाट रंगम नाम हो गम हो कोर में कमर कम का काममें लगा रहा। आप लार पार्ट पड़े होते किया करते थे और में प्राताकार उठकर अपने

मन्यावन क्या आया था। समयके सूर्यको समझ का काम करनेमें विलय न करना चाहिए। हट-समय भी जायदाद है और यह एक समय भी जायदाद है और यह एक काम-कातमें हम जाता था।" लाका एक प्यतम् वर्षा वरणा वा तक लगम नरा आपनार ह जार यह एक मुमी जायनार है कि विता जोते हुए (पीरिष्ठम किये हुए) तो हसमें हुछ ुना जापवाद ७ १० १५०० पाठ ४५ (चार्जन १५७ ४५) गा ६५० १५० वेदा नहीं होता: पान्नु हमको सुधार हनेसे परिश्रमी कार्यकरोका परिश्रम पदा नहा हाता। परन्तु रूपका जुवार हुन पाली पड़ा रहते हैं, तो हसमें अहित. सभी तिप्तल गही जाता। आर हमें याली पड़ा रहते हैं, तो हसमें अहित. बामा । नण्ठल नहा जाता । जाम इस प्याप्ता पड़ा रहन दा ता इसमें आहत. वर प्राप्त और कीटे पेंद्रा हो जायेंगे । " कामकाजमें निरंतर होंगे रहनेसे एक पर जान जार काठ पदा ए जापना । जानकाजन तारवर एम रहनात पुरा कायमा सो यह होता है कि मनुष्यका मन पापकी और नहीं जाता; क्ष्योंकि कायरा ता यह होता है कि मनुष्यंत्र मन पायका जार नहां जाता है। जब वेकरीम मनमें साह ताहके अनुम विचार उमने हुए चले आते हैं। जब जनाराम नगम जरव सरक्ष जनुमावचार जनदं हुं, चल जात है। इसीके समुख्य कामकानमं हमे रहते हैं तब हाड़ाई-सादि भी कम होते हैं। इसीके भगुष्य कामकासम् लग रुवत है तम व्यवहरू से इता वाम का का का का है तो वास का अनुसार एक महाराय, जब उनके बोक्तांके वाम कुछ काम का नेको न होता ा तम उनको यह हुक्म देते थे कि "सम चीतीको साल करो।"

तम अनुसा पट पुरम वृत पाम समय पन है। परनु वास्तवरें हार्यकुत्तह मनुष्य कुरा करते हैं कि गसमय पन है। परनु वास्तवरें कार्यक्ष राज्य करी करात है। समयक उचित प्रयोगसे अपना सुधार, अपने वह धनमें भी बड़कर है। समयक उचित प्रयोगसे अपना सुधार, वह पानल मा पुरुषा है । लगपण अवतः अपागतः भगगा प्रेमतहत्व वार्तो उत्तरि भीर चरित्रकी उत्तरि होती है । आहरपमे अपमा वेमतहत्व वार्तो वरि एक पंटा रोज बचाया ज्ञाय और अपनी उसनि करनेमें हताया जा न्त्र प्रति प्रति प्रति प्रति स्थापन प्रति आरे प्रति प्रति स्थापन स्थापन अर्थेत प्रति प्रति स्थापन स्थापन स्थापन ा गर्न करावा जाय तो उस मनुष्यका जीवन सार्थक हो जाय अर्थों कामोस लगाया जाय तो उस मनुष्यका जीवन सार्थक हो जाय मारत समाप तर प्रतंक शुभक्षमं कर होले । यदि अपनी उस्रति व ्राधान भारत्यात लगाय जाये तो एक मालद बात हमका नताः ू. र तर अन्य रात व्यागः । उत्तम विचा अंत्र माचवातीरे मा ा । त्या अनुभा कुछ भा जन्म नहीं पान आर्टम उन्ने अपने स अभागमान ता कर सव पड़ना र न्त्र मार्ट्स होता है। समयको उचित उपयोग कार्यस यहुत समय सारण मीप्रमार्क साथ कर केने के । उपका सिद्धाला का कि "बहुमने समोचें समये समये कारोब बती सारीका है कि तक सुदेसें एक काम देखा माथ : "ती र किसी काराकों हुए माम्मेदार सम्प्रांत मा कोड़ में हैं कि सीचक समकार मिलनेतर कोने तिर कर केंगे । जब उनके पास काम बहुउँ दी बाता ना नव के मार्ट को मीट कारोब सारीके सावपाठी मी बात करें हुए तो साथ साथ काम किया दिलाई दिला किये का कोड़ में में मीड़िंग इस तो नहीं माना मार्ट काम काम किया दिलाई दिला की मा कोड़ में में मीड़िंग इस तो नहीं माना काम किया दिलाई कर हुई देखा कामा मारिहा ""

टका भी बड़ी गिवाम्म चा कि 'एक एकेमं एक ही बान कानी मारिड़ी हैं ये कहा बाने थे। कि '' मार मून कुछ बाना होगा है, मी कर नव में समाग भी हो माना वन पत्र में दिन्दी भी हा बान्य स्थापन मूक महि मारी मार मूने बाना बोड़ बात करना हो। नो कि पकायिन्त होत्तर जाति को बाना है भी र श्री कर किस महि होता ।'' मारुका बान करनार कभी बन मोड़ी, 'यह विश्वान बड़े बानमा है हैं।

'से दर हो यह रम नाम क्यों सन क्यों, 'यह उत्पा निवाल प्रत सेनीका है सी साम्भी तीर (ब्यूम हैं। 'क्ये ही मान्यों करात यह द्वार प्राप्त मार्थे । प्राप्तिकार होए रन है पाल प्रतारचीत दमेशा विचाल से द्वारी । स्विट-न्नारों सार्वेदी नेक्स करते दमी साहित। क्या सैनोरीस द्वारी । है कि ' नार पून पहल हो के पूक्ता काल हो सार्, तो पून प्रयू सामग्री ने स्वाल साहत हो। तो गाँ पाल पर हो वि यह साम से ही सिनी तीरका के सार्वा ने वालीने में होने नवसी एक संविद दालाई है है

कार्य ता करेंगा । अनेताता व्या के पर क्यांस वा कार्यासक स्टार्ट है | तुर्व (प्रवाद कार्य कार्य के पर क्यांस होता होता क्यांसक स्टार्टिंग तिमका मुत्ते हतान भी नहीं देना पड़ता था, नहीं होना था, और नुम सुते त्वचल ग्रह स्थान ना तथा देवा पड़ात था, नदा देवा था, जार ग्रह भी उसकी सराबर तीन हुतार हराया साहाता किराया देते रहे ही कियर भी उसकी बतावर तान हजार रुपया साहामा १६०१मा १८ रह हा १८५४६ माल हो मोल होनेने पोग्य हो गये हो " उमने उत्तर दिया कि " हसका माल हो नाल लगक पाप ला गय ले ज्या ज्या क्या का काममें लगा रहा। आप स्यह है। आप देशा हैंडे रहे और में कमर क्या का काममें लगा रहा। आप बारवार्द्धत पड़े पड़े देग रिवा करते से श्रीर झे प्राप्तःकाल उठकर शवजे

------ वाहिए। इट-समयके मृत्यको समझ कर काम करनेमें विलम्ब न करना चाहिए। इट-लामक न्यूप्य प्रता बरता या कि। समय मेरी पायदाह है और यह एक काम-कानमें एन जाता या।" हाका एक विदाय करा परता पा कि प्रमुख करें हुए) तो हसमें हुठ ्रमा जायदार है। स्वापना जात हुए (पारलम १०५ हुए) ता इतम युठ देश नहीं होता; परना इसको सुधार हेनेसे परिक्षमी कार्यकर्यांका परिष्ठम परा नहा होता: पर-) इनका जुपा कनन पायमा कापकराका पादसम इसी निरमूल गहीं जाता। जगर हमें साही पड़ा रहने हैं, तो इसमें अहित-कमा निरुष्ट नहां जाता । जार देल खाटा पड़ा रहन दे, ता देसमें आहेत. कर प्राप्त और कहि देश हो जायेंगे । " हामकातमें निरंतर हमों रहनेसे एक कायन तो यह होता है कि मनुष्यका मन पापकी ओर नहीं जाता। क्योंकि कारन ता नव वामा व मन नवनमा तर पानमा नार नव माना है। बहे आते हैं। बहे देशीम मनम साह तरहके अगुम विचार उसने हुए चले आते हैं। बह बराराम नगन वर्ष गर्वते हैं तब लड़ाई-सगड़े भी कम होते हैं। इसीके मनुष्य फामकावम हत्ते रहते हैं तब लड़ाई-सगड़े भी कम होते हैं। इसीके भाग एक महाताण, जम उनके बोक्तीके पाम इस्त काम कानेको न होता

कार्यहराह मनुष्य कहा कार्त है कि " समय घन है " पानु वास्तवसँ कार्यकार पड़ित है। समयके उचित प्रवोगमे अपना मुचार, अपनी वह धनसे भी बहुबा है। पर प्राप्त । प्रमाण विश्व । अहिम्ममं अववा वेमतलव पातांसे उद्यति भीर परिप्रकी उद्यति होती है। आहम्ममं अववा वेमतलव पातांसे उक्षात कर पंटा रोज प्रचामा जाय और अपनी उत्तिन करनेमें हमाया जाय, नार भेर परि यही समय नो मर्ग्य भी बुछ वर्षोमे बुठिमान बन जाय, श्रीर यदि यही समय अर्थ श्रमीय हताया जाप तो उम मनुष्यका जीवन मार्पक हो जाप और त्र प्राप्त वर्षः अत्रकः गुमकर्म कर द्वालः । यदि अवर्भा उद्यपि करलेम ्राधान भ हर शेव लगाय वादे तो एक मालक याट हमका नतावा स्व ... त.र माल्म रात ल्यारा । उत्तम विवाय भे । मावयानीके माघ प्राप्त ्रा चन्न वृत्त भा तरण तहां धरत भारतम इसको अपने साधियोके ्रत्य र त स्वतं है। उनके र जानस न तो क्ल सच गहना और न कुउ श्वाह । समयका उचित उपमात करतम बहुत समय बच रहत.

第7二章24 李明6章 [

है जिन बानों कहा हो जब किवहमा व श्रीर प्रमुख सुनी बागी बीमी एक नहीं रूप का अपना बानवाड़ स्थाप नहीं रूप हो देते हर बाही कार्य जनम जाए है हर करनाया दूपा दूसा है, प्रमान की हरे दी होंगे हर्नाट एकर सामा प्रकार है, जिस्सा सामा जीन बानी बानत करना सामा है की जानन दूपर रहता है और रहा तथा भूगी को से रहा है हैं हिए हर एक बार हहा जा है की रहा तथा अपनित्त हो। सम्बन्ध

कुम नका राजा को क्षेत्र पुत्र कुम बाद नहीं तुस्तार प्रमाण के कि है जिसे राजा में अब पहुंच्य प्राप्त तुम्यक्ष दिवारों में क्षाची भूतों है है पूर्व में मान क्ष्मण्य क्षात्रात रिकार कुम है तीर प्रमाण के तुम्क दिव दिवारों के नेत्र कुम बार में तक कार तुम्ब तुम्बारात्र आग्न आग्नी है कि पृत्र में बाद प्रमाण का राजा नक्ष्मण्यक्ष प्रमुख प्रमाण कार्यों कार्यों है कि पृत्र में इन प्राप्त कि अम्म तार के प्रमुख हुन कुमार कुमी त्यान कुमी होता प्रमाण प्रमाण कि अम्म क्षात्र के त्यांच्य कुमा कार्या विकार प्रमाण क्षात्र की हो किया कुमा प्रमाण कार्य क्षात्र व्यक्त क्षात्र कार्य विकार क्षात्र की क्षात्र क्षात्र की क्षात्र कार्य क्षात्र की क्षात्र क्षत्र प्रमाण क्षात्र कुमार क्षात्र की विकार कार्य क्षात्र है है क्षात्र क्षत्र

While are note the size of white the while with a mind of the size of the size



4 4 - 24 5 3 mint

ह कार । वाको हरूर अवत्रां की नहीं किया कार्रेश्मव की ही। स राल अन्तर। अनेर भीत सर्वाल ह क्याना वृत्त वहलावहताचा हीता व्यक्ति । उन्दर्भ राज राज राज्याना माना कारण कि वर बहुतते बार्गियों में हैं म तन्त्रका रामक आवकारोहर चीर ब्याहि सर्वाह बारोहा प्रदेश है। de er ror bit eine fit fifenen fift it rudfig ud

#7 : vyn mieter refat tangent ein meinen fifem til s urft Printed of america a sea mainte et uni aft daß eift fette the city was said as and and and at all and the treat of not ever force gross who are frage die poli place the state with the part of the sea of the series and the der mitte di per mete an ficent mi de mant afreit To "I servers to be and sing from wait after mitth To die et an annal and men man me ante ante att SE IS CAME IN HE WAS IN MATTER AND REAL BOOK BOTH TO S PT MATTER THE THE THE STEEL AS THE STATE AND MAKE HER STATES 12 may betterets um ta afra tante sur sit afri # :

Gra Que e fr a ca try afremana y de Arb ara afren such sie t am I was between an army the trees THE SECOND SEMESTED IN THE CHARLES WAS TO ME AND IPAN WA WE HAVE TO WAT TO SKAT

و يوسينيون مستوي همه مستوي و مستوي مستويد مستوي and the standard and the second and

men farmen dame an arene dies far farmen der f المناوسة عدد المر والمراوسة والمراوسة، والمراوسة فأسل والمراوسة فالمراوسة والمراوسة وا ويتواق المحادة with the winds of the form from the winds with a wife of the Comment with another from somether feath which with which where govern होता है। अभी कहा कहानी है। कुछ रण है के ह से कही अब करते हैं। South Manufact where were by retain Manufact by many broken by it केरली द्रायांच्या बर हेंग्या या करों है तो झलाडेग्यो हेंग्ला हैंड अहेरेजब franch dan & fo bond mill mudit met fing ? fantt mande, mount mich from Krotin fine mit ! make befriefele tel michal fi s कुर गर्मा र क्रान्त्र साम्या कर दीला की १ - साम्य क्लान देश क्रान्या बन्स Abl die ein fie des tele felgenen facht begt dende bie er beinen eine الأرد المن المستوليل في المناوي المناوية المناوية المناوية المناوية المناوية المناوية المناوية المناوية ल्का को प्राप्त थी तथ यह शामव शहाय समूत नृत तथ काल करना दशना का है

हुत न्यान्य की देन्तिमासक कारण बन्दियान से की व सह सहस्ते हैं क्षणानि स हर्गान दि हर्गाः बण्यम्यालयः बण्या है दिशो मुस्सी वर्शे स हारें । दे स्थानकृषी की बड़े वर्ष तक वरे थे । जस शक्त क्यारी की ह क्षेत्राच्याः सद्ध को क्ला मा । इस युक्ताः सिलाएकते समानेवी कवारे सेल्ली तुर हार एका मार्च न ए क्यार्व का बर व हर्मकर बन रावे और ब्रोटमें हर जारीत शतक अवगरिया विजय प्राप्त की । उसी अपनी स्पार्तकर बारी द्वार व हुआ। मुद्दीन उन्होंने बहु भी बहुब हुनाये, सम्मु हे अपने बने-कारणकरी करें। क्षेत्र हर । श्रीतंत्रेक बराओं उस्मेर सुब रे मावा । ्राप्तास्य शिवासः भी कार्यश्रमास्या श्रीष वान्तिके सम्बद्ध वहे वाह हता कार पुत्रका इच्छा सक्तका प्राप्त हुई । श्रीराणीयका शेला

्राहरू सो स्थानात्र स्थान स्टा ब सह व्योगक स्थानात्र , , ,

-

भाषक वच्चार त्वक गा वह बात बाहा विकालि दिवल क्षाण मेंग Arter e 14 : irit gem ige : alfernale dan fin ur freite fit for be at these mean them that at mit it i belt befeiß auf beaup... a et 3 ; weie atten meine ift affeift fietitich fil *." 11 4 324 mar s Enfages amid fer tett a fad as ti'd Contra a a stug 467 es a fineine meietend unian un ng. art. is bunte wen nittells gett feat ifte uit beftemet Wand in die ga be der be ter a gerie bemeintel mit 1858 ter a new as they , delan life-timted gian bie bie bit अ र तेर ते था, अरका पर नेवड देविक राज्य अ स्था है। मोर्ड ही मार्ड, पर्ड na is to expect my and my de during the p from a fell a पर-१ क ३ के न्य १, अर सब्दान इन्ह्र स्टब्ल्स कीर सेंट करे दिलाँ रे त्रक प्रमान कराना ३० जीव कालोश वह यह मुत्रीक पान ही र वेन no met we much while or fort to be 44 & min 1794 tions are to a series and the proper willing sort and for some are so as gamen , south that day me are marked to the the as as fee, and only the east speed province? the see were see on and a man account the the WE SEE IT WENT AND SECURE SEE AND BUT AND were your to repet are served not may als gift by the Sep. # 1 CHEROLOGY CHEST CONTROL

JA . AL TIN M . F EST AN .

THE WATER AT MAKE I SET OF MAKING MAKENSON AS # \$ wife box we have to make a my was sorn personal

and the state of the company of the company of

and the second of the property of the

a aa 11 sa A



द्वाता, गरूर उनका दूमनद्वार सामान्य सुध्य पन अन्यवन है। यहारि माणान्यता स्थातार्थ हैमानद्वारीका बता है होता है, तो भी वेर्ट् माणी कीर पांचेसातिक मैक्ट्री काम देवतीं भाते हैं। बहुतते स्वायी अध्यी थोजीं निकम्मी चीजेंकी मिल्यान कर है हैं, वेर्ट केर्ट्ड केर्ट्ड भी पी चार्च मण्या दूममें पानी, केर्ट्ड भोत देते हैं, कारीमा कीलाइक कालिय कर की आप अमीत्मात कर है भोत देते हैं, कारीमा कीलाइक कालिय कर हुए कोईक औतार, दिवा जिल्ह्स मुद्दा और उस्मी की देवन दे निवारी की कालायाल समग्रत चाहिए, क्वींकि ऐसा वे लोग करते हैं विजवे दिवार मीच हैं। ऐसे मुद्दा पत्री हो सकते हैं। एसन हार्स्यार्थ गहीं हो सकते और व उनके सम्बद्ध माणि हैं। सिक सामी है दिवार्थ दिवार सार्वी दी कर है जीई है। बिकार लेटिसरसे एक दुकावरास्य एक चाहुके हो मार्स के दिने गते हैं।

समार है कि तो आहमा पहा हैमानगार व सर उनते अब्दी ध्वाप नाहरी विज्ञान करीं बहेबान नाहरी परन्तु हो सफला था वेदानांदि है जितना करते वोद्यान नाहरी परन्तु हो स्थापना है है जितना करते हैं के स्थापना है है जितना करते हैं के स्थापना है जितना है है जित

नीवाँ अध्याय ।

धनका सदुपयोग और दुरुपयोग ।

" कामने अनुसार ही रमम निम बरता माहिए, हम्म सेमर्ट वर सम्मने अर्थ रसना पाहिए। तिमम मह सम्मतिनीयमक बाद जो रसना नहीं, हुएस पा बर सोवहुसका स्वाद वह पराता नहीं सा

—मैथिकीशरण गुप्त।

"धन उधार दो न लो, पर्योक्त कर्व देनेते बहुधा कर्व और मित्र दोनों हत्यसे यहे बाते हैं और कर्व हेनेते मिकायाके कानमें विधितता का बातों है।"

-- रोपसपियर।

" बत्तीतमें याद कर रसनेके लिए समया गुरुधरें बदानेके लिए यन हरद्वा मत करो; हो कार्त्रभ रहनेके दिए यन अवस्थ हरद्वा करना चाहिए।"—यन्त्रमें । " धनके दियसमें कभी अन्नावधानी न करो—धन चरित्र हैं।"

-पुरुषर हिटन।

की आदमीकी विशेष-मुद्दिकों जीय यह जाननेसे हो सकती है कि यह आदमी रचना किम तरह बमाना, बचाता और सर्च करता है। यह सप है कि मनुष्यके जीवनका मुख्य वहेरा रचना जमा करना नहीं है तो भा रचयेशे तुष्य मममस्ता चाहिए, स्वीकि यह सातिरिक सुख और मामारिक रज्ञका बहुन बमा साथन है। उदारता, ईमानदारी, स्वापती, का शाध्यात, मिनव्यवन, राज्ञोंना रूपाति अध्ये अध्ये प्राप्त प्रवक्त स्वापता, स्वापता,

British aged &

६ वर्ग नेपर भीर वंशर नेना, भीर भारते बृह्यपुष्टे लिए होता कार्या भारी अस्य बालना ने वर्ग नवर विश्वता है। गायक अस्तिम सुख्य पद्य अन्तर्भ के वश्यक भारतीकी वृत्तिनार्थं

है कि कर शाम वानदी कवानीक बातित कर । सुवाद महिन्दी संदेश के लार है और बार्या कालांक्य और लागिक संबंधित विस् सर्था है। हर्त्य रात्र वत करन पूर्वकर जवन रिवन वर मक्षेत्र है ही हतारी त्रां हे . इसको अन्दर्भ इस इस्टेशन ऋती सामाधानी व कानी पारिया wills ten min it emit eine Rift & an dan te fie andie for it to diana ente area et dia quel from & ener en But you are do been mad done that it girlin it will & suit on avest titler some &, not stiftent at area aret gia ? preis marie medit per gent illeges &, trede urt mitel witter and I are note excus provide midel mitel mitt art & finite de que ca man frances a sen 419 \$. wife WELL AND A CASE LAST LAST LAST WAS ALL BY MELL BUT BUTTER th not seen to see the praft the mast more are within the way Las me & cour would be fine when his northalters de and the few saids and it where saids in deather but the as the war and a we see the same and a fe THE BELLEVILLE BETT BE THE PERSON PROPERTY AND E A INTEREST OF M RI TO BE SHOPE TO ALL



नुसें वे कोग जिन्होंने सब बलां इन बाला है—मिलानाई और आपयों। भित्रामां अनुसींने को सामा सकात, मिल, तुक और बहाब बनाये हैं। अनुरा आलिको सम्य और गुलो बतावारों अन्य बाम भी उन्होंने दिने हैं और व आपनी जिन्होंने आपनी आमार्जाको गयों दिना है पेने अनुसींत इसेंगा वाग वह है। ऐसा होता अपूरिका दिवस है, और से पूर्ण हैं जोई से दिसींत समाजक सनुसींकों पर सामाह है कि तुल अपूर्मीं, विचारील और अल्लानी रह वह अलानी उन्होंने कर सम्यों है। "

बोहें बारव नहीं है कि कार्यांकी द्वारा वच्छोगी, कारतगीय की गुण-सार में हो। सार्यांकी संस्थे की (कुछते हैं हुए हैं व्यवसा ही मिलागी, सार्यादी, कारायां की गुणे हैं। सबसा है किया वा गाँक दुर्णे हैं स्वार्या कार्ये कार्य पुढ़े हैं। यह बोग दिवा बरिलाई है की ही दुवा है सबसा है जिन हुए बोग कार्य है। किन बराशी। इनदी इसी हुई है उच्छा उत्पात करना देशा है गिलाब हागा। उच्छा कहां में सुवाधी वच्छा वह हाथा जिलाई है हेवा मार्य कार्य वा नह हों। है, वाली इस रक्षा कर गोणी कार्य कार्य मार्य कार्य कार्य हैं। वाली बार सार्या कार्य कार्या है। वाली कर कार्य कार्या कार्या है। वाली बार सार्या कर उच्छा है। वाली है। वाली कर कार्या कार्या कार्या है।

धनका सद्ययोग और दुरुपयोग।

वनी है और यह काम श्रीरोंकी तिस कर उनके प्रस्तवर कर देनेमे नहीं इन्तु उन्होंको पर्म, चिके और सहाचारकी उची और उत्तत हेणी तक उठा हुनेमें हो सहता है। मानटेनने एक बार वहा था कि "श्रीतिसाखक नियम कृतन का त्रकता का नागान्ता कर नाग ने किसी महा-विसी सापारण मनुष्यके तीवन्यर उतने ही लागू है जितने किसी महा-प्रतानी मनुष्यके तीयनगर । प्राचेक मनुष्यमं मनुष्याय या मानची पृत्ति मेप न्नामा न्युप्पर आपया । प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त काके वाहर छान इंद्रपर्वे मीव्यूर रहती है। उसे अस्यक्त अवस्मामसे स्वक्त करके वाहर छान अर उसके आनन्दवा अनुसय करना यह स्वयं उसकि हायकी वात है। " ् उसक जागन्य । अपने के तीन वार्तीके सिए हमकी धन इय विचार कानेपर मालूम होता कि तीन वार्तीके सिए हमकी धन इय क्तना पहला है ते मुख्य करके तीन हैं --- पेकारी, चीमारी और मीन । में करना पुना व प उ प्रे किसी न हों। पांतु तीमरी बान अनिवार्ष है। पुष्टि आरमीश बर्गाम है कि यह दूस तरह रहे और ऐसा प्रवेष को कि जारका हो तहीं किन्तु उन होतींको भी-जितका उसे पालन घोषण एरता है —िक्सी मुसीबतके था जानेपर वहीं तक हो सके बस कर । हमारूप हमानदारिक साथ रुपया कमाना और उसकी कियायत । इति सबसे असी है। अधिन शितिमें रुपया कमानेके हिन्दु है राम बाने, आपंड उत्तीत काने और महोमनींने शुँह मोइनेकी । ऐसा बरमेंसे हमारी जातायें अवस्य प्रष्टवती होती हैं। व्यवे ितियं राचं बरतेके हिए विवेक, हुरस्तिता और स्वादंतिरोध है। दे गुण सहाचारके सच्चे आधार है। इनवेसे बहुमारी देसी चं का सकता है जो असरूम कियी सम्लयकी नहीं होती, पान्य का लगा व का नाम करते हैं जो बंदे बामयी होती हैं। हम ह दोने भी स्थारी जा मबती हैं जो बंदे बामयी होती हैं। सार अपर और आगमवा सामात हो वहीं, किन्तु आम

राज । १ कि सन्त्री हैं। हम दिए स्वाय हुआ स्वया है रक्षा वे १ अन्य श्रम् स्पष्टव बस्पर रहे स्ह स्रवण स्तात स्रोत वर क्लाक दः कल स्वता है Committee and the state of the The work to see with the test of the The second secon أالمنظ يهندون والمعالم منهاني 4

भीर मनावल काफी है । समस्में प्रत्या श्रीक ठीक इस्तवाम करवा है। किछायनपारी है। प्रबन्ध, नियमबङ्गा, नृश्वर्शिना और किमी बीजकी वर्ष व सोना ये सब बार्ने किकायतशारीमें शामित हैं। वो मनुष्य क्रियापन करका चाहना है उसमें इस बातको शक्ति भी होनी चाहिए कि वह आर्थी कामकी माधापर वर्गमान मुलये ग्रुंड भोड़ मके। इसीशिलमे माम्य होता है कि मन्त्र परार्थीन केह है। किशायनशारी केम्पीय सर्वेषा निष्ट है। मर्पाणम उत्तरता किचायनशीर भारमीमें दी पाई जाती है । डिचायनशीर बादमी धनका मृतिके समाय वहीं द्वारा, किन्दु बह यह समझना है कि वर बक ऐसी बीज है जिसमें सैकड़ी बाम निकल सकते हैं । किमीने सब बंदी : है कि "हमको सम्बंधी केवल प्रतिष्ठा व करनी चाहिए किन्तु प्रसको विचार-क्षेत्र बाममें काना वर्धावयु ।" विकायतामारिको दूरश्रीताकी दुवी, श्रीव-सबी मार्गिनी भीर स्वतंत्रताची बाता बहनी बाहिए। इसमें इमारे बरिएकी। रोजमरांके मानल्की भीर नामाण्डिक कुशलकी रहा होती है। मारीम वर्ष है कि किसायन दश्ना स्वाचनस्थानका एक सर्वाचन । व है । । मुक्तिम हात्रां काराव बाव पुरका गृहकासमा मधा बाने वस्प बहु इसमा इन्हां प्रया का में बाइना है कि नुम्न सब नाइये सूची हिं। राम्म हमक राज हा में कर करता गार भी करा मही। जार देश कार्री e ar was ar a tore in that will review man tag ar saa st. soo er ar aren fanet f ift.

है या गरीबोंने बाग किया कर रिवापती जाइ वर बाहू बगैरह महिस्स पहता है। जब उसका रोजागर दिक्कुब बाता दहता है यह उसके बाहू हगना सामान भी बही रहता कि बहु किसी और लगह का कर उड़-वाल कर का। वह एक ही बातहबा हो बाता है और कहीं बाता बही सजगी -वर्णायता भावेके किए दिन्स बातबी सहना है यह बारी है कि इसके कियायत करत हरता वाहिए। कियायत करनेके किए में तो बड़े मारी समा-गर्भ जरना है और में गोलवाबी। इस बातके मिए बेस्क सामाता वालें

weiter the transpressed a date

धनका सद्दुपयोग और दुरुपयोग।

हरणक आदमीको अपनी आमारतीम निर्वाह व तमेका प्रयान करना चाहिए र हम बातको हैमानदारीकी जह ममाना चारिए। जो मनुष्य हैमानदारीमे पूर्वी आमद्वीम अपना निर्वाह वरनेका प्रयम न हरेगा, उसको जरूर वेहूँ त्तीके माप तिमी दूमोंकी आमरतीमे गुजर कानी पड़ेगी । जो मनुत्य हरते सर्वेश परमा नहीं करते और दूमर्शिक मृतवा स्वाल म करके अपनी ही विषयपानताओंकी पुतिमें हो। रहते हैं, व बहुषा उस समय रचये मह हा रवनवारनात्वाका क्षणा भाग । प्रवेशको समझते हैं तम उनका सर्वतात हो चुकता है। ऐसे सर्विते आहमी प्रमाणक का कर भी अंतम तिय काम बरनेको मनपुर हो तान है। वे उदार रामायक होकर भी अंतम तिय काम बरनेको मनपुर हो तान है। वे अपने धन और ममय होतोंको नष्ट बरते हैं, भविष्य काल्पर भरोगा करने समते हैं और भावी आमण्तिकी आसा बांधते हैं। इस लिए उन्हें अपने पीछे हत्त्वरा योजा धमीटना पहता है और दूमराँक अहमान उठाने परने हैं जिममे उनके स्थतंत्रतार्थक काम बरनेम बड़ी बाघा आती है।

क रवानका कर पा कि " तम किकायत करनेकी जरूरत पड़े तो छोटी हार्ड पेकनका मन या कि " तम किकायत करनेकी जरूरत पड़े तो छोटी होटी रक्मोंकी आमद्वीको अपेशा होटी होटी रक्मोंकी प्रचतना तिपास कारा रचनाच्या व्यापनाच्या व्यवस्था करते । स्वयाल रसना चाहिए। " जो स्वया बहुतसे आदमी फिब्स्ल सर्च कर देते ज्यार रहता नार्डा आहेर ने हैं यही हाया प्रायः जीवनकी स्वतंत्रता और या हुरे हुरे कार्मोमें हाना देते हैं यही हाया प्रायः जीवनकी स्वतंत्रता और भा अर अर अन्यास करता है। जो होता हम ताह स्वया हुउ देते हैं वे अपने संयक्तिश जर हो महला है। जो होता हम ताह स्वया हुउ देते हैं वे अपने स्वाभ बड़े राषु हैं। हम उबको यह कहते हुए देखते हैं कि संमारमें पड़ त्रवार होता है। पान्तु जो मनुष्य आप ही अपना मित्र नहीं है यह के आता का सकता है कि दूसरे उसके मिय होंगे ! साधारण स्थितिके विधा न्ताल मनुत्योंके पास इमराकी सहायताके लिए हमेशा वृत्त व वृत्त वच रा है; पाना स्वींले और हापरवाह शादिमयाँको, जो अपनी सब शामदेवी कर डालते हैं, इसराको मदद करनेका मीका कभी नहीं मिलता। किया यह मतल्य नहीं है कि तुम फोबाला रही। रहनेमें और स्ववहारमें जो संकीण विचारांने काम हेते हैं के प्रायः अदूरदर्शी होते हैं और अ

अंगरेजीम एक कहारत है कि घाली येना सीपा सरा वहीं रह हसी ताह कर्नदार आइमी भी हुमानदार बही रह सकता। कर्नदार रहते हैं। इल सप्पारी होना भी कठिन है। इसीलिए कहा करते हैं कि ह

गैतपर स्वारी करता है। कर्जंडो बन्तपर न शुद्धा सक्तेके कारण कर्जात भारमीको भाने माहुकारने बहाने बनावे पहते हैं और बहुत करके हारी वर्ग गंदनी पहती हैं। जो मनुष्य हड़ संकार कर छेता है जसके छिए पहले बार कर्म केनेने क्या जाना बहुत स्ताम होता है, परानु एक बार की मेनंग तो भागानी होती है वह दूसरी बार कर्ज रेनेका छोम दिखानी है भीर भगागा कर्महार बहुन तरह कर्मडे चंगुलमें देना कैंग जाता है कि वह है। पात जिल्ली मेहनल कर मगर उसमे गुफ नहीं होता । पहली बार कर्वे हैगी, मुली बार शुद्र बोलबेक समाल है। ऐसा बरबेसे बारबार बैमा ही कार्यक ममरम हो मानी है, कर्ज़ार कर्ज छेना राहना है और झड़ार शुत्र बीवनी परमा है। विज्ञार हारुह्म भगमा यतम उथी दिवसे बनाता या जिस स्थि उसमें पहला कर्ज जिला था। वह इस बालको लगा गया था कि सी की केता है वह रोता रहता है। उसके भएने रोजनामचेमें यह सारगर्भित बात लियों है -" इस दियमें को शुरू हथा; इम करेंगे में म अवतक मुत्त हुनी भीर म बीरानार्थत सुन्द हो सर्देगा।" उमको कर्त्रकी क्षत्रहमें बड़ा हुन रयमा एका । इसने एक बार एक प्रकृषों वह उपरेश किल भेता गान " बाई जुन्ह मन मोगो, जार वह बूपरीये क्रा किए दिया व निक सके ! कावा क्रमी उचार मन की । यह काम मनुष्यको बीच बना हेना है । मैं पर नहीं बहता कि किमीको काना कभी हवार व ती, सगर नेता व ही कि हुन बरमा सामा तो किया औरको उत्तर में मी भीर तुर्वे स्वयं की मुनाँको देगा है बह म मुख्य सबी । देवी दामनमें नुम मरमा दश्ता दिनीकी दवार मंदी । बराम्य बाढे इवरकी गृशिया इवर फन्ट बरच कर्त हागित सन केमा । "

रास्तर प्रत्यानका सन मां कि होरी कार्ये को देशा वार्यों साथे कार्ये मार बाता है। यम निकार्य वार्ये कार्य सारातित हैं और साथ त्यारें स्वरूप हैं। वे कार्य में के कि "कार्यों केल साथ हैं। व मार्यों। के पूजरों एक सुर्वाच्य कार्या होगा। नार्वित देशों चीव है कि प्रस्ते कार्ये कार्य स तर इस प्रताहत कार्या का सकते हैं मी स कुरे सार्वाचे चय कार्य हैं, कुर्याच्या कार्य कार्यों की प्रताहत कार्यों के स्वरूप कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों पूज कार्या कार्य कार्यों कि पूर्ण किरोधा कीर्या के स्वरूप के स्वरूप की स्वरूप की

धनका सन्वयोग हीर दुरुरपीत ।

हमारे मुलारी बहर पुरमान है। उसमे न्याबीलर स विश्वम बादे बात ्राहर करारा कुछ सरहे बाम भी हो ही गृही महा भीर बुट्टे मं बरी बड़िनाई होती है। मिनारवना दानिन कीन परोपकत होतीकी है। जो भारती करने मनावना चाहता है, यह हमाति बचा महावना १ र मुस्सीरी देतरे पहले हमारे दाम बादी मामान होना बाहिए।" ार होतार के अपने कामकार के कि एक अपने कामकारकी देखांग राहुक मनुष्यस आयरक कोम है कि एक अपने कामकारकी देखांग र के क्षेत्र कार्यो कामर्ती की सर्वश हिमाव स्थेत। हम गार बायान संस्तारितावा योद्यामा प्रयोग बहुत सहमूख सिद्ध होगा। प्रदिसाती हुरी लराताला बाहाला स्थान बहुत बहुतूच्या स्था होगा। प्राप्ताला होग बहुतूच्या स्थान व्यवस्थित अपनी सामद्रतीक बराबन नहीं किन्तु उसमे का महा का महारा पर सर्वहा एक ऐसा सदा हम बतावेसे ही हो सहना कत्त स्टब्स् अपने अपने कर्ष अपने के भीतर ही रहे। जात हाक उपने के उत्तरहरू हात्रात त्या था। वह कहा करता था कि अ सनुत्यको अपने रोजसाकि कहा चीर देना था। वह कहा करता था कि अ सनुत्यको अपने रोजसाकि रार्थना हिमान दरावा अपनी श्रीतीके मामने त्याना चाहिए, हममे वह कर हुम्मी बान उसके सर्पत्री आमर्तीके श्रीत स्ववेषात्री नहीं है।" जरिस्स ुत्ता का अवस्था साम के किया कर हमाव किया कर साम थे। महिदेव गोविन्द्र रामहे अपने पाता सब हिमाव किया कर स्थान थे। नवार वार्ष करने यहिर सर्वका क्षम बाँध स्वता या। ये क्षपनी यापीसी भीतन इन्होंने करने यहिर सर्वका क्षम बाँध स्वता या। करता अस्त वहाँ अपने कर करते थे कि अहममें महीने माका सब सर्व माप्रके हिए सी रचया दे कर करते थे कि अहममें महीने माका सब सर्व भागक १९ १ मा १९४१ पूर्व प्रशास माथ सर्व हिमानी पड़ती थी। सनई बहाता।" दवडी दनी दम स्पर्देश मध सर्व हिमानी पड़ती थी। बराया । अपना प्राप्त अपने शिवार मिले थे। इसी ताह उत्तर सर्व सामको दिन भाके शर्वकी रोकड़ मिलाका मोने थे। इसी ताह उत्तर साफ विहिन्दन भी सानी सामनी शीर सर्वत्र व्योखार होत होड ्राहित्रक अधिसने कर्त न होनेका ऐसा दर मंदरूप कर हिगा या कि ए रिमाय रताने थे।

बार उनकी छ। वर्ष तक देः भा कर साथा व मिला, पानु वे हुमानदार ब बार उनका कर कर के हिया। शुमने भेंगरेजी शतासमाम अपने देवा सुरे भीर उन्होंने इर्ज न हिया। र आर प्रवास की पुर कहा था वह भारतवासियों हे वियम भी सा स्वतात प्रत्यात कहा मा कि अहम देशके (देख्यके) होगाहि बहुत बड़ गये हैं। सायमेरीके मनुष्य विश्वष्ठ अपनी आमर्निके ब बहुत बड़े भाग वह है। उसका रहनमहन ऐसे इसे इसेंग हो गया संय करना पार्टी र १००० रहेगा है। हम असे बर्धों से जेरि उममें समाजको बड़ी होति पहुँचती है। हम असे बर्धों से जेरि म्यायम्बद्धात ।

अयांत् सन्नम बनाना चाहते हैं, पान्तु परिणाम उस्टा होता है। उनमें कपड़े, तमाही और भोगविष्यासकी चीजीका शीक क्षम जाना है। पान नियास रक्तो कि इस चीजींस सुजनता मही है। इस उनकी बालाओं कैण्डिकर्मन म बना कर फैशनका मान्य बना देते हैं।"

र्डमानदारीको निर्लातुनि देकर हम कोग विकन-भूपडे बनना चार्ड हैं और हमारी यही इच्छा रहती है हि चाहे हम अयलमें धनाम न हों, परी तुमारिको धनाका मान्द्रम हो। हममें यह शानिः नहीं है कि हम धीरजंदे मान निज अवस्थाकी उन्नान करने रहें। हमकी मैजानेविक बननेने काम है। समा-जरूपी थियेटरमें ब्रमारी कीशिय बरावर वही रहती है कि इस सबसे आगेडी कृतियोको घेर छ, परम्नु ऐसा करनेमें हमाँदेव स्वापैन्यामका क्षेत्र गुण जाला बहुता है और हमारी बहुतभी संबंधि भारते मिट्टीमें मिल जाती है। इस भवती प्रवति नव्य-नव्यमे तृष्यों ही नवर्षीचा खालना नावते हैं। या जिलने है। बुद्ध जमरन नहीं है कि इससे दिनती शांति शांति है और कैसी गर्राची भाजाती है। इसके पर परिणाम क्षत्रारी बालेमि दक्षितीपर की रे है। त्री बंदैवान शोना पमत्र धान है, पान्तु धाने भागको निर्वेत प्रका धाना नहीं चाहते, वे साम जीवन नीच कर्म करते हैं। ऐसे सन्त्व आने युवसीय अपना सर्वत्य मो बैटने हैं, पान्यु इनार हमें इतनी त्या नहीं भानी जितनी जब संक्ष्मी निरंपराज कुपूरवीगर आसी है जो इसके साथ माराको प्राप्त की 30 A & 1

सनायांत सर्दू वालंप मार्गियान भारतवयम यह बार रेतिनदीही मार्थ बाज्य-कार्य यह विस्य कर क्षेत्रा ना कि " वास्तरिक सक्रत के परिवाद केंग्राईreft mun mel di at made mir fant pan ten eren fint at भारतिक पदना प्रमा दाम है. प्रमादा नहीं . इस दुरास दहनते नेने PO ATA E SI ATA BEN TO SEE THE STATE THAT E THAT SHA STAT symmet and & to sive or used it he are use we shall want ages somewas in a sa and are see header the or at more as a course of their mir all ** ***

धनका सदुपयोग और दुरुपयोग।

जय युवक शवने जीवनमें आते यहता है तय उसको अवने दोनों और जुआनेवाहां हो एक एक हम्बी दतार मिलती है और उनके होसमें फूँस जानेंसे उनसे न्यूनाधिक अवनति अपर्य होती है। हुआनेवाहां का साप कर-नेसे युवकके स्वामाधिक गुजों का बुठ हिस्सा गुप्त रीतिसे निकल आता है। उनमें वचनेका यही उपाय है कि यह पीरतासे 'नहीं' कह दे और उनके अनुसार चले। जिसी प्रहोभनमें एक यार फूँस जानेसे फिर उस प्रहोभनसे गुआदिला वस्तेकी तावत कमजोर हो जाती है। मगर किसी प्रहोभनका पीरताके साथ सामना क्यनेंसे सहाके लिए एक तरहकी दािम आ जाती है और कह बार ऐसा ही किया जाय नो पैसी ही आहत पड़ जाती है। छोटी उग्रमें जो अप्डी आहते पड़ जाती हैं उन्होंने हमारे परिव्रकी रक्षा होती है।

हा मिल्हरने एक पार ऐसा रह संकल्प किया कि ये एक प्रलोभनसे लुख ही बच राचे। जब हा मिलर मजरूरी बरते ये तब उनके मित्र मिल कर कभी कभी दारायका जलमा विया करते थे। एक दिन उन्होंने हा मिलाको भी हो शिक्षाम द्वाराव पिका दी । अब मिलरने पर पहुँच कर पहुनेके लिए किताब स्त्रोती, अक्षर उनकी श्रीसोके सामने नाचने हमें और वे युक्त भी न पड्सके। भिरुपने अपना उस बणका हारू वी लिया है:—" उस समय मुखे अपनी दता बड़ी मांच माराम हुई । में अपने ही बुचमेंसे पुद्धिकी जैंची ग्रेणीपरसे शिमपर में रहा करता या, नीचे गिर गया । यदापे यह दशा हरादा करनेके लिए बहुत अच्छी न थी, तो भी भेने पक्षा इरादा कर खिया कि में दारावकी सांतिर अपने मार्गामक सुराका बंभी त्याग न करूंगा और परमाधावी सह-दमें में अपने इराइमें अटल बना रहा। " ऐसे ही इराई मनुष्यके जीवनमें परिचलन बर देने हैं और उसके चरित्रको आगेके लिए पढ़ा करते हैं। जिस प्रलंभनम् ।। भिल्तं चच गयः प्रत्येक वयपुषक और पद्दे आदमीको उससे हमेशा बचन रहना पाहिए। शराब पाना वहन पुरा है। इसमे सन्द्रस्त्रीकी बड़ा भाग नवसान पहुँचता ह और पि शुरुखंची भा बहुत होती है। सर या तर स्याह वहा बन्त थाव । सबस बडा पाप जो सनुष्यके गौरवसी क. का इस इ रासव वाला है। यहां नहां बास्त दासव वाला किप्रायत-ार २०१ तन्द्रस्य अंग्रह्मावरणाम् या दाचा दालता है। विसा • 14. धारमक 160 दर ना क्रमा है 14 हम अवन ग्रामंत्र आदशको

>9'441 544

ार जा त्यार जानार एक्पर हा भारत हा जीत हाई विवासी हो होते. पार प्रश्य कर कराव नाहर बर्जायात गरि हात्या बार्गह की हात्रे काराया जोगा भारत केपान पुरास्त्र बागह अवस्था रह विवास कार्य सम् पार गांचा कर कराव होता कि बागह पीर की बागह साम रागा जा है । अपने कार्य कराव स्थापन स्थापन हार है किसी होते वार्रों रागा जा है । अपने हा अवस्था स्थापन स्थापन हार है किसी होते वार्रों

किंद्र प्रभाव १ वर्ष प्रदेश के पत्र प्रभाव के प्रदेशक करवाई है। में केंद्र में, प्रभाव १ वर्ष प्रदेशक पत्र के प्रदेशक पत्र के केंद्र पत्र के प्रभाव करते हैं। में केंद्र मेरे प्रभाव १ वर्ष पत्र करवा पत्र का का मार्थिक केंद्र पत्र के प्रमाण में

The proof you are set of the your May of a 19th Speel March in price of the your man product of the life of the properties of the life of the product of the life of the product of the life of the li

धनका सदुपयोग और दुरुपयोग ।

पर कोई ध्यान न देता था। किसी अच्छे कामनें हररोज कुछ मिनिट सर्थ कानेमें ही बहुत फुछ हो सकता है । चाहे इस बातपर कोई यकीन न करे मगर यह मच है कि टामस राईटने क्षपने उद्देशपर कायम रहकर दश वर्षमें सीनसी भूनोंको, जो चोरी, रुगी इत्यादि करके अपना निर्योह करते थे, सुधार दिया । उसने बहुतमे लड़कोंकी भादतें सुधारका उनकी उनके मातापिताके पास भेज दिया; पहुतमे रुड्के रुड्कियोंको जो अपने घरोंसे भाग गये थे उनके प्रतिय पहुँचा दिया और बहुतसे अपराधियोंको ऐसा सुधारा कि वे बदमाती छोडकर हमानदारी और मेहनतके साथ कोई धंधा करने एग गये ! यह न ममशो कि यह काम महत्र या । इसके लिए राया, समय, उत्पाह, बढिमानी और इन मवके उपरान्त मधारियताकी जस्रत पडी होगी। क्योंकि जिस मन्त्रका परित्र अच्छा होता है उसका दूसरे विश्वास करने छगते हैं। रामस राष्ट्र यह काम भी करता रहा, अपने कुटुस्पका मुख्यूपँक निर्याह भी करता रहा और पड़ी मायधानी और किकायनके साथ अपने पुतारिक लिए पचन भी करता रहा। उसको हुप्तेवार मजदूरी निल्ती थी। यह हर हुप्तेम अपनी आमदर्शको बड़ी होशियारीने वर्ड हिस्लोंमें बाँट देता था-इनवा शाने कारहेके अस्ती समानके लिए, इतना मकानके किरायेके लिए, इतना प्रधानी तिक्षाके लिए और इनना दीन दुग्यियोंके लिए। यह इन सब महींका बराबर संचाल करता या और कभी गडबडी न होने देता या ।

ज्ञांन जोतना, वपरे बुनना, श्रीजार बनाना, दुवानदारी करना इत्यादि दिमां भी पर्पेक वरतें अपसान नहीं है बस्कि दुखत है। फुछरने वहां था दि "जो ईमानदारीमें जीविका पैदा करते हैं उनतों क्यों लाका राज जातिर के लोकत नी उनको होना चाहिए जो ईमानदारीमें जातक वर्षा नहां करना ! जिन मनुष्यांन दिमा तेत देगमें अपने उपनि करत उनको का न अपना पारिए चारक उनको नो इस पानका असिन माहर जनको का न का किया केमा करना दोका प्रकार प्रकार अस्ति हालन सहर जनको का का का का प्रकार प्रकार अस्ति हालने होता.

winduthin!

न कि शिका वि "चना है। सामान त्या नो भीभावणी कमानेवार्क होते, तो एक भाव कब उससे को का उससे उन्हर, नामों कारानी अपनी व हो सामानी हैं। वह बात पान को को नामों के हैं के बहुताने और समान इससा हान हिंग कार दें कि उसके पान ही पान जाना हो आप-काराने कहा है कहा की सामाने की की की अपना होते.

बार राया रहा नहीं होता। जाता बहुन बच्च होता है कि बोहें अपूरण एक नन्य राष्ट्र आप अदने आ जान और स्वरूट का हो। हुएती सूत्र वीरी है हर हात है। जादी आकर्तात का लखे होते, वह पुत्र काता बोहें वर्ज माना, विशो व दियों नाह बचन बचन होते, तम दूज स्थापी के प्रेरू दर जम व पान। हेशनका बचन साहरह भोगड़ सुम्यों तीन बारिये अ. हर जक राष्ट्रनाम्य हर हारत तीन हा माना मानी वहिंदी सीर्यंक्ष हर हा मिलन ते उस करते हुआने स्वरूप माने मानी

नंद कर कर कार प्राप्त प्रस्त प्राप्त है। स्वी प्राप्ति के दी क्षांत्री के स्वी करण है। है विस्तृति क्षांत्र के स्वार्ति के स्

After the to the transfer of t

The second second

att in second time to the contract agreement to the eight

धनका सदुपयोग और दुरुपयोग ।

तुनके सिवाय और किसी अच्छी यातका राषाल नहीं है यह चाहे अमीर हो ज्ञाय, परन्तु यह फिर भी संभय है कि उसका चरित्र दो कौड़ीका ही यना हि। धनमें चरित्रही उन्नति नहीं हो जाती; बल्कि जिस तरह जुगन्की बनक्के घारण जुगन्की भद्दी स्ट्रत भी दिखलाई दे जाती है उसी तरह धनकी चमकने उस धनके स्वामीकी चरित्रहीनतापर सबका प्यान जाता है। सब छोग कहने छमते हैं कि यह इतना बड़ा आदमी हो कर भी इतना

दुराचारी है।

बहुतमें होता पत्तके होभपर अपने परिप्रको स्पीतावर कर देते हैं। ये उब धर्रोंके समान हैं जिनको आफ्रिकानियामी यदी विधिप्र रितिसे पक्रवते हैं। ये होता एक तंत्र मुँहवाले बरतनको किसी पेड़में कम कर बाँच देते हैं और उसमें चावल रन देते हैं। रातको पेदर पहीं आता है, उस परतनमें हाथ हालना है और अपनी मुद्दी चावलोंने भर हेता है; परना यह मुद्दी यही होनेके बारण धरतनके तंत्र मुद्दीमें बाहर नहीं निकलती पंदरमें इतनी समझ नहीं कि मुद्दी होल घर अपना हाथ निकाल है। यम हमी तरह सबेरे तक यह वहीं फैला रहना है और पदड़ हिल्या जाता है। इसि संसारके यह-हायमें रखते हुए भी यह आयन्त मूर्य माहदम होता है। इस संसारके यह-तमे मनुत्योंका भी यही हाल है।

प्रापः स्रोत रूपयेमें रूतनी राशि समार पैठे हैं जिननी कि उसमें असहसें
नहीं है। समारके समसे बड़े बहाम भनी मनुष्योंने द्वारा अथवा चंदा रुकहा
बरनेसे नहीं हुए, किल्नु उन्हें प्रापः ऐसे मनुष्योंने किये हैं जिनके पास योद्या
हरण था अध्यास भी जियादा दनियासे हैंसाई भमेदा प्रचार यहुत ही
हर है जान किया है। वह पर रिष्णा शान अनस्पातकर्ता, आविष्याहरण अस्पात करण वह गीर स्पारण है। वह उनस्प नी सहुतसे
करण अस्पात करण वह गीर स्पारण है। वह उनस्प निष्णा प्रमान प्रमान
हरण अस्पात करण है। वह पर स्पारण वह स्पारण अस्पात प्रमान प्रमान
हरण है। वह स्पारण है। वह स्पारण वह स्पारण है। वह स्पारण हों
हरण है। वह स्पारण है। वह स्पारण विश्व स्पारण हों हो। वह स्पारण है।

। तरकात्र स्थानाः व

हो। इंग्लंबर्ग एक कह बहाना तो पूर्वा ही प्रशान है। उसके बीच बीव Auries: इनक दिव्यक्त बही द्वेषि कीत पर मामका फिए दिशी द्वारी करा काल करका क्षेत्र नहीं है कि वह सामकी काई नह दिया जाता है। बहु अनुकार अन्तर्य द्वारा है कि वह सामकी काई नह दिया सामारी

बार त्यांचा अनुन्यस शीवन बन्यांचे देश हो बाव, तो तह आकारनी रिक्रमा पत्ना कर दूर कर देशा और आतर वह समाम प्राथ हिंगा भीत अरहा के स्वतंत्रका विकास हो है। है। यह निर्मा मुख्ये का तहता हो के बहुन की वह सर्वामा निर्माण करें तीय बहुत ही में स्वतंत्रका होने के अपने अर्था अर्था के अपने हैं तो भी अर्थान है सीत करता के जिल्हा होता बहुता है साम है। साम सीतंत्रका है सीतं करता के जिल्हा होता बहुता है। साम विभाग होता है है

मारा कार गारी। राज्य कार पूत्र करूत किया बुरहे का दर्गालाओं सार् क्षरद गरंज कर च्यालाह प्रत्यार माही, दी बढ़ दूरी हैं। ब्यूग्यूवर महोत व्यवस्था वका कार्यन गाम मान्यी कोई विवास मान्य मीर मार् रूर राज्य है. यह या गांच्यू सराव बार्यांसे इस बंद्यालयी बच्छा है ही बंद् क्रमंच्या राज्या हर भेर सर्वत संच्या राष्ट्रा ही । इसकी इस बास्ट्री अस a wife what is fore small faces were were \$ 1 years \$1 of are mus & he an wen mass ners die mie freiten dir ward things attacked done I doubt direct their bell and इराव कर ह 'स इन महामारी चर कीर माल महार्था, कर फार्मा, हीर कार हो। संप्राधी कराजि हरते छ। यह तो दवारा करा होता ब्राह्म तह संक्र कर कार्यक देजने क्षेत्र कार्यक क्षेत्र कार्यक व्यक्त WHY ENGLISHED WAS ALSO WAS AND AS AND A FAIR SAID was there's ups was advance, man much four fair, or & Their fix and source around aim to me, mad after proper er up at mor atoms was at up or \$10 \$ % mas to with the transferred where with our the despite to the tale or a sea at tome to t

ANY MATTER THE BOTH AND ANY COURS STATE OF SHEET AND A STATE OF SHEET AND ANY CO. STATE OF SHEET ANY CO. STATE OF SHEET AND ANY CO. STATE OF SHEET OF SHEET ANY CO. STATE OF SHEET OF SHEET OF SHEET OF SHEET OF SHEET OF SHEET OF SHEET



म्यायम्बद्धम् ।

त्रो शिक्षा हमाडे। ज्याने भाग विल्ली है जयहों भोजा हमारेंगे गाँ हैं है
शिक्षण हम न्यूल कम भिक्षार या गरूने हैं। जो जान हम अपनी विर-लगेरे जाम करते हैं जराद हमां भिक्षार हो जाता है। ज्यान हम अपनी विर-लगेरे जाम करते हैं जराद हमां भिक्षार हो जाता है है। ज्यान परिवास मार्गित हो जाती है। येने जानकों हम न्यून समान ही काल कारती है। जारी है। वृत्ती तथा हमा जाता न्यून समान हीत काल जाती कारी है। जारा हमा है। आपसीतामाये प्रत्योच्छा हिलान होता है और जाती कार्य कर्म हंगी है। एक बाल हे इस हो जानेने दूर्वीय बालाश भिक्षण जातीने नार्म बना विन्ती है। यह समान जाता नार्म करते हमाई है। हमारे वाल कर्म है। है। यह दस्ती ह हमारा जाता नार्म करते हमारे हमारे हमारे हमारे हमारे ही नृत्तिमार, नुलंक और जिल्ला हो और हम बाहे हमारे हो बार हरना कर बात हम है, उन्यूलन जाताने हिला हमारा बाता ही अल क्षानी

बने वह शिक्रवीन गरी गीडा हिया है कि बाने आहो रही शिक्रा वेश्री वहा सरल है। उनका बहान है कि स्थानीमें इस साम होता है। बहान मार्कृष्ट के मा सर्वा गिल्मीड़ा श्रोलपूर्ध करोत हों का साम कर बहान करनेन इस साम्या गिल्मीड़ा श्रोलपूर्ध करीत हों के स्थानीह है। विकार करेड़ बारवी साम शिल्मीड़ा जी हिम्मेट कराने हा साम हों। बहान करेड़ बारवी साम शिल्मीड़ा जी हिम्मेट बारवेड़ा सम्बन्ध करा है। इस तरह करीन शिल्मा हिम्मेड़ा है कि शिक्षात साम हों के साम हों। श्रित्मा कर हों कि साम हों। इस करान साम हों कराई हैं इस हों शिल्मा कर हों हमा कराने हमा कराने करान कराने हमा हों हमा सीने बहुत करीकर करान करान हमा सीने हमा सामे कराने हमा होंगा करा। साम और दिन दलाय सामें सीनेचार हमें। हमा साम हमा साम हमा हमा हमा



जीनन है। पायहारिक माललगांक रिल्पू जिनती हम समाग्ने हुए हैं बारों जियादा नजुरम्लीकी जातरत है। आरनपरंते एक मेंगोजने आने एक विशेषी हैं लेख्य राम मेजा और जगांने रिल्मा कि "में माललगींने मुनये दरता हैं स्वीकि मेरी वाचनाति कच्छों है।" कियी वस्तानाओं निर्मात काम कर-सेवी बारित बहुत बुख हरीगर निर्मात है। हमालिए तम्बुरम्लीका लगाल स्वया बहुत जातरी है। मालगिक धामों भी हमाश्री जातरत पदारी है। विचारियोंने को अर्थानीय, सारील्य, अनुयोग और विलान देव पहारी है और वे सो जीन-सर्व युवा करने लातने हैं, मो मुख कमाल न करनेका चळ है।

तर आहातक स्पृट्नकः जीवन इस बानका उदाहरण है कि क्योंने गुरुषे ही भौतारोंने बाम केवर कैमा लाम उदाया या : वे पहनेमें तो मुख में, परम्पू आर्था, हरीहा भीत कुरहाडी चलानेमं बड़ी मेहनत करते थे । वे बाने रहनेंड दमरम भी लटाट हिया करने थे, और इनाये बखनेगाड़ी चहिया गाहियों और तरद सरहडी क्लंडि नमने बनानेमें गहा ही स्पन रहते थ । बंद वे बडे हुए तय उनहीं भाने मिनोंडे किए होती होती सेने भीर भाजमारियों बनानेमें बड़ा आनंद आता या । क्यीटन, यार्ट भीर स्टीकिस्सन मी बक्तनमें श्रीतारीय हमी तरह बाम दिया बारे में । महि में सहद्राप्तमें ही इनकी आफोक्टिन न कर केने, तो को होनेपर सावह ही इतना काम कर महते, जितना कि उन्होंने कर दिलाया । जिर महिकारही बीर बन्दर्शीक्ष कर्नन हम पर्थे कर आने हैं उनकी प्राप्तिक शिक्षा भी ऐंदी ही हो थी। कड़शानमें उन्होंने बाने हार्थीये शुव बाम दिया या और इसमें इन्होंने ब्यानी उपाय सीचनेकी शक्तिको और बुद्धिमानीकी बामने बाना मीन्य दिया था। विन मत्रवृति द्वापनीरकी भेटनम बाने धाने इतनी दर्भा का की है कि अब उन्हें केवल मानविक बीन्सम है। करना परता है। तुमार हा मानविक परियम बरनेंद्रे बारी प्राप्तिक विश्वाय क्या मान रक्षा है। एक गुन ही सन्त्वका बनन है कि नमूस सरक्षताहाँक सम्बद्ध बारक दिए माला बदान प्रती मानूब हो। इंग्लिंग देव बहे बार बहुनी बराबा प्रस्तवर अपनी राज्यको अक्टरवर किए और अक्टरबी प्रति ब्राप बंद त्या सामा तुल्यी वर्राम करणदा दात्र द्विया ।"



। बालकान्त्र ।

न र राज्यानियाँ को क्याँर तरह डाम खरन काम खुँदिमें नी, अधिव का विक्र महत्यापिता मोह इसीयमीनवाका परिचय देना बब्दल है। क्षांत्र पर के पह जनमें है हि तम्दुरतमें हैं। सम्बन्ध नीव बाज की स

परण रह ना चार वह कि विद्यानिक रिकाल किए सामित को की है। '' कहा र जनता में बहुत कहार है। '' कहारी समेव इस होती है। '' कहा र जनता में कहा जाने किया किया कि है। सामाजीका में ति । इस का जानका सुम्ब उस है जी उसनी चार उसके किए कारी के कहा को जनका बहुत है। जी। जोई बहिनाई नहीं कि दिस्सा स्पीता कारों किया के कहा । जनका की कामार तो है कि स्वार स्पीता कारों की है कि है कि है कि है कि सामाजीका की स्थान की स्था

कार्य न द दानक दार कार्य दान है कि बात सामी दिनती हारि द देन है जा कार्य दो हार्य होती होती है, जैक कर सूनत नहीं होता मार्ग तम उद्धा पूर्ण कार्यक में स्थानकार करते हैं किया कार्य प्रमान कार्य प्रमान की एन हैं हिन्दुरात राज्य साम कर के एस नार्य दार्थ मार्थ के दोनेंं । कार्य कार्य दें कार्य कार्य कर है वे हम नार्य दार्थ मार्गिकार की दीनें किया है का क्या कार्य कर कार्य कर है वा हम नार्य दार्थ मार्गिकार की विकास कार्य है। कार्य साम कार्य कार्

After the state of the second second

The second of th



der ales set it

वर ति: व हे , वजार प्रजाति जाम कार्य किनाना भी ही प्रत्यन जमार्थी क्रीमा विजन्मत ती भाज का मुद्र सीत शीवती ही स्ववस्थात स्थात क्षत्रिक क्षय-प्रत्य कुला है ,

कर्मण दुन्दर पह करने हैं। वह से मूल सुदारों नहीं है। क्या ने प्रियंता करनाय केंद्र के दा कोई करना है। स्वर्धी कर कहा है। विकार नहीं दुन्दर करोड़ कि देखा इसका किन वह नहीं हम्म दानों दिन बनार हां दुन्दर किन किनाया कर कहा है कि कार्य करना करनी कर करना कर करनी प्रदेश करता, अने स्थापन करा कहा है कि कार्य करना करना करना कर कि करनायों कर करना अने कर कर कर कर है।

Age of etc. gift and our overgoin to est offer refer gifted. I start gift a major down to gifted. I start and a major down to gift a start gift and a major down to gift a major

Yes the region are yes companied reads to the single desired and single desired and the desired are single desired and the desired des

जपना स्पार, स्विधाय और कठिनात्यों !

स्पापारकी तरह आगोद्वारमें या अपनी उसनि करनेमें भी निगंदािश द्वार निभय और नत्यस्ताकी जरूनत है। इन गुणेंगी हृद्धि तभी हो मकनी है जब नवपुषकोंमं स्वावरूम्यनसील होनेकी आदन दाल दी जाय और उनको हुस्स मुद्दा तक हो सके स्वयं बाम करनेमें स्वतंत्र कर दिया जाय। बहुत नियारा उपदेश करनेसे तथा रोक-रोक करनेसे हमायरूम्पनी आहते मही वहने पातीं। अपने उपर विधास म होनेसे हमारी उपनिमें बहुत बाधा आ जाती है। अपने पर्लोगने हुए घोड़ेको रोक रूना ही जीवनकी आधी आसफलाओंका कारण है। टायर जानस्तन बहा करने थे कि ' मेरी समुख्याय परि वारण है कि मुद्दो अपनी सामियांप्र मरोसा है। जीव ममुद्दा वार्षी कारण है कि मुद्दो अपनी सामियांप्र मरोसा है। जीव ममुद्दा वार्षी कारण है। जीवनकी कारण है। जीवनकी सामियांप्र मरोसा है। जीवनकी सामुद्दा वार्षी कारण है। कारण है। हास प्रमुख कार्मी सामियांप्र मरोसा है। जीवनकी सामियांप्र मरोसा है। जीवनकी सामुद्दा वार्षी होती और हसमें जमकी उपनिमं वहुत वार्षा पहुंचती है। जो मनुष्य बहुत कम करते हैं।

बहुतमं मनुष्य अपना मुखार करनेकी हुरुत तो करते हैं परन्तु मेहनतसे जा उसर । लग बहुत जस्ता है - जा पुरात है। हाक्टर जानस्म कहा करते था। है। जाज करूब लोगोम यह एक तरह जा मानस्क रोग है कि ये अध्य- वन कर रेन्ट उकता जात है। यह बात हम जमानेम भी पाई जाती है। जाज करू बहुत लोगोश पडनकर हजा राता है, परनत कम जरता पई। जाज करू बहुत लोगोश पडनकर हजा राता है, परनत कम जरता पई। जाज कर हुत कर कम जरता पई। जाज कर हो। विकास सामन्त्र कोई सरल है। पूर बतला जाज जाज हो। यह उसका हुन कम जाज जाये। ये उसका जावला समान ह जिसन एक अध्यापक अपत पहानेक लिए हुस दातीय

रण्या था कि यर उसकी दिया और इन्हम्म धार करनेहा कह न है। आहरक साराययों देगी वुलाके बहुत अवसीता हो रही है तिवाह समाय 'दिया देगा यके विरोती गामागा' है भी दूस देगते हैं कि पुष्क को पाएंचे वसकों सीम लेकर पहले हैं। दो एक गुणाई देग-भाष्टक ही हम दिवारमें 'हैं सैं' करते कार्य हैं। दो एक गुणाई देग-भाष्टक ही हम दिवारमें 'हैं सैं' सारता के जेनकर हम रमायत गाम के हैं हैं। वह कह हम हमेत्रमें मेर्ग (कार्यित मेरा) गूँच केते हैं, हरे दंगके वार्याकों कार्य राजा होगा हुआ देश करत हैं भीर सारायस्य (Phosphorus) को आपनाम (Охукси) से जलता हुआ होने को हैं हम साम के हैं हैं हम सारायसां हैं। यो! पेपा जान चारे वार्या सुन्य स्वत्य साम के हैं हैं हम सामा बात है हैं। सेपा जान चारे वार्या सुन्य स्वत्य सामा के हैं हैं हम सिमा साम के हैं, हम

सर्वाप्तक व्याप्तक भी। विध्यक्षे दिना हो जान प्राप्त करिया गुण्य मार्ग हैं है। यह जिला सर्वी है। वेगा क्षार्री सम्माहके दिन्त पूत्र के विद्या मार्ग हैं है। यह जिला सर्वी है वाग करियों सम्माहके दिन्त पूत्र के विद्या मार्ग है दिन्त करियों जो उत्तर है वाग करिया है। यह वाग है कि उत्तर है भी से उत्तर है। यह वाग है है विद्या करिया है। यह वाग है कि उत्तर करिया है। यह वाग है। यह वाग है कि उत्तर करिया है। यह वाग है कि उत्तर करियों है वाग है। यह वाग है कि उत्तर करिया है कि उत्तर है। यह वाग करिया है कि उत्तर है। यह वाग है वाग है वाग है वाग है वाग है। यह वाग है। यह

का राज्य काम उत्तर द्वारण पंचान हैगा द्वार है (मा) पृष्टिम कार्यर है और रिन्या नहीं दी पद्चा । है गोरन दुरन जान प्राप्त द्वारा जाएंगे हैं और उत्तर मात्र दुरनेयां जीव भागी दुरने । इस नाह प्याद्धी हमात्र समीदी



और उस दौलतका कैमा प्रयोग किया जाता है। यदापि किमी उपयोगी उद्देश्यको ध्यानमें न रखकर भी हम अवने मस्तकमें बहुतसा शाब संप्रह बर मकते हैं। परन्तु ज्ञानके माय भवमनसाहत और बुद्धिमानी भी आनी चाहिए और माय ही माथ सचरित्रता भी होनी चाहिए । नहीं तो यह जान दो कीही हा है। एक विद्वान तो कोरी मानसिक शिक्षाको श्वानिशास्क वनलामा करता मा वह इस पान पर जोर दिया करता था कि ज्ञानकी जहाँ हो मुख्यपस्थित इष्टारूपी मिहीम जमना चाहिये और उसीमेंसे अपना भोजन सीचना चाहिए। यह सच है कि सनुष्य शान प्राप्त करनेसे अध्यम पार्थीने बच सकता है; परन्तु वह स्वार्थ-परताये नहीं बच सकता । स्वार्थराताये उसी बक्त गुटकारा मिल सकता है जब मनुष्य उत्तम नियम यना के, उनके भनुमार चले और भण्डी भारते बाल हे । यही कारण है कि नित्य ही हमारे देखनेमें ऐसे बहुन मनुष्य आर्त है जिनका ज्ञान तो विशाल होता है, परन्तु चरित्र सर्वया श्रष्ट होता है। जनमें स्टूर्ला विद्या होनेपर मां स्यावहारिक बुद्धि बहुत कम होती है। ऐसे जयम वर्षेण (तथा होतरा या ध्यादशांक द्वार बहुत कम हाता है। "" गार्म मृत्यु अमेर कहाँदियमें दूसरींक किए अमुद्रक्षण हो मा बा हों, जरूरी जनवी दूरेगा रेणकर उन जैसे व्यक्तियमें सारधान रहनेक किए होगा जनकी यदता रहेने कार्य हैं। आज कर महाँ तहाँ रहा गुन पहता है हैं। "गार्व यह है" पान्यु पातस्यक, अपयास्य और गुल्मा भी तो कही वाही राम्य मुद्रिमानीक साथ न श्री बाप, तो ऐसे शान्ये दुष्ट मृत्यु भी स्थी हो जायें और वह समाज, जो उस जानको बहुत मध्या समझता हो, रिसाय-समात दन जाय ।

नामा बन जान ।
सम्मन है हि इस मात्र कर पुर्णेक पहने-पहानेमें बहुन निवाह मार्थेक सम्मने ही। पृष्टि इसारे पान बहुनने पुरण्डाक्य, विचाहन और अमार्थक मार्थे, हुन किए इस साम्राजे होंगे कि इस बहुन उन्होंने का रहे हैं, जान्य नेपान मुख्यान कर कि इस साम्राजे होंगे कि इस बहुन उन्होंने का रहे हैं, वापन होंगे मार्थिया कर कि इस साम्राज होंगे हैं उन्हों हैं। इस नाह्य प्रचंद केपन काम्यों वह जाने के इस साम्राज्य की कार्यों हो। इस नाह्य प्रचंद केपन कार्यों वह जाने हैं। इस नाह्य कार्यों कर कार्यों वह साम्राज्य की कार्यों, उसी मार्थ कार्य कार्य की वहीं वहीं। पृथ्यों कार्यों कार्य कार्य की कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्यों कार्य की कार्यों कार्य



कानल्के गुरु महात्मा रामकृष्या परमहंस बहुत ही कम परे जिते है। ' पत्नु उनके अनुसव जानकी हानी मनिद्दि थी कि तैकरों दिहान् उनके पता उपरेश मुननेकी आया करते थे। महातम हित्याजीने किनती जुलके परी भीर महातम राजनिर्तिहर चन्ना कितना कर जानने ये हैं समाद सकर भी भी कहा ही कम परे थे।

अतरण केयल बहुतनी पुलांक पर छेते और बार कर लेतें हुए महस्य महिंदी, महस्य तो पुलांक परानेक उरीरपाँ है तिन उरिएगों है उस सामक्ष्य गारि है, महस्य तो पुलांक परानेक परीरपाँ है तिन उरिएगों है उस सामक्ष्य उपयोग किया जाता है। ताल प्राप्त करनेका यह उरिएग हो तह सामक्ष्य उपयोग करा, आर जीवकड़े हरफ्क कर कार्यक ति रह करों मुला बीर उपयोगी करा, आर जीवकड़े हरफ्क कर कार्यक ति सामक्ष्य करों में सामक्ष्य परिवाद करों में सामक्ष्य करिया जाता कार्यक सामक्ष्य कर सित करों में सामक्ष्य कर करें प्राप्त करना प्राप्त करना चारिए और उस्त करां कर ति वाल करिया कर लिया ना वाल कर लिया वालिए। हम्मार सामक्ष्य कर लिया ना वाल कर लिया वालिए। हम करां कर करां कर लिया वालिए। हम करां कर करां कर लिया वालिए। हम करां कर कर लिया वालिए। हम करां करां कर करां हो। हमारे मिक करां हमारे कर करां हमारे कर लिया हमें कर करां हमारे कर लिया हमारे कर लिया हमारे कर लिया हमें करां हमारे कर लिया हमारे कर लिया हमारे कर लिया हमारे करां हमारे कर लिया हो से करां हो। हमारे मिक करां हमारे कर लिया हमारे कर लिया हमारे हमारे कर लिया हमारे हमारे कर लिया हमारे हमारे हमारे कर लिया हमारे हमा

आध्यासाम और आध्यानिरोधमें ही कार्यकुरालमाका आरांस होता है और क्षारा आध्या होता है और कार्या इनका आध्यार आध्यासमामान है। इसमे आसाका दिकाम होता है और कार्या अस्त्र सार्विकी और पालनाकों आगत है। जो अनुष्य दर अस्त्री करता है उसको चाम्पकारों है इसमें होने हैं। जोटेंग जोटें अनुष्य है आरां हरता है उसको चाम्पकारों है इसे होने हैं। जोटेंग जोटेंग अपना सुधार करता स्त्री मेरें जीताका स्थार करेगर है। में एक वर्ष स्थाराका अस्त्री अर्थें और मेरे जगर वहीं वहीं पिम्मिनिरोपों है इस्थिल स्थाराके सिन मेरा पर्व कर्ताव है कि जी अपनी सार्राहित, सम्बन्धस्थकारी अपना साम्पाबिक सिन्न स्त्रीको ने वह करते हैं। नह बहता तो गर रहा, व्यक्ति स्वार्तिय होग्य है कि



स्थायलस्वन ।

करने परने हैं और समाजमें बादे किनान ही सुपार हो जाय, चाना वर्षित कमा मनुप्योंको मीतिहरूके कमन्याओंने पुरकार नहीं मिल सक्या—वें कमन कमा पहें हिन सक्या—वें कमन कमा पहें, हम प्रकार कराया पहें, हम प्रकार की हमा साम प्रवास कमा पहें, हम प्रकार की हमा एगा एनना मनुष्या है। वहिं कोई हम प्रकारकों हम्पर को भी, हों भी पर मायल नहीं हो सक्या।

सब लोग मेहना मजरूरिक बाम बहुँ छोड़ सकते, यह कमी संसार्ते होगा रहेगा। किर भी हमारी समझमें यह कमी करूँ करियों पूर ही गरकी होगा। किर भी हमारी समझमें यह कमी करूँ करियों पूर ही गरकी होगे होगा हमारी होगा हमारी होगा हमारी होगा हमें सहसे हमें हमें के सूज्य जब जाये। बेह वह दें हो जो उनकी दाता हमार जाये कर हमें हमें के सूज्य जब जाये। बेह विश्वास हमारी हमा

बहुता से सनुष्य भागमेदार के कामने तिरास और उस्तारही यह है जाते हैं, स्वीत से संसार में हमती जारी वहीं हकने करना जिनता से अपने आपके सेमा समान है । वे तात बेस ता का बहुता के दि उसका जुम्म ही इसे बात प्रास । वे तात्वक शायद दिनीका बात समान का आह दूसरिए उस अर्था आपके प्रत्या जात नहीं काना तब तक जात का निक्क सामित है। एक बार एक हालना करना का स्मार्थ करना । अध्यायको दूसका कारता मानवा ना प्राप्त दुआ है उनुत्यक समान ब्रह्म आप पा कि उसे करना होंचा प्राप्त प्रभा है उनुत्यक समान का स्वाप्त का सामा पा कि उसे करना होंचा प्राप्त प्रभा है अनुत्य करना ना स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त का स्वाप्त स्वाप्त का स्वाप्त स्वाप्त का स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त से अपना अपना स्वाप्त स्वाप्त से स्वाप्त सामा स्वाप्त से स्वाप्त सामा स्वाप्त से स्वाप्त सामा स्वाप्त से स्वाप्त स्वा

अपना स्पार, सुविधार्य और कटिनाइयाँ।

आसीद्वारके विषयमें भी ऐसा ही नीच विचार गुढ कोर्गोमें फैला हुआ है और समातमें मानवी दीवनके विषयमें वो विस्वदिनकों न्यूनाधिक क्षमें स्वा प्रपत्तित रहती हैं वे हम विचारको और भी प्रयत्न कर देती हैं। आत्मो-दार एक ऐसी शांक है जो चिरावों जैया करती है और आध्यानिक गुलोंको चहाती है; परन्तु अगर हम उसको हुमरोंने वाडी मारनेका अपया मनके हाता मना हटतेवा मापन समग्र हों, तो हम उनके मूल्यको चहुन कम कर हेते हैं। यदि मनुष्य अपनी उसतिक टिए और समातमें अपनी विशित्त्वों जैया करतेके लिए परिधम करे, तो यह निस्मेंद्रह अपन्य केष हैं, परन्तु ऐसा करते समय अपने आपको —अपने चरियको —पिरावें ह पर देन पादिए। मरक् करते हारिका गुलाम बना देना पहुत सुरा है। वो मनुष्य सफलता माप्त महोनेरर अपने दुर्भावको रोता है उसका मन बढ़ा ही संबीण और निकम्मा है; व्योंक मफलता वोरे दानमें गहीं मिलती, लिन्नु वामकात्रकी पातोंमें विश्वमा करने और उनपर प्यान देनेकी आदत शालनेसे प्राप्त होती है।

सिंद हम शिक्षा पावर पेयल तोश दिलानेवाली और देंसानेवाली पुस्त-कांको पट्-पट्कर मनीयिनोद विया करें, तो इसमे भी शिक्षाक स्वभिषाद होता है। आजकल बहुतमे मनुष्य ऐमा ही करते हैं। देंसी, टहा और जोश दिलानेवाली पानींके लिए आजकल लोग ऐमे पागलसे हो रहे हैं कि हमारी पुस्तकोंमें ये दोनों पाने खूब पुस्त पदी हैं। आज कलकी पुस्तकों और पद-पार्ट्रकाओंमें सर्वेसाध्याणकी सचिके अनुसार खूब घटपटी बातें भरी रहती हैं, तो आनन्ददायक और हास्योग्यादक होनी हैं और सब सरहके लेकिक और पारमाधित नियमेका उद्धान करती हैं। आज कल उपन्यास पदनेका बीक बहुन बहुना जाना है परन्तु इस जमानेक अधिकाश उपन्यास ऐसे हैं जो सब दोनोपर जान तिर्माकन नवपुंतकोपर बडा पुरा असर डालने हैं। वे उनको स्वयान जान तकी सेर स्वरात । उनको आलमी बना देन हैं और उनके

 ११ शावम अध्यास करनार । लाज पार अध्या असी र वोज्ञास कलका तार र १ शिक्षा भित्नसाला अध्यादा लिखा १६ कार्ना प्रजा अस्ता हो। १८११ व्यव संबंध सामास्य जान १ स्टिना १ १ इस प्रकारक स्वाट प्रकी १ ११ सम्पर्ण स्था युन ११ रशा युग्ने, समा चंद्र चारस पहले हें नंत दक दम प्रसाद माननादी शिंक मातान दिनीही देविन हाया । नहीं चार 1 : ११०० जमन दूगी सवादी पुनाहीही वहनेंसे मीत मार स्वन्दरी उन्तरी कार्यों कार्यों आपने दूस्तरों के प्रशिक्ष मात्रपंते हैं । देव्य उन्तर प्रमाद कार्यों हो तम् दुस्तर में प्रशिक्ष हार्यों है । दें । यो भागा मार्गन दुस्तरात दहा दान है ने हुद्द भीर कार्या हार्यों के एवं हो मार्ग भागा मार्ग देविन कार्या हिम्म देवि हो है । यह विभागि पार्यन मार्ग है ने द्वारा है नार्या है नार्य है । यो नार्या है । यो विभागि पार्यन मार्ग है । दे रहारा रूप्तराम कार्यन कार्यों है तक हार्या नवी हिमारी कार्यों है पर्यों दूर प्रसाद कार्यों कार्या कार्या है तक हार्य नवी हिमारी की प्रशिक्ष है । इस्तर कार्य है भीर व कार्याव्याम करना दूर्या है । यो दिन्हीं वार्यों है कार्या है । या दिन्हीं है । स्वत्य नार्यों हार्या इस्तर कार्या हर्या है ।



रयापादस्यत ।

पालन नहीं काना और सेरा चिन सदैव कारोडील रहना है। "इस नार उनसं जिल्लान शालियों थीं, तो भी चेन कर सके। ये कुछ बहुन वरितर्क पुनी वह और अनसे बहुन्द्रहरू सर गये।

आगाहित्स शीवरीहा जीवन काम्परेंटके जीवनमें विल्हा वितिम या : उत्तरा गमन्त जीवन भावह, परिश्रम, भाग्मीहार भीर रिपोपार्वनम रिभिन्न उताहरण है। वे काम करने करने और हो गर्व और निर्देश यह गरें, पान्तु उन्होंन सम्प्रियनाको हायमे व जाने दिया । जब वे ऐसे समजी है गये कि उनको बचें हे समान एक ताया अपनी गीएमें विशानका एक कमेरी नुपार कमरों में ले जानी थी, नव भी उनके उच्चादन प्रशास म दिया । सर्^श वे और भीर देवम थे, जो भी उन्होंने माहिन्ययवादा क्रम करते गाम्य (र क्षम गररीका प्रयोग किया था:-" यदि मेरे समाब और लोगीम भी नी व्ययाल है कि विशा देशकी उपनिवा एक बंधा कारत है, तो मैंने भावे देशकी वय येतिकहे समान रोता की है जो युद्धंत्रम देशके लिए जाती मन दें रेग है। मेरे परिश्रमका कल बाद जो हो, परम्पु मुझे बागा है कि मेरा दर्भाण असर रहेगा । इस प्रशाहरणको नेमचर स्रोत आस्मिक निर्वेणमारा माहरी करेंगे। भारितक निर्वेतनाडी बुरा बीमारी भाजकल बहुन केली हुई है। मेरे कोंसे तेवी शाविक निर्वेचना समा गई है कि वे दिशी बापस विका मही करते.- ने यह नहीं जानने कि इसकी क्या करना है। ये तेनी केउसी हैरा करने हैं जिल्हार के शिकाल का सके बीट जिल्ही अन्ति का सके. कन बह बीज उनका मिलनी नहीं। एस सन्त्योचा प्राप्त सर उत्तरामधी रेपे as wer more our out and it amore you and withit מי עום משייום עניים בי ביים ני שיו ניין אור מיים מיים אורוים אורוים אול # 454 \$184 \$ - - F- - F' \$ FU SINET THE WIN PA when for a unit reason is near the man well to

when we had not a series and great weight of the series of the series were great series of the series when the series were series when the series were series with the ser



4 to 2 12 15 5

कर । यह दो लोग रामुक्त का मुक्त का रोग का हुन है। यह वा बीमों है। यह उस का बीमों है। हुल्लामा नहें हैं। यह उस कर कर का किया है। ये साथ दिस्ता के पर कर कर कर कर का का किया है। है विश्व है। विश्व ह

tion to be set at the westerful allow the top all the first of the control of the

And the desired services of the services of th

. te



लाक तथ्य द्ध किया जाता है। तात हम किया छात्रही करना मेन्दें हैं, अ लाक कर तथ्या करते करते कर है कि हमार दिख्यों यह दिख्या हैं। अ कर का करवाड़ कर तथ्ये हैं और दस हम्छ छोड़ेना विद्यादियों में अवक तथ्या राजकर कर तथ्या चान, तो किर हरिताहणी वर्षा में नाम करता हम तथ्य नाहर्ष हैं।

मा दर जि. में में में पूर्व कुछ काम कर वाया है। सर्व मां वे स्वीपात र कार स्वापक केन समझ हाम हिम्म क्रियों स्वामी कर मां र के क्षी - मा बसूब बहुत का है हो हामा अनुसार है कि करी से में राजीय का साथ हों जिलाम सुरुव होई हो स्वाप अनुसार है वहीं है हम सुमान के वहीं ' उस्तु वहि यह कमा दूस्सा हैं

ries et esse pa a fine grand esses det dentell del AM and also die on anything the part and the fo were never to only with the the the terminal that theme DIN 174 & American September 4 184 4 184 4 184 4 more mora elec des serie de seção el? E, em legistal de E is strong type size a factor mater of from the Wi with alleged gree to two sent, server grad which t stands the one tex was price on the surply by should ! were the state of the state of the state of see for the life while, putch the extremit was the by the the third angulate from motions made out forms to broad and the states ET AN AND STREET CA THE STREET OF THE ALL AND A SHE A Statist from a wind any alternate from mill with BACK & KENDE SIL TO MICE OF MANBOO AND PAR MARTISTACION MARTINE ANTO ANTON ANTONIO PERO MARTINE PE -----



लियना जली हुई एक्टियोंने मीमा था! उनके पिना अध्यन्त दरिद्र थे। है उनके लिए लियने पद्मेश सामान न घरीद सक्ते थे। अध्यापक मीमर अपनी युवा अवस्थामें बड़े दरिह थे। एक बार उनको एक पुरुषकी जरूरत पड़ी। उनक पास इतना रुपया न या कि थे उसको भोल हे सहते। बर उन्होंने वह पुस्तक किसीमें साँग की और उसकी अपने दायमें नक्ष क डाछा । बहुतसे निर्धन विद्यार्थियोंको अपने निर्वाहके लिए प्रतिदिन परि अम करना पद्या या और इस परिश्रमके बीचमें कभी कभी इधर उपार शानकी प्राप बान उनके हाथ लग जानी थी। ये इसी तरह वराश परिश्रम करते रहे और फिर उन्हें सफलताकी आशा हुई। एक प्रमिश्र लंगक और प्रकाशकने युवकीको उत्पादित करनेके लिए एक स्पास्थान दिया था जिसमें उन्होंने अपनी पहली गरीवीका हाल इस साह बवाद विय था:-" तुम्हारे सामने एक स्वशिक्षित मनुष्य सदा है। शुक्रमें मेंने स्वार छेण्डकी एक छोटीसी देहानी बाटसालामें थोडीसी शिक्षा पाई। इसके वार में एडिनवर्ग नगरमें पहुँच गया । वहाँ में अपने निवाहके छिए दिनमर मेर नत करता या और रातको अपनी मानिषक शक्तियाँको उन्नति किया करता था । सभेरे ७-८ बजेसे रातके ९-१० यजे तक में एक पुस्तक वेचनेवालेंबे यहाँ नीयरी करना था। इसके बाद में खोनेके बल्पसंखे बृद्ध बल बनाइन पदा वरता था। भे उपन्यास न पदता था वर्क्ट दिलान भार भन्य उपनेगी विषयोको अञ्चयन किया रुग्या था। स्टब्स्ट साथा साध्यो का बार्भ उम जमानका भर वर पटन्टर सार गड कर १ ८ । नव उस उस पानका सर्हे क्षा स्थान सम्बद्धा वर्षा । योगा जीन न । ता यान्ता हा स्थेति सुप्र आन मामारायास इ. राजन १ ०० १ माइमाहाता जिन्हा

स्म त्राच्या स्टूडिंग स्मान्त विश्वास्त । इ. साहुक्क १७ व । स्वर्गेष्ट स्मान्य स्वर्गेष्ट प्रमान्य स्वर्गेष्ट स्वर्गाय अर्थे स्वर्गे स्वर्गेष्ट स्वर्णेष्ट स्वर्गेष्ट स्वर्गेष्ट स्वर्गेष्ट स्वर्गेष्ट स्वर्णेष्ट स्वर्गेष्ट स्वर्गेष्ट स्वर्गेष्ट स्वर्गेष्ट स्वर्गेष्ट स्वर्णेष्ट स्वर्गेष्ट स्वर्गेष्ट स्वर्णेष्ट स्वर्गेष्ट स्वर्येष्ट स्वर्णेष्ट स्वर्णेष्ट स्वर्णेष्ट स्वर्णेष्ट स्वर्णेष्ट स्वर्णेष्ट स्वर्येष्ट स्वर्येष्ट स्वर्णेष्ट स्वर्येष्ट स्वर्येष्ट स्वर्येष्ट स्वर्येष्ट स्वर्येष्ट स्वर्येष्ट स्वर्णेष्ट स्वर्येष्ट स्वर्येष्



केतन पांच व नीर नाता चलां कातका निर्वाष्ट्र काती थी, कारपूर्व हैंबार प्तको मानी मानीविका मीर विधीपार्जनके किए बड़ा भारी परिश्रव बाग वक्ता था। वे रात दिलाने केवल दी बंदे भीते थे। बनके निताकी शबके नमय वापा बाद बने तक काम काना पर्ता था। ईपरवन्त्र इंधर रात्रे इल बत था माने व भीर अगने निनासं यह कह हैते में कि एतव मार्च बारव कर बदना काव नवास करके सांचा कर तब सुरी बगा दिया की 🖰 करन्यार इनक रिया बारह बन बता देने के और सब में अंदी मह कान थे : हेबायान्त्र सीर उसके विना कलकतेसे उदने से। पान्तु हैबार्यन्त्रही माना भाग साथर तक गाँचमें रहती थी-इस बरारे कि शहरमें रहते के बहुत बडेता । इंबरचन्त्र कळक्रतेमें रहकर बढ़ने थे । वे अपने कियु और कारने विभाग थिए जोजन बनान थे, यहीं तक कि बरतन भी जलींकी मौजने वर्त व : व वात्रारका भी सब काम कात काते थे । कदिन वृश्चिम क्षेत्रें व कर कार सामार ता हो तथ और हुनी परिश्रामी प्रमुखे कई बार आपूर् कियों और पुरम्बार की फिले । कुछ बर्पने ईक्टबराईने हुएती संरक्षत की कि व काने मामव करें कारा रहित की गये। उन्होंने मेरहार्ने करियाँ केरणी क्षेत्र कामानाम क्षत्र पूर्णि तथी । यहने प्रदेश के प्रथान वार्गी मानिकार कोर्रिशिकाम बाधियन बनान गांडन निवृत्त हुए। दिन वासीन बीर बीर इननी दशारे कर की कि वे नीम की कामा सामित केरने काकृत बार्रकाड धार्मका वा तमें तीर इपड बाप दी बाप इनकी हैं की and acing depa memeral's between fund an i will B कीकी रिवरंत्र की प्रवास करून मरमाहरी होती की, परवर्त के बह निर्देश क्यांच्या कारत हा क्या हो है। सम्हे

' बागुन दि विश्वनीय सनी बारिस्थानिय । !"

सीरदेव नाराभाव किए व क्यों वर्ग प्रमाव के कि है। इसीरी मुद्र हार देवा काव तेना दुग्लिदेव नाराभा दो। कावे नारदितीं के वि सहस्व काव्य काव तार है। वार्ग प्रभाव तेनक है। वे । वाल्कि सुव्यक्ति वार्ग काव्यक काव्यक महावार का विकास के सार भी क्यों का व्यक्ति है।

-weste mes einem die grie tat fi fie fint bi



स्यायलस्वन ।

ईपरचन्द्रने कहा कि "इम तो तुमको जानते भी नहीं; तुम कीन ही ? इस भारमीने जवाद दिया कि "द्वानिये ! आप मुझे गई! प्रधावने, परम्पु में आपको जानता है। मुद्दो आपने एक पैमा सींगनेपर एक दूरवा दिया या । मैंने उस रुपवेमेंस चौदह आंत्रके आम रूकर बेचे । उनसे मुझकी कई आने और मिछे । मैंने उनके भी आम छेकर वेचे । में इसी तरह माम अ-अकर बचना रहा और मुझे लाम होना रहा और भव मैंदे उपति करने करने एक नुकान जोल की है, जिसमें सब सेरा और मेरी शाताका मुक प्तक निर्वाद होता है।" यह सुनकर ईबरचन्द्र यह प्रमस हुए और उसकी रकानमें जाकर थोड़ी देर बैडे ।

7 1 2 - 8 1

एक बार ईसरचन्त्रको (एक पश्चारा) मानूम हुआ कि नगर (कश्वना) में एक मदानी महाताय दहरे हुए हैं और गरीय हो जानेके कारण इड दिनीय बड़े मंबटमें हैं । ईश्वरकार्तन मुस्त ही सपने एक माइमीकी वनका हाल जाननेके लिल भेजा। वह भारमी उन महासी महासबक्षे महानपर पर्दुचा । महानका मालिक भी वहीं रहना या । पुत्रनेपर महानके माहित्वने करा कि " हाँ, दे मेरे मकानक नार्चके दिस्मेम रहते हैं। मे इन रिशें को गांव हो गये हैं, इस कारण उन्होंने कई महीनेथे मेरे महानका किराबा भी मही दिया । में कई बार मीत चुका है, वरम्यु वे दें ती कहींने दें है ही तीय दिन्य उनका और उनके बचोंको कुछ सानेको भी नहीं मिछा । मुझे दुवती क्या दशकर क्या क्या भागी है। " किर उस भावभीने महानी महात्वेड पास बाजर बानचीन की । सहामीने क्या कि "मैं भावकण को संबद्धी है। इस बतामें बहुन कुमन दिश्यका मी मुझे कोई बाईका छार न मिना, का भाग दल महायना काना । यक बायून कहा कि इस शहरामें एक विया-कारण बहत्त्वत रहत ६ दनय मुखका महायता बिल बावती और उन्हेंदि an arra te ire el le serarrie er de sia fan feit दन १५ ६ , ६ र ६= र ८ १८ ८ अहरता स्थासना है। " वर्ष --- 1 461 3576 115 11 2 20 104 19 49 18

ार करा के उत्तर राज्य आला **पा**ई, ही

व्यक्ता मुधार, मृतिधार्य शार काँद्रनाहर्वे।

उनमें सफा-रार्ण पुरते भागा।" यह भाइमां महामां महामाबके पास सथा और उसने उनको रूपये देवर ईषरणहादी सब पाने मुना ही। महार्था महाराय ईश्वरणहादी ह्यानुता देखक से पड़े भीर घोले कि " बहि सी रूपया हो, भी हम लोग पर जा सबने हैं।" भाइमीने लीटका ईप्राचाह्य यह बान वहाँ। ईश्वरणहाने उसी चना भी रूपया भेत हिये भीर उनका आहमी उन लोगोंनी होनियासिके साथ जहात्वार सवार बताके लीट आया।

कार्यके जिल्ला पालिलों संग्रतके अध्यापक श्रीधर गर्णेश जिल्ला-षारेका जन्म एक बड़े दस्ति घरमें हुआ था । बाल्यावस्थामे 🕄 उनकी शाताका देहान्य ही गया था । उनके विता इतने गरीय थे कि कभी कभी उनको भीम भीमकर अपना निर्वाह बरना पहला था । उन्होंने किया शहर अपने पुत्र श्रीधर राणेदाको एक स्कूलमें भेजनेका प्रवंध कर दिया और शीक्षर गणेशने शीप्त ही अपनी उद्योगपरताका परिचय दिया । स्कूलके अध्या-पक उनसे यदे प्रमश रहने थे । उन्हें करूं पार छात्रपृतियाँ मिली, जिनमे उनका निर्माह होता रहा । फिर उन्होंने मैडिक्यूलेशनकी परिशा पास की। इस परीक्षाम भी जनका नम्बा बहुत अच्छा रहा और उन्होंने छात्रहति पार्ट । किर ये पूना शास्त्रिक द्रोतिल हो गर्भ । उनकी अगरेकी पात्रपरधनापर बिन्सियल ऐसे शुर्व हुए कि ये उन्हें अपने पानसे आर्थिक सहायता देने छते। सन १८०६ ईसवीमें इस कालिजमे उन्होंने एमक एक की परीक्षा पास की। फिर ये तरना ही पूना हाईरहलमें अध्यापक हो गये और इसके बाद विल्सन कालिजमें संस्कृतके अध्यापक नियुक्त हो गये और रतलाम, खालियर इत्यादि वर् स्थानींसे उनके पास निमंत्रम आये-पहाँके राजा उनको ५००) मासिक धेतन देनेको तथार थे; परन्तु उनको पूना कालिजमे ऐसा श्रेम था कि शह उन्होंने न होडा। उन्होंने अपने जीयनका बहुत बहा भाग विश्ववाशीकी सहा-यता देनेमें विता दिया।

भास्कर स्मिन्दर पालंदेके पिता अध्यन्त दित्त थे । भास्करके श्वचर-ममें ही उनकी माताका स्वर्गवास हो गया । श्रीधर गणेराके समान उन्होंने भी बहुत कष्ट उटावर विघोषांजन किया । श्रीतमें उन्होंने ऐल्लिन्स्टन कालि-बसे एम० ए० पास किया । फित उन्होंने श्राप साहब जमार्जिशीकरके यहाँ १००) मासिक्पर नौकरी कर ली, परन्तु कुछ समय याद उन्होंने यह नौकरी 中中共政制部 1

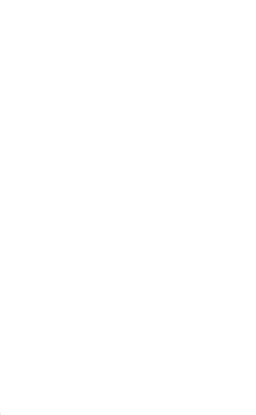
'केरल कप भार भार पा भीर के एक क्यूनरी इक है मानिक पर मध्यापत्र हैं। ार बनके कर के अवन्ते हैं सके परितर में ती कर बार गाँच । पूर्वी की वारे प्रथा fir at rere et fire : gu ffall ure geat fire 100) milit fl

त्या । रचन वह प्रशापन वह कि वे अपना काल बर्ग मेहनाबे मात्र सी ता का दर दर द . व सन, भने वस्ति काम हते। यही सक कि नी नि पर त - प व, साम्बद्धा प्राप्त करीड़ अब ही एक। र प्रच रित्तराह समुद्रका अस्त्र वैवेहके विकासमा और माहित्र-

मना दर्भाष्ट पद लोग दास दरस्ताम है। वे बतुन परिवृत्ति । अव में काफ हर वन वनके निवाहर होत हुए व वर्षक हुए बन इनकी महारक्ष पराध्य से लगा. व य वा बरावक हो, पारत् हिरायत स दार और नेर्दर ses and with sea an ale am fe and general and found का १९ वर प्राप्त का के काल वर्त । कर्त कर्त पूर्व साथ विशेषि they even't at contrast meit bu ft all ; me una virt ges nicht ?

Are no a se invest more use at , and heaft by triffe मान्यान्यान्यां अस्ता अन्य को सीत इससे इसका मान्य पहुन सम्पन्न मान्यी erus sauc na progén tima e min : greta mercan un alt m AT EN AN HE TONCH EVE OR AN APPRETE MORE AN BILLIE Axix or the real terms for a sec placed and my MF 5/2" + ASA W it the We put they , sight with get the At do not so the err or as grown they . Sad you derive men! warren er ein en nie mie mie innegerigt fermange, d'e mittel tony par's deed wing it was intend much by seed direct months and the Rase twee about his was their at you er such . gree at premy bull , and don't

wird of book together a sea for they he marked to I would take the transplace of your and property product BE AND MAKE THE EXAMPLE FOR THE BEEF THE FEET # 8 a formation and the court of a manufacture of



जब २९ मानाप्रस्तान चर्च इत्तरी बाताल मुखदा जुल दिवाना दशा है र में १९ व नरे हुंद हात वर्ष हर । यह बच्चे में अनुरुष् शह बहामा सन् विक कृत व्यक्ति । इ. १ व. १ वर्षा क्षा की ब नामका केलका क्षीवार्व मा अन्ति par site eine fiete feinemaßt nie an em bent git ang Perm ett be ifte an ifel feinen mittel milb mitt

ा कारता अपने मुखांदा मीचार आसानेसे क्षित्र अस्में सी। प्रथमिन erta-24 umarerent betein umes affen efente miteles n f an but golabe seinfreinel age in hie ifige 18 t feit jeife 4 ft is f fag bis neten fit i ernt. Per de e's per fan tig tig at a gent gen gen fort

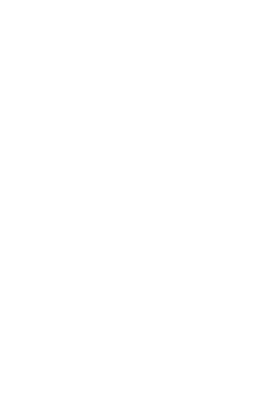
Mere at fire was the two my also day from mit a mit ?" We war then their year and se from set & at 1946 War their bound etal um mir it, ferte mern hourt the at the set sen to property and afraire a the Art PERSON WAR WITH THE STAN THE MANY ME FERS & FOR cal wer extract at them may be not an unit ferte arm

widelast fores provident & stat fee will be think and the spring and a strengt of the stre street and ALL RE TO THE ENGINE WHEN THE BEE AND THE THE with the term of the contract of the first

.... --. . *











नहे शास उस मामां या जहाँगर उसने पहले संगतरासीहा हमा हिमा ला।
नव यह संदेर मोजर उदला या और समने करांची निर्माणी नातः
वेदला गा, नव उसको पहले वहल सकारोडी ने विचानियाँ तिलायाँ देगे
थीं जो उतने दसने कराने हायोंसे नताई थीं। तुधा हिमा उसे नव इसे स्वार्य हों
दी कि सामवाले कहीं गुर्मा पहचान न लें कि मैं वही पुराना संगत्न है
वीर उस लिए मेरे सामा हमा अनित व माणीन नियालगार है
वीर उस लिए मेरे सामा हमा अनित व माणीन नियालगार करें क का
जाव। परन्तु उसको हमा करांची पिलाम करें ही आवश्यकान गरी, स्वीरी
कर बाम चोगण करणायक निकला और एक बार एक सार्यजीवक सम्मेल
उसके सित जान करणायकी माणवाली सुप मार्यजा भी गई। इस वीर
असके सभी जान रहणायकी स्वार्योगी, अस्थान और नामान्य
सामान करने समे, और जब उन कोगोंकी उसके प्रवर्णों के, बहिताएंगे
और सार्यांक (पिलाकी नवत पड़ी तह उन कोगोंने उसकी और

िन्नु नाराह भाषणह हाक्य रहान भी विष्युद्ध ग्रांशम बरहे माहित्व सेन्सम भरता नाम ज्या ना व वह साधन व इस दिन इनहीं सुझे कर सराना नहमसे राजा राजा व्यापम उनह सप्याप्ट हहा हों। व स सर रूप मात्र वह रहा हो लहह रहनहीं नहीं भाषा।" हिर्







कि इसका सुधार हो ही नहीं सकता।" प्रतिव केलक वास्टर स्काउ बधपनमें महामूत्र था। उसके काचापकने उसके निययमें यह कहा वा कि "यह तो मूद है और जन्म भर मुद रहेगा।" खेटरटनकी माता भी शुरू शुरूमें यही कहा करती थी कि "यह ऐसा सिडी है कि किमी मन-लबका न निकलेगा।" पेलप्ताइरी कालित छोडनेपर भी ऐमा ही मूर् बना रहा जैमा वह भरती होनेके समय था। परन्तु कालिज छोड़नेके बार उसने बहुन विचा सील ही और यह एक सप्रसिद्ध विद्वान गिना आने हता। लाई हाइव-तिमने भारतवर्षेमें भैगोशी राज्यकी भीव बाली मी-एक मूर्ड रूड्का था। उसके कुटुम्बवार्लीने उससे भएना पीछा छुडानेके लिए उसे भारतवर्ष भेत्र दिया था । नेपीलियन और धेरिताटन वोनी ही कड्डानमें मैदउदिके थे । उन्होंने स्कूलमें कभी क्यांति न पाई । कालसमें भीर बारटर कुक जब स्टूलमें पड़ने से नव बहुत ही मूद और उपहुती से। मान्दरने इन दोनींको यह कह कर निकाल दिया था कि "से मुद्र कमी बी सुधर शकते ।" मनुष्यजातिका परमहितेची ज्ञान दृष्यई मान वर्षे नक स्कूलमें पदना रहा, परस्तु तब तक उसके लिए काला अन्नर भैंये बरा-वर दी रहा।

बारन्त आरम्बर्डने यो मुळ सम्बंधि विषयों कहा है यह प्रोड़ महाजी विषयों भी विख्यान मान्य है—'प्या में कहां हैं यो मेर ने ने हैं हैं प्राची निवास साम हों के स्वास साम हों है कि मान्य साम हों है कि मान्य साम हों के साम हों ने बार मेरे कमाज़ी ने बार मेरे कमाज़ी ने क्षा मान्य साम हों है। हमा कर मी विचारनी दे कहा कर मी विचारनी हमाज़ के साम हो मी विचारनी हमाज़ कर के ही कि मान्य हमाज़ के साम हो मी विचारनी हमाज़ हमाज़ की हो मी विचारनी हमाज़ हमाज़ की हो मी विचारनी हमाज़ हमाज़ है। किम बुद मान्य कर मान्य हमाज़ है। भी हमाज हमाज़ हमाज़ हमाज़ हमाज़ हमाज़ है। भी हमाज हमाज़ हमाज़ा हमाज़ हमाज़ है। भी हमाज हमाज़ हमाज़ा हमाज़ा हमाज़ा हमाज़ हमाज़ है। भी हमाज हमाज़ा हमाज़ हमाज़ हमाज़ा हमाज़ा हमाज़ हमाज़ है। भी हमाज़ा हमाज़ा हमाज़ हमाज़ है। भी हमाज़ा हमाज़ा हमाज़ा हमाज़ा हमाज़ा हमाज़ा हमाज़ा हमाज़ हमाज़ है। भी हमाज़ा हमाज़ हमाज़िल हमाज़ा हमा



पड़ता या । गर्मी, भूप, जाड़ा, मेड उनको सब बुछ शारीमें सहब काना पहला था। उन दिनों कलक्तेमे बाँढीपुर जाना भी बड़ा मौतिमदा बाम था, क्योंकि आर्गमें लुटेरीका भय मना छगा रहना था। एक बार कलकरेडी थीटने समय रामदुष्टालको मार्गमें रात हो गई । माकिकका राया वनके पास या । इस सबसे वहीं उस रुपदेशे कोई सूट व होने भाग पासी गांवींस दिन्दीके घर नहीं ठडरे, चरन् एक पेर्के नीचे गरीर मुमाहिएकी तरह पर रहें । उन्होंने कष्ट उटा कर मारी राज उसी वेहके शीचे कार दी । मार्निः कड़े पनकी रक्षा करना वे अपना परम पर्म समझते थे । उनको भपने आहि-कर्क कामके छिण् जहाज्ञार भी जाना पहना था । वहीं ने दो बार पारीने दुधनेले वये । यही कर्नस्यारायणना और ईमानदारी रामदुलाएकी आरी उन्निका मुख्य कारण हुई । एक घटना ऐसी हुई कि जियके कारण शानु । सालके सारी दुश्तिनाका भन हो गया। एक बार मालिकने रामदुसालको सीरी मी राया दे कर बहाब सर्वादनेके किए दाला भेजा । दालामे जनमम वहा-वोंका नीजाम हुआ करता था । शामनुष्ठाकने अपने मालिकके पर्शे रह ध्वापा-संबंधी ज्ञान सूत्र प्राप्त कर किया था। जलमें हुने जन्तजी है गृस्यका अनुमान करनेमें ये बड़े विश्वहरूत हो गये थे । जब शमपुकाल शका पहुँचे उम समय बीलाम हो भूका था। बनवृत बन्हें दिराम होता प्रा । परम्नु बहाँरा वर्षे माण्य हुआ कि उसी दिन एक हुयाँ जलनम् जहाजका नीलाम होनेवाहा है। इस अहातका बहुत कुछ हाछ उन्हें पहणेने ही मालूम था। अर नीकार च १००० जहाजका पट्टा हुए हाल उन्हें पाइन्य हा सार्व्य का विश्व साथा हुआ तो उम्राह्मक होना बहुत कम करें। शमपूर्वाक हाड़ गर्दे हि अहान्यर्थ साहित्यत बहुत दिवाराडी थीं, इस किंगु उन्होंने करने साहित्यों विवा एउं ही सार्वा जीनिसार इस बहाजको त्योद दिवा। स्वाहित्ये स्टू क्य बेरान्त्र व्यासारी वडी भा पहुँचा । इसन श्राहणाकमे उस प्रदावधी बारिएका पादा । शमपूर्णालन एक शांस रायो नका शका उस प्रदासकी वस संगामक राध क्य रामा । गमहमानद मार्ग्यका रूप वर्षशासी कृष मी सवर न था । परन्त् रामद्भावन चंद ६० विश्वादा माना स्था स्थि सारिक्क मामन तम न्द्रया भार वह व नागदका माना हाम कह सुनाया। रामर्क कर ब्लामा वह वृ'द्यान व मण मन्त्रदी हता हरता झारते में। द्रमान्य द्रभाग्न कर का एक बाल स्पता स्तम न छका श्रममुखासकी ही है





अपना सधार, सुविधार्ये और कडिनारवाँ।

दाित्यों है। सेती एक प्रकारका दोप भी है। सकती है। स्पाँकि जो रुट्का जार बाद कर लेता है वह पहुषा उतना है। दार भून जाता है; और एक दान पह भी है कि उसकी अराँड उपोग और आग्रदके गुणेंकी उदाति कर-मेंडी जरूरत गहीं पहती, परन्तु भेदमति पुषक दन गुणेंकी उदाति कर-मेंडी जरूरत गहीं पहती, परन्तु भेदमति पुषक दन गुणेंकी जाता है। ये गुण हरतरहवी अपग्री आद्त हार्टिक लिए बधे मूक्यान् हैं। देवीने कहा या कि "भै दीसा हूँ धैसा भैने अपने आपको स्वयं पनादा है।" यहीं यात हरएक मनुष्यं विषयमें सप है। मनुष्य अपने आपको दीसा दी पाइंडी सी पह हरएक मनुष्यं विषयमें सप है। मनुष्य

बहनेका सतलव यह है कि जब हम स्तृत या कालिज में पहते हैं तब हमारा सर्वोत्तम सुधार मास्टर्रोद्धारा उतना नहीं हो सकता जितना हम यह होनेपर मेहनत करके स्वयं कर सकते हैं। इस लिए मातापिताको इस बातकी जब्दी न होनी पाहिए कि उनके पर्वोकी पाहिए कि उपित समयसे पहले ही चटपट हो जाय। उनको पाहिए कि ये संतोपपूर्वक बाट देखते रहें; उत्तम उदाहरण और सान्त शिक्षाको अपना काम करने हें और घोप उनके भागवपर छोट् हैं। उनको इस बातका ध्यान रस्ता चिहए कि युवक किसी म किसी सहस्व प्रातिक व्यापमा करता रहे, जिससे यह स्वा तन्तुरस्त हो जाय। उनको चाहिए कि ये युवकको आमानेदारके मार्गपर लगा हैं और अपन उसके उद्योग और आपहकी आहतांकी सायधानीके साथ पृद्धिक हैं। इसका परिज्ञाम यह होगा कि अगर उसमें छुछ भी स्वाभाविक साम्य हिंद तो । इसका परिज्ञों बहु होता जायगा को सो जियादा मजबूर्ताके साथ और जियादा अपी तरह अपना सुधार करता चला जायगा।





बात भी मनुष्योंके बरियपर बंदा प्रमाद शालती हैं। घेस्टका क्यर है कि "पढ़ बार मेरी माताने मुझे ध्यारसे चुमा था । इसका जगर बद हुआ कि में चित्रकार बन गया !" ये बातें देखनेमें छोड़ी मालम होती हैं, बरने मर्ड व्यक्त भागी मुख और सफलता बचपनमें देनी बातींका बीग मिल जातेग निभेर है। जब फाक्सविस बक्तटन अपने जीवनमें एक उथ परम पूर्व गया तब उसने अपनी माताको किया या कि "आपने ग्रुटमें मेरे सम्बद्ध पर जो सिद्धान्त अंक्रित कर दिथे हैं उसके असरका में निर्तर अनुमद दिया कारा हूँ । यह असर मुझे शासकर उस बक्त अनुमृत होता है जब में रूप-रोंके लिए कुछ बाम करता है ।" वनसदन एक अग्रिशित मनुष्यका भी नु भहमान मानता था । बहसदन इस मनुष्यके साथ सेज खेला करता या, महा होकर जाना था और शिकार रोटा करना था। वह मनुष्य दिनना पर्ना हो विखङ्क न जानना था, परन्तु बद्दा समझदार और हाजिर-अवाय था ! बाप-टनने उसके विश्वमें एक बार कहा था कि ''वह मनुन्य साम कर हम हिए यह कामका था कि वह इंमानदारी और आरम-गौरवके नियमेंकि अनुमा चलता था। जब सेरी माता सेरे थान न होती थीं तब सी यह कोई देखें बात न बहता या कि उसके सुनकर मेरी माता बाएगेंद्र करती। बह बारे सामने सदैव ईमानदारीका सक्ष्में ऊँचा भादरी रसना था और बड़े बड़े रिपी-मोंडी पुरुषोंने जैसे पवित्र भीर उदार विचार सिटते हैं बैधे ही विचारि बह मेरे मन्तरको भरा काना था। वह मनुष्य मेरा प्रयम और सर्वेष्ठने विश्वक था।" ऐमहरूने भवनी मानामे जो निहार पाई थी उसके विश्वन वह बड़ा करता या कि "वदि सारा संसार तराजंड एक प्रष्टेमें रहना वि भीर मेरी माता हमरे परुरेमें, हो मेरी माता मारी विक्रवेती ।" माताबीम

मारि क्षेत्र तथा पूर्व प्रशास करता है।
समझार बहुं कारी ममार करता है।
समुद्र कर में दे कर बार एक नहीं है कि उसके साथ वीत्यमीत
पूर्व कर में वि वार्ग हो। कारमें के मार्ग के कि उसके साथ वीत्यमीत
इसके कर कि वार्ग हो। कारमें के मार्ग कि उसका कमा करी है के
इसके कर कार्य की मार्ग्य है। सक्या कि उसका कमा करी है की
इसका कार्र की वा कार एक नहीं है को इसके बीचका वुक्त कर है की
कोर म करना हो भी र प्रकार कर की कि क्यों के स्वार्ग के कुछ है।
कोर मार्ग कर करना हो भी र प्रकार के स्वार्ग के कुछ है।



मच्छे दशाहरणमें मुसरोंकी विश्वा मिलनी है और गरिवर्ग गरीव बोरेन सीटा मारामी भी पेती शिक्षा तुमतीकी है सकता है है भी बन्ध ऐसा नहीं है जो इस साधारण फिन्मु अनुस्य शिक्षा कि किए पुनरीका बानी न वो । इस प्रकार दरिहमे दृष्टि प्रमुख भी उपकारी वन महता है। क्यों के बकाशवान करन बादीमें रचने बानेने भी हैगा है। प्रकास देंगी बेमा क्षेत्रा रुव्ये जानेमे । सन्दर्भ चाहे झोंगरियोंमें रहे बाहे महत्रीते, वर्षे तीत्रोमें रहे बादे वहे मतरोंकी तंत शमियोंमें, और प्रमुखी हाच्य गर्दे किननी ही नराव क्यों न मानूम ही वरन्तु वह बूमरोंके किए नार्य हैं। नवता है। बेम कोई समानी जाएमी की सताबर किमी मण्डे डरिवे किंग बाम कर मकता है उसी तरह युक्त गरीब विमाय भी, वी बीड़ीसी श्रमीय जोत बोकर बगना निर्वाह करता है, काम कर गडता है। इप विश् बहुत मामुछी जिल्ह्याचा भी कुछ और परिश्रम, दिशाव भीर सहानार्थी विका दे स्टब्स है और दूमरी और आकर्य मुखेला और दुराचार भी किस्स मध्या है । जमून्य इस दोनों तरहत्री विश्वानीमिने बीतनी शिक्षा प्रश् कांगा, वह बमीपर निर्मर है और इस बालार भी जिमेर है कि वह हैं। कामगीरे किम बकार काम उदाना है की दमकी मगरे कामान कारेंदें है family &

gree to write ath a fee an earth feet are little of the control feet are little of the control feet and feet and the control feet and t







जिए कारास्त्रा एक स्वित्सायों भोडार छोड़ जाता है, बसींड उपन्न ग्रीस्त्र मुनाँडि निष्टु भारते हैं। जाता है—दूरों गुरुष महिन्ये स्पेड स्वीत्रत्रा अनुस्ता कर सकते हैं। उसका श्रीपर मुग्नयों साहे बसीयन कुकता राता है और उसको हुम बालेड योग्य क्याता है कि वे केस हैं ग्रीस्त्र स्थान है। अनुस्तु जिल प्रमुक्त किसी मन्त्राम ग्रीस्त्र स्थान न्या है। यह बहुस्य बीमोंचे यही है। यह पुलक कु कीर-स्त्रीत न्या है। यह बहुस्य बीमोंचे यही हुम स्थानक प्रश्निक मध्य है या यो बहिन् कि यह बुझ है। देशी पुलक्त मसीमा प्रमुक्त स्थान हुन हो से स्थान कुम स्थान सहामाओं के सामीका मनुष्टा

पना नहीं हो सकता हि कोई सनुष्य सहाप्ता सोपाल हुएस गोगड़े। है स्वर प्रस्तु दियानगार स्थादिक जीवक्सीन पूरे और उपने दिशा है ने न हो जान है और स्वास्त्र स्वरूप है है है है जून को हो गठना है और स्वास्त्र सक्ता है। हेले जीवक्सीन कहने मनुष्ये पाप दियान नहीं कड़ सक्ता और उसके जीवक्स उद्देश में हो हो है है। स्थापन समार्थ सानेश स्वरूप हुएसे कुरेन और उसकी स्थापन बार्गांड सनुरुष्त कुरने कहा साथ साम होता है।

त्यात मुमका खीवनवारित भीर छेना लिये थे । १ मार्गिन खेविमाके जीवन-चरित १ वा ताक्टर सुत्यापर मुनना ममाय, यदा कि उन्होंने भयना सीवन धर्मन्यवारके सिद्ध भर्षन कर दिया।

जो सजुन्य प्रसारतासे बाम करते हैं वे पुणकों वामुण एक अर्थन उप-बोगी उदाहरण उपिथत करते हैं। इस उपाहरणका प्रभाव मुसरीय मुख्य हो पहला है। प्रसारतासे समसे प्रहण्योक्ता आती है। प्रमारताके सामने भूत प्रेच उत्तरे पैरों भाग ताले है—उपचा हर पास भी गहीं प्रदचने पाता है। बहिताह्योंने निराया महीं होती है, क्योंकि उत्तवा सामना वरते समस हमने सफलतार्वा आता रहती है; और सम्मदमें ऐसी वुण पुत्ती पैदा हो वाली है कि उसके बारण सनुष्य सुधोगोंको हायसे नहीं जाने देता और उसने असपकता भी यहुत कम होती है। होता शायत्व वर्ष प्रमानतामें जोत होता है यह सनुष्य महेण प्रसाधिय रहता है। ऐसा सनुष्य वर्ष प्रमानतामें जोत होता है बहता है और दूसरींकों भी पान करतेमें उत्ताहित करता है। योगके साथ बाम करतेसे अपन्त साधारण बागोंमें भी गीरण आतात है। सबसे अधिक सारगंकित बाम बहुधा यही होता है वो सरपूर उत्ताहक साथ किया जाता है और जो ऐसे सनुष्यके हार्यों या सस्तकके द्वारा होता है जिसका विश्व प्रमाण रहता है। हम बहा करते थे कि "सुग्ने प्रमाधित रहना पसन्द है, परन्तु हारा रपयेशी आधादनीयाली जायदादका सालिक बनकर भी; उदास रहना पसन्द नहीं है।"

फ्रीनियिस द्वार्ष दिन भर सस्त भेहबत करके शामके पक्त गाना गाकर और बाज बजावर अपना थी सुस किया करते थे। फरस्येयेस व्यक्तरन भी बड़े प्रसत्वित रहते थे। उन्हें भेदाबोंमें जाकर तरह तरहके खेल खेलना बहुत प्रसन्द या। ये अपने बधोंकी साथ केकर घोड़ेकी सपारि किया करते थे और उनके साथ सब तरहके घरेन्द्र रोलोंमें शरीक होते थे।

दाहरा आर्नेस्ड एक उत्तम कमेंबीर थे। ये बड़ी मसहता और उत्ताहके साथ बाम बरने थे। उन्होंने अपना मारा श्रीयन नीतवारोंकी शिक्षा देनेमें हता दिया। वे अपना बाम मन हताहर बरने थे। उनकी मेहहीके सभी होग प्रसाहित होकर बाम करने थे। श्री नया मनुष्य उनकी मण्डलीमें शाता था

उसको तुरन्त ही अनुभव होता था कि यहाँरा कोई बड़ा काम बहुत इसार साय हो रहा है। उस मंडरीके हरएक शिन्यको अनुसब होता या कि मेरे किए पहाँपर काम मीजूद है और अम कामको करवा मेरा कर्तन्य है; मेरा मुख भी वसीपर निर्भर है। इस ताह वहाँ प्रत्येक युवकमें कान करनेका रूपाह है। हो जाता था। उसको यह आवकर बड़ी सुत्री होती थी कि से मीडुठ कार्य करके दूसरोंका उपकार कर सकता हैं और इसकिए सेरा जीवन सानन्त्रम हो सकता है। उसको अपने शिक्षक (बाक्टर आर्नेस्ड) से प्रेम हो बावा या और यह उनका आदर करता या, क्योंकि दाक्टर आर्नेस्ड उसकी वीत नकी कदर करना और भाष्म-सम्मान करना सिख्छाते ये भीर यह बंतहाते : थे कि संसारमें रहकर उसकी क्या काम करना चाहिए और उसके बीवरका क्या उदेश होना चाहिए। आर्नेस्टके विचारीमें संकीर्णता न थी। उनके विचार यहे उदार भीर सचे ये। वे हरतरहके कामकी कर्र करना जानते ये और किसी भी कामको तुरा व समझते थे। वे समाजके छिए और प्रवर्ष इयक् मनुष्यके लिए इरएक कामकी उपयोगिताको खुब समझते थे । मार्नक्टने जनसेवाके लिए बहुतमें मनुष्योंको तैयार किया था। उनमेंसे एक महाशय भारतवर्षमें भी आये थे। उन्होंने अपने एक पत्रमें अपने पूर्व शिश्रकके विषयमें यह छिला या:-" उन्होंने मेरे उपर को प्रभाव हाता. है उसके बढ़े स्थायी और महत्त्वपूर्ण परिणाम हुए हैं। उस प्रभावकों में मार-तवर्षमें भी अनुभव करता हैं। इससे अधिक और क्या किसें।

वो सनुष्य सचे दिखते और उत्साहक साव परिवास करवा है यह माँगे , परितियों और क्योंनेंदर बहा क्याग्र ममाब बालगा है और बहुत क्यें करोमसेग कर सकता है । इस मालग उदाहरण सर बात सिंहते की-कर अहर सायद ही करी सिंक सके। सर जान सिंहते की-एक महारावर्ष करा है कि "उत्तर वेदारण हिंग के हुए परिवास करी-राला मनुष्य समस्त प्रोग्ये कोई व वा।" सर बात सिंहते पढ़ क्योंगा है। उनकी नवींदरी क्यानेणके पढ़ पेते विकेश में जिसमें सम्वाधी-स्वा मी न पहुँची थी। यह त्रावा समुद्धके किनारे वा और उदारों सेल भीर पहारीकी मालगा थी। अब गर बाल सिंहत सीवह करेडे हुए उत्तर





हानवर बहुँ गुरा हुए कि सर जान जनसेवांक किए पैसंदर्गक विनना उत्तीन काने हैं। उन्होंने सर जानको मुनाबर बना कि "आप जो वान चाहें उनीमें में आपनी महायता बरनेको तैयार हैं।" मिद्र भीर पोई होना मो इस समय यह अपनी उत्तिन या अपने लाभनी हरणा मार बरना। परन्तु रार जानके अपने वस्मानके अनुसार उत्तर दिया कि "भी अपने लिए बोर्ट अनुसार उत्तर दिया कि "भी अपने लिए बोर्ट अनुसार उत्तर दिया कि "भी अपने लिए बोर्ट अनुसार कहीं पाला। मुझे से सबसे तिवादा नृत्ती हम बातमें है कि आप एक हरि-मंत्री वालीय परिष्टु स्थापित बरनेमें मुझे सहायता हैं।" पिटने हम अगनी बाजी बहु में कि ऐसी पलियद् कारी स्थापित नहीं हो सकती। परस्व सर जानने पटिन परिक्षम करके जनसाधारणात्र प्यान हम और आवर्षित सर किया। अन्तर्भ सर जानने पटिन परिक्षम करके जनसाधारणात्र प्यान हम कोर आवर्षित सर किया। सन्तर्भ सर जान हम परिष्टु के स्थापित बरनेसे सराज्य हम परिष्टु के स्थापित बरनेसे सराज हम परिष्टु के स्थापित बरनेसे सराज हम परिष्टु के स्थापित करनेसे हित्य सराज करने सही है, परन्तु उत्तर्भ हित्यसंधी ऐसा जोस फैटा कि करोड़ों एकड़ सभीन जो पहुं स्वाप्त पड़ी थी उपजाक पना हो। सहं।

सर जान जिस बरामको हाथमें होते थे उत्तमें स्वयं उत्ताह दिवाते थे तिमये बेकार मनुष्योमें जाएति पैदा होती थी, आव्यती मनुष्योमें जोता पैदा होता था। श्री कीर श्री होता था। ये और होता था। ये भी काम दिवा बरते थे। एक घार जब यह स्वयर हमी कि मांत्रवाहे हैं स्विवह्म आवाज करने सहर कर जानने मिहर पिटमें वहा कि भई अवद्य स्थीकार करेंगे। "हमके बाद सर जानने मिहर कि आई अवद्य स्थीकार करेंगे।" हमके बाद सर जानने इ०० आई मेंची हो जब व्यवस्थ स्थान की स्थान हिंत आप उसे अवद्य स्थान की भी भी है ते समयमें हम पहरत्न स्थान लागा। हम प्रवर्णन स्थान की समयोग हम पहरत्न में उ००० मार्नव हो गये और यह स्वयमेवकोको अति उत्तम सेना समयोग जान लाग। हम प्रवर्णन मेंचा स्थान वह तम्हक साम अवन हाथमें है रस्थे थे, परन्तु हम जान वह समयोग हम अवन हाथमें है रस्थे थे, परन्तु हम जान वह अस्थान स्थान हम स्थान स्

हण्याहिकां मेर्फो जिसला हिया हुमा है। हम पुल्लक है दिनहों से स्वा हमारी स्वामाम भाद स्वोचक कांद्रल परिक्रम करता पहा और उनके से सेपी देश क्रिया विद्यों के स्वाची स्वी : अपूर्ण के स्वाची कर देशन कि स्वी मिन्या : क्रम पुल्लक किस्सेली उनकी सामधी तो स्वाच हूर्त, रहण हुमें विचाय : क्रम और कोई निजी साम के हुमा। पुण्डकी दियों के साम वर्षा हुन वर यह उनहोंने प्राधेन्यारेली किंद्र एक सामधी है ही। इस प्राण्ड क क्रमानती स्वीचारका बहुत साम हुमा। वर्षीह क्रमी सामधीने कर्यक्रमानती स्वीचारका प्राण्डित क्षेत्री स्वेचक स्वाच हिंग से ।

मर मानन एक बार कुछ संकरके समयोग स्थानारियोदी कही सहायती है। दिमार दनका काय इसलामा और प्रमाहका अनुस वरिषय मिलना है। मन् १४८३ इंग्योम पुरुष बारण व्यागारका काम वेमा बेर प्रथा वि सेक्सी मीनामरा ह रिकाल कि इस सब भीर मैनचैरार भीर कामगी ही बहुन सी बही बनः कारियां ' सालगोत्तामों) का बाम चीपर होने समा । इसका कान बर न या कि इनक बाब माल नहीं किन्तु बुद्ध कारन क्यांगा है सर मधी वंश दा रह व । ऐमी दालगम मजर्रांडे प्रगर बडी मारी विगरिका सांग मनिनार्थ था । तम भावन राजन्यदामें प्रच्यान हिया है। बनाय काम सी - बाद बान करोड़ राज ; के बोद कुल्न ही केने बीतामांकि प्रया है रिके क वे का प्रमाणन में सबने हों। यह प्रभान नाम हो नना थी। यह गए वंद क्षंत्रात कर की गई कि सर भाग और दुछ बीत्रातर दूस काम ही महते इन्पर्व के कें। इस दिन अमारक गाम होते होते हता हो भी सैन रागे रित्र यह प्राप्त यह मामभ कर कि संस्कृति कामीने हर माना कारी है। प्राप माराम कार्य कार तम काम भावा सामी माराता की केटा हैंगी fen a unt ta d'etatte que un fent facet atemm de meil men mare at fres se mett en mer et ! seile fut fit PANAIS HE SIAG WAST ST. AT 22" EN. H. SE. IS MICH they got soon to cre to be a great at and of Marra are est - 40 can que o casa ca & ATT A ALTHOUGH A MAR A MAR A THE BART HEET - 10 CA B F - 41 F - 12 CAB Z- 418 F - 40 F - 40 F -











सुन कर रिकन्दरिने पोरसको क्षमा कर दिया और उसका सारा जीता है। राज्य केर दिया। आयसिके समयमें सरवाधिक अनुत्यका चीक अध्यत देश साय मकारित होता है और उसके बोई सी भीता स्थान नहीं आदी तह व अपनी सर्व्यक्ता और साहसके बच्चर सहा रहता है।

सावनाने एक सांक्ष मा देशा में हैं के सुन्य भाग माना भागों है। हो सांचा भीर मनुत्यांकों मारिके दिए प्रयान करतेरे हैं। मनुत्यां ने सांवा है हो सांचा भीर मनुत्यांकों महत्यांकों पह वर्गों जो सांसारता सांचारा तरें सर्वे तहत्य करते हों। सांचारा में स्वत्यां के स्







वीनों व स्वापनेंत्री भी नहीं होती। यहि तुस्य देशे समुख्योंने सुप्तारा जाएँ, तिनयों भागमा, तिम्मुबर्गनी सामात वीत्रंग आदान पुत्र होती द्वारी बहुत दी कथ समम्मा होती। क्योंकि कम समुख्योंकी भार्त्य देशी पति जाती हैं कि से निकल बही सम्मी। इस किन् ब्रियट निक्रांने नह बहा है कि "मां नित्रं आदान पह है कि अस्ती आहते सीमनेंग्रे साच्यान सरेवी भारत इस्त्री करा।"







स्यायलस्यम् ।

विलियम प्रांट और चार्ल्स प्रांट एक क्रियानके रुक्के ये। प्रिय माममें वे रहने ये उसके पास होकर एक नदी बहनी थी । एक बार उस नशीमें ऐसी बाद आई कि उनकी सब चीमें बह गई, यहाँ तड कि जिस जमीनपर ये खेती करते से बद भी बह गई। गरम सह हि बर दिगान भीर उसके दोनी लड़के सब तरहसे नवाह ही शये । इस मुगी-बनने उमक्की बेदम कर दिया । लाचार वे छोग बहाँमें नीक्रीकी तथा-शमें निकले । चलने चलने वे लेकशरके जिलेमें पहुँचे । वहाँ वे एक प्राही-पर चर गये भीर उसपरमे भागपासकी जमीनको और इर्वेल नहींको देखरे लगे । वे इस जिले में पहले कभी न नाये ये भीर न वहाँ हा कुछ हाल जानी ये, इम्मिल्य पढाडीयर नाई होकर यह देखते रहे कि अब किय नरकशे चलना चाहिए। इछ देर सोचनेके बाद उन्होंने आश्री सावादा मार्ग इस नार निधित किया,-उन्होंने उस पहादीगर एक छड़ीको सीधी शड़ी कर छोड़ दी और यह गोच किया कि जिल तरक यह छुड़ी गिरेगी बसी तरक चल पहुँगे । बम जिम नरफ वह छड़ी गिरी उसी तरफ वे छोग चल हिये । चलने चलने वे एक प्राप्तमें पहुँचे। वहीं उनको एक छारमानेमें काम मिल गया और उन दोनोंने बाम मीशना गुरू दर दिया। दीनों भाई ऐने मेर मती, संयमी भीर ईमानदार थे कि उन्होंने छायनाने हे मारिकड़ी अपने गुर्भीय शीप्र ही यसक कर लिया । कुछ समय तह वे हमी तह परिश्रम करते रहे और उन्होंने इननी उचनि कर ही कि भाग निजी छात्मामा भीव दिया ! इसके बाद के बहुत वर्गी तक परिश्रम और उद्योग करने रहे और बूमरीकी भनाईमें को रहे। इयदा क्लाजा वह हुआ है वे बनाइन हो गये और जिन कोर्गाय उनकी प्रान परचान हो गई थी वे उनका बड़ा आहा बरने की है उन्होंने कई शान्त्रंत्र और रहेंद्रे मिल मोल दिवे विश्वे दम विलेद्रे बहुन्ये मार्मियों है दिए नीकी बार चंत्रा निकल साथा । उन्होंने जिल बाममें पीर-श्रम दिना वर नृष्ट मीच समझ कर दिया । इसमै उनदी अच्छी मध्यनी पूर्व । उनके वरिधामक बारम उस जाह रीतक ही रीतक मना साथे सारी । चर्ची तरक बार्वहरण्या, बातरह, स्वरूप भीर चनका साथान ही गया ! भागे रिपूल परमेंने हे बड़ी उत्तरनाई मान मह तरहंद अभी बामेंदि निर् यन देने बरे-- प्रनीने शित्रे बनवाचे, बहुत व्यक्तित हिते थीर समागिने



अपने मुगीवनका हाल स्नाया और मर्शिक्टिट सामने इस दिया। फिल-वमने कहा कि " एक बुके तुमने हमारे विरुद्ध एक पुग्नक निनी थी।" सीदागरका दिल घडुउने छगा और यह सोचने छगा कि अब मेरा सर्विक केट भागमें शीक दिया आयगा; परस्तु विलियमने ऐसा न किया । उसने उस सार्विकेट्यर अपने बारत्यानेकी सरक्षये अपने दुस्तरात कर दिये और मर्रिक उटकी सीतागरके द्वापमें देकर कहा कि " हमारा यह कायश है कि हम कियी ईमानदार सीदागरके सर्विकिकेटचर हरनाश्चर करनेमें इवकार वही काने और इसने भाज तक तुम्हारी ईमानदारीके दिरुद्ध कोई बात नहीं सुनी है।" उस मोदासरकी ऑलोमिसे ऑस्प्रोंकी चारा बहुने छगी। रिज्यिमे बहा कि " गुमको मालूम दोगा उस समय मैंने बहा था कि तुम पुलंब शिखनेपर प्रशासाय करोग । आसिर वडी बात हुई । परम्यु मैंने को पुछ करा था वह इस नीयतमे नहीं कहा था कि मैं तुमको चमकी देना चारणा मा, किन्तु मेरा मतलव यह या कि किमी दिन तुम हम क्षीगींकी करर करोमें भीर नुमने हमको जो दुःस दिवा है उसपर पटनावा करोगे।" सारागाने कहा कि "मैं सनमुख पटना रहा हूँ।" तिनियमने किर कहा कि "भणा तो तुम इम होगोंडी भव पहिचान गये कि इम कैसे मादमी हैं। भेडिन गई मी कही कि अब तुम्हारी क्या हालन है-अब तुम्हारा क्या करनेवा इगाही है ! " मीदागरने उत्तर दिया कि " महीक्षिकेट मिक बानेपर मेरी मित्र मेरी मदायना बंतो ।" विनियमने पूछा, " छेकिन सात्र बल मुख्ती प्या हाधन है ? " उसने उत्तर दिया कि " महाबनीके कर्ज मुहानके लिए में बारता सर्वेश्व दे नुवा है भीर श्रव में श्रवने बुट्टबंड निर्वाहंड लिए समी चीर्वे की नहीं नहीं महता है। यहि के भाग सब करें न चुक्ता, तो मुझ मन्द्रास्त पुत व्यासरक दिन महीर्विकेट की व विक सकता। रिल्वमन क्या कि । माहेमाइन, में यह नहीं देख सकता है मुख्यी भी भीर वस इस नरह हूं क जात : हुना करक बाक दिन मुझय वह दस हैं है Er al era au ate er m'er | G' g' gu eta wit ett ne सब नाक गांक हा अवर - संगादको आप्ता व शाव ना । आपारीकी नहिं Bin binn er gemer er einer eragt far an an firmelle tif eater of mirror to be used the transferent transf



लोका तब दूम बाममें भी राज्याकी उनके पास सहायक हो और निर्माण सारार प्रेमकी बरीकन राज्याकों भी मालामाल हो गये । वे महर कार्ये बाममें बहुत ही निर्मुच थे। उनका स्थान देगा कच्छा ये हि सांकारण उनका या समान करते थे। सरकारने भी उनकी मुद्द हमा की सी-मूर्व मेंचे थी। वारो कार्यकृत कर दिये था। वे बन-सांबोर्स वह बीम कुत है की कच्छ कार्मीन भागी शिरहका हजारी काला गर्य कर देने के ।

तथा समन बही है विस्था रहमाद सर्वोत्तम आहरावि अनुसामी पर हो। समनीकी सेहमा भीर शक्ति सब बुगॉमि मानी गई है। समनी का विस्ता कर्मा बया नहीं है। समन अपनी समननार में हों नहीं मीहना, जो दे वह कर में समम ही क्यों न चैना हो। समनना एक तरहा वह है। क्यों करें बहार मनुष्य समनका आहर करता है। जो मनुष्य कीर प्रशिक्ती केंद्रें हैं, स्थान उत्तम समनका साही होगी उनके सामने कुछ छोग निम क्यों क्यों राष्ट्र अपनवा में भी आहर करते हैं। समन सनुष्यके पुत्र के प्राप्त मीं होंद्रें राष्ट्र समनका में भी आहर करते हैं। समन सनुष्यके पुत्र के प्राप्त मीं राष्ट्र समनका हो भी आहर करते हैं। समन सनुष्यके पुत्र के प्राप्त मीं रामानिक पृत्रोत्तर निर्मा है। सक्यानिक करते हो सि म समन महं रामानिक पृत्रोत्तर हो, सक्यानगाहरूस बगाँव करता हो भीर सपने हिस्से करते

सम्बद्धं एक तुम्र भवस्य होता है। बह यह कि उसे

वहां सवाल दरता है, स्वांत वह सार्वी कहा काता है—सार्वे जाती के नी साम्या । यह सार्व वहिन्दी भी कहा कहा है—सार्व वह स्वीं काता में तह सार्व वह स्वीं काता में तह सार्व वह साम्या है सार्व है किया हम सार्व मार्वा के सार्व के सार्व है किया हम सार्व होता है जा हम सार्व ही सार्व हम हम



श्वादान्त्रस्यत् ।

न्यवेथे भी त्रियाश देने लगा । वैलिगटन पहले कई सेईड तक उम मेर्नाई मूंत्रकी भीर पुरापान देखते रहे और किर वो बीले, " अच्छा, तो तुम इम मेरको दिया सकते हो है किसीने कहीते तो नहीं है" मंत्रीने जवान दिया कि " में इस भेरको बेसक जिला सकता हैं।" तब वैतिमारतने हैंगदर कटा कि " नव ऐसा ही मुझे समझी शतियाँ नरह तुम अपने भेरको जिए माने ही उम तरह मैं भी भाना भेद दिया गठता है। " वह बह हर वैभिगातने मंत्रीको शुरुका प्रयास किया और बेचारा मंत्री सत्राह मारे बहाँ में नरस्त्र ही चल दिया। वैश्वितारम के मानेशार मारश्चिम आफ चैक्टेजाकी भी गेर्म ही उद्गाणित ये । एक बार हुँग्ट इंडिया कमानीने बैल्डेबलीको मैमाकी विजयके उपलब्पन ९७ लाम राया भेरानस्य देना चाहा, पारन् बैकेनलीने साह इनहार हर रिया । वैन्त्रजीने कहा या कि " इस बानकी जरूरन नहीं है कि इस समय में यह बनलाई कि मेरा चरित्र दिनका स्वर्गत है और मैं जिल पहार है उसकी महत्ता किननी बड़ी है। इब तो बड़ी बड़ी बार्गीके उत्तराम बड़े बारे भीर भी है जिनके बारल में इस भेटको मन्दीकार करना है । में इस में की बच्छा नहीं समस्त्रता । में धयानी सेनांक विषयाय और किसी चीत्रणी परपाह नहीं काना । मेरी मेनाके इन बीर मैकिकीके दिखाँमें वरि कुछ बसी की शायती में जबार ही मुझे कहा हूं व होता। " दैंठकड़ी दें सेंट्रडी आसी। कार कारका जो हमारा कर ठिया वा उसे कोई भी म बर्ज सहा। धन भीत वरका सबी स्डबनाड़े मात्र कोई बनी धर्वप नहीं है । निर्पत सन्त्व भी संशा सम्बन हो सकता है--इसके मार्गित्र भीर रोतपारि कामीने मुजनता जा सकता है। वह ईवानहार, यका, यहा, वस, वंगमी, भारती. भारती बट्टा बट्टायामा बीट बल्यायवाडी हो सक्ता है-भीत इसीको सभा समन बनना करते हैं। त्रिय मन्त्रक राग पन न ही परन् रमके नाव क्या हो रह रम क्लामें सब गाह तका है दिशह बाग बन ता हा राज्य रमाह जान जिल्ला हो। यहाँ। वसने सनुष्यहे साम वस सही

वार्ते मैक्तिरतको सार्द्रम थी, परम्तु वे अभी हिमी औरपर प्रहट न ही गई थीं। इस भेदको जाननेके लिए निजासका संत्री मैकिंगरमको १५ माम



स्यायसम्बन् ।

पुरुवाहर न की । जहाज हुन गया और उसके माथ वे बीर पुरुव भी हुन गये । उन सक्तारों और बीरोंडी जब हो । ऐसे पुरुवोंडे उदाहरण कमी किट नहीं सकते हैं । जिस तहह उनकी स्मृति अमर है, उसी तहह उनके उस-हरण भी आमर हैं।

सन् १९५१ हंसतीमें सराजांद्रव्य सहामारण ट्राइटिनिक नामक नाम भी हमी तार ह्या था । इस बुरेटनाड हाल हम लोगोंने समाचारणॉर्म प्रा था और उनकी सुध हम कमी तक नहीं भूने हैं । इस बससार भी भोक बीगोंने अपनी चीताडा परिचय दिया था । ट्राइटिनड ऐसा महार नवाम गया था कि हमोंकों आमा या कि हम नदारकों को पी नहीं नि न पहुँचा महेगी, परम्नु अनुष्य भोचना हुछ है और होता हुछ है। ट्राई-दिस समुदाने तीर्दा हुई एक हिम्मिलांद्रे दस या नवा और उनसे किंद्र है। गया । नाई इनती नव थीं हम कहोग उनसे हैं दस अपने काय क्या

सकते । कायर मनुष्येकि साथ उस जहाजमें अनेक बीर पुरूप भी थे । हैंग्लें-हके मुम्मिद मामिकपत्र 'रिष्यू आफ रिष्यूज' के संपादक स्टेड जैमे

महानाम भी जम बहाजमें सेचर कर रहे थे। जर जहाजमें कहा हमी भीर जममें पानी मारे कर तात कमानते हमा दिया हि "पहले कियों भीर क्योंको महाने रिष्टा हर बमाचा आवा!" बहानते आता गर्न है पान प्रदेश ती इंट गर्न भीर दियों भीर कमे नामेंसे देश कर चल हिये। बहुतरी मीति जस माम दूसर्टीड आग कमाचे भीर वे हस्ते जलांसे हुव गये। "भायों नहीं आज तो जब भी नीकायें सर में तमाम, पोलद गो बाजी निभंव हो सर बर भार कर गये जाना । बर सरना भी दर्गोगों के, है सर्वोरणांस वह चित्र, उन्न हमीय सहस्त्रों भारता कर करी की नीज।

बद् देखों अस्टाने प्रवानि तथा स्टेडचे नैतिक बीर, एक एक सामान्य मदुनकी स्था कर तक रहे स्वीर ॥" समय मदुष्पको पक्षावतंके विष्कृ स्कृतिहास वीक्षा की वा सकती है, मुन्द परित्रा ऐसी है किसमें कमी सीमा नहीं होता—नह अपने कसी-

सम्भ सनुपाड़ी पर्श्वानरेडे निए कहें ताहुने पीहा हो जा सकृति है, हरम् एक परिमा ट्रेपी है हिसमें बत्ती धीमा नहीं होना—नह स्थाने सपी-तैंगर दिन्म प्रकार शायन करना है । वह खिजों और क्वोंकि साथ कैमा %पट



६—कर्नेछ सुरेदाविश्वास । अत्यन्त मात्रर्यजनक घटनाश्रीत मता हुना एक अद्भुत जीवनचरित । अतिशय हरपोंक कर्छानेवाले बंगालियोंका एक आवारा अशिक्षित छड्का दुनियां मरमें सटकते सटकते केवछ स्वावछम्बनके बलसे अन्तमें अमेरिकाके एक राज्यका सेनापति कैसे ही गया और शरीर-शास, वनस्पविशास आदिका महान् पण्डित कैसे हो शया, यह इसके पर्-नेसे ही माछ्म हो सकता है। मू• ॥)

 आयर्छिण्डका इतिहास । पराधीन भावर्छण्डका इतिहास मंश्यु. वकोंके लिए बहुत ही शिक्षापद है । इसके पहले मागमें देशका श्रंतकावद इतिहास और दूसरे भागमें कर्ड आफ चार्लमांट, हेनरी प्रटन, उक्क्टोन-रावर एमेट, देनियछ बोकातेल, स्मिथ ओबायन, आइब्रिक बट, और पार्नेख इन बाठ प्रमिद्ध प्रसिद्ध आपरिश देशमधीके बीदनधरित हैं जी देशसेव-कींको मार्गदर्शकका काम दे सकते हैं। मू॰ १॥।०)

दसरोंके प्रकाशित किये हुए-

गेरीवाल्डी म्बीसेप मेजिनी शाजपतसाय Xoctococo अस्तोदय और स्वावसम्बन

भन्य € भार भारेनी वार उप चुका है। सृ०१०)

गिरना, पड़ना, और अपने पैरों खड़े होना । यह एक गुजरानी विदानके नियो हुए सुप्रसिद्ध प्रन्थका अनु-बार है में विस्तृत्व मेश्क हेल्स (स्वावत्ववन) क बगपर लिखा गया है और विल्कुल भारतीय भावो तथा उटाहरणीस भरा हुआ ह । स्वावसम्बन्ध पटनवार्लीको इस भी एक बार अवस्य पडना पाहितः। स्वादन्ध्यनका पार्टासम्बन्धानक स्टिप् वह भी वहुन उपयोगी 🌡 प्र- (१) इसके आर्थन के नागम यह शिक्षा विशय मिलती है कि परना और बदना, दृद्धि भार हानि, उथ्यान और पतन प्राकृतिक हें, इनमें रूप आर शोक न करना चाहिए। गुजरातीमें यह पास्य 🚏





